आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अक्टूबर, 2012 ★ आश्विन, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

वियतनाम, मलेशिया, फिलिपाइन्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवरि, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सऊदी अरब, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहरीन, अझरबैजन, तजाकिस्तान, अल्बेनिया, नामिबिया, चीन, अफगानिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र

'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

"नयनतारा", सुभाष चौक, जलगाँव ✆ 0257-2223903

"स्वर्णतीर्थ", आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद ✆ 0240-2244520

"नयनतारा इस्टेट", उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक ✆ 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है। *मानवीय आहार शाकाहार।*

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। श्री महावीराय नमः ।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी । श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा ।

– आचार्य श्री हीरा

S. D. GEMS

Exporters, Importers &
Manufacturers of Diamonds

Add. : 202, Ratnadeep, 76-J.S.S. Road, Mumbai-400004
Tel. : +91 22 23684091, 236666799
Fax : +91 22 40042015
Email : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Mobile : 9820350814, Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

थावरं जंगमं चेव,
धणं धण्णं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं,
नालं दुक्खाउ मोयणे।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.6

स्थावर-जंगम धन-धान्य तथा,
उपलब्ध अन्य साधन सारे।
कर्मों से पीड़ित प्राणी के,
दुःख भोग को न ये टारें।।

अक्टूबर, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
आश्विन, 2069

वर्ष 69 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	वीरता का अभिनन्दन	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
	वाग्वैभव(8)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
प्रवचन-	विष को अमृत बनाने की कला	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	14
	समूह में जीने की कला : सामाचारी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	19
	धर्मो रक्षति रक्षितः	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	25
	समय का सच	-साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.	29
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Harmony and Peace : A Jaina Perspective	-*Prof. Sagarmal Jain*	31
तत्त्व-बोध-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (77)	-श्री धर्मचन्द जैन	38
पद्य-स्तम्भ -	मैं ही क्यों ?	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	41
युवा-स्तम्भ-	जीवनदृष्टि बदलने का उपाय है ध्यान	-डॉ. एन.के.खींचा	46
नारी-स्तम्भ-	समय का मूल्यांकन	-डॉ. शैलजा अरोड़ा	48
बाल-स्तम्भ -	दंभ में दम नहीं	-श्री कपिल जैन	51
विचार-	सुविचार	-श्रीमती कंचन सुराणा	18
	भौतिकता और आध्यात्मिकता में अन्तर	-श्री अरविन्द लोढ़ा	40
	वाणी का संयम	-श्री जसराज देवड़ा धोका	47
	आत्मा ही सामायिक	-डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन	63
कविता/गीत-	नाम में क्या धरा है	-डॉ. महेन्द्र भानावत	30
	मुक्ति की राह दिखाई	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	54
	संभावना	-डॉ. दिलीप धींग	63
प्रेरक-संस्मरण-	जडावकंवरजी की आलोयणा	-श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरड़िया	55
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	56
प्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (30)	-संकलित	58
स्वाध्याय-संघ-	पर्युषण रिपोर्ट-2012	-संकलित	64
परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परीक्षा परिणाम जुलाई-2012	-संकलित	78
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	86
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	111

सम्पादकीय

वीरता का अभिनन्दन

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

22 एवं 23 सितम्बर 2012 को जयपुर में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा वीर परिवारों का परिचय एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। वीर परिवार वे हैं जिन्होंने अपने घर के सदस्य को आजीवन संयम-दीक्षा अंगीकार करने की अनुमति प्रदान की। संयम-मार्ग पर चलना वीरता का कार्य है। राजकुमार वर्द्धमान संयम-मार्ग पर चलकर ही महावीर कहलाये। इसलिये जो संयम-मार्ग पर अपना जीवन अर्पित कर देता है वह तो वीर होता ही है, किन्तु उसे संयम-दीक्षा अंगीकार करने की आज्ञा देने वाला परिवार भी वीर कहलाता है। माता-पिता प्रायः अपनी सन्तान से कोई-न-कोई अपेक्षा रखते हैं, उनका किसी न किसी रूप में सांसारिक स्वार्थ होता है। अतः उसका त्याग कर सन्तान को संयम-मार्ग पर बढ़ने की अनुमति देना वीरता का ही कार्य है।

अन्तगड सूत्र में उल्लेख आता है कि श्रीकृष्ण वासुदेव को मन में यह पीड़ा होती है कि वे दीक्षा ग्रहण करने में समर्थ नहीं हैं। वे स्वयं कहते हैं- "मैं अधन्य हूँ, अकृतपुण्य हूँ कि मैं संयम में प्रव्रजित नहीं हो सका हूँ।" संयम में स्वयं दीक्षित होना एवं अपने निकट सम्बन्धी को अनुमति प्रदान करना दोनों ही उत्तम कार्य हैं। आज संसार में हम देखते हैं कि कई बार सन्तानों के कारण माता-पिता अत्यन्त दुःखी रहते हैं। न लड़के उनका कहना मानते हैं और न ही उनका पालन-पोषण करने हेतु तत्पर रहते हैं। फिर भी माता-पिता का अपनी सन्तान से मोह-भंग नहीं होता। आज बहुत से बच्चे पढ़-लिख कर विदेश चले जाते हैं। विदेश में ही नौकरी या धन्धा करके वहीं बस जाते हैं। वृद्धावस्था में माता-पिता असहाय हो जाते हैं, बच्चे उन्हें समय-समय पर सम्हालने में समर्थ नहीं हो पाते हैं। यही नहीं उनकी संवेदनाएँ भी मृत होने लगती हैं, फिर भी सन्तान के प्रति मोह मिटता नहीं है। इसलिए जो सही समय पर संयममार्ग पर जाने वाली सन्तान के प्रति मोह छोड़कर दीक्षा अंगीकार करने की अनुमति प्रदान करते हैं वे माता-पिता एवं परिवारजन वीर हैं। संयम से जीना उत्तम कोटि का मार्ग है, किन्तु इसमें आने वाले कष्टों से घबरा कर जो अपना मन शिथिल बना लेता है अथवा जो माता-पिता सन्तान की तीव्र अभिलाषा होने पर भी अनुमति प्रदान नहीं करते हैं वे निश्चित रूप से उनके उत्तम लक्ष्य में बाधक सिद्ध होते हैं।

यह तो सत्य है कि पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वी का जीवन अनेक कष्टों और उपसर्गों की अग्नि में तपकर निखरता है, किन्तु कष्टों और उपसर्गों के समय धैर्य और

समता की साधना आवश्यक होती है। जो साधु अपनी कोमलता का परित्याग कर जीवन के हर कष्ट को समता से सहन करना सीख लेते हैं, वे अपनी आत्मा की कालिमा का प्रक्षालन करने में सक्षम होते हैं। उनका मन निर्मल होता है। आत्म-शुद्धि एवं चारित्रिक गुणों का विकास ही उनका लक्ष्य होता है। इसके साथ ही वे जहाँ-जहाँ विचरण करते हैं वहाँ-वहाँ समाज में व्याप्त दोषों का निराकरण करते हैं। सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति उनकी सत्संग से अपने जीवन को उन्नत बनाते हैं। साधु-संतों का जीवन एक आदर्श जीवन होता है। वे समाज पर बोझ नहीं होते, अपितु व्यक्ति और समाज के मानसिक बोझ को हल्का करते हैं। व्यक्ति के तनाव को कम करने में साधु-संतों की सत्संग कारगर सिद्ध होती है, पारस्परिक कलह का वातावरण शान्त होता है, आध्यात्मिक रुचि का विकास होता है, जीवन को सही दिशा प्राप्त होती है, अज्ञानतम का नाश होता है, प्रज्ञा या विवेक का विकास होता है। इस प्रकार व्यक्तिगत विकास एवं सामाजिक उन्नयन की दृष्टि से संत-जीवन उत्कृष्ट जीवन होता है। उनके त्यागमय जीवन के प्रति सभी नतमस्तक होते हैं। ऐसे उन्नत जीवन को जीने के लिए अनुमति देने वाला परिवार वस्तुतः धन्य होता है।

वीर परिवारों का अभिनन्दन सद्गुणों का अभिनन्दन है। अपनी सन्तान को सन्मार्ग पर लगाने की भावना के मूर्त रूप का अभिनन्दन है। जो स्वयं दीक्षित नहीं हो सके हैं वे वीर परिवारों के अभिनन्दन के द्वारा यह तो सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर ही रहे हैं कि वे माता-पिता, वे भाई-बहिन, वे सगे-सम्बन्धी धन्य हैं जो अपने जिगर के टुकड़े को स्व-पर के कल्याण के मार्ग पर लगाते हैं। ऐसे परिवारों का अभिनन्दन त्याग की भावना का अभिनन्दन है, उदारता का अभिनन्दन है। उनके प्रति प्रेम एवं वात्सल्य जितना उमड़ेगा उतना ही हमारे मन में संत-जीवन के प्रति आदर का भाव जगेगा और इससे हमारे सद्गुणों का विकास होगा।

कई बार लोगों के मूल्यांकन का पैमाना भिन्न होता है। वे सोचते हैं कि माता-पिता अपनी सन्तान का पालन नहीं कर पाते, इसलिए सन्तान को दीक्षित होने की अनुमति देते हैं अथवा बच्चियों का विवाह करने में समर्थ नहीं होते, इसलिए दीक्षित होने की आज्ञा दे देते हैं। किन्तु उनका यह सोच संकीर्ण सोच है। कई माता-पिता समृद्ध होते हुए भी अपनी संतान के वैराग्य की उत्कटता के समक्ष निरुत्तर हो जाते हैं एवं उन्हें अपने सारे तर्क और उपाय निष्फल प्रतीत होते हैं। आगमों में ऐसे कथानक भरे पड़े हैं। वर्तमान में भी ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। अत्यन्त धनिक और शिक्षित व्यक्ति भी संयम-मार्ग पर आगे बढ़े हैं तथा अपने परिवार में दीक्षित होने वालों को अनुमति प्रदान की है। इसलिए यह भ्रान्ति है कि निर्धन परिवार से ही दीक्षा होती है। हाँ, कभी-कभी परिवार की विषम

परिस्थितियाँ भी निमित्त बन जाती हैं। परिवार में घटित नश्वरता एवं असहिष्णुता की घटनाएँ भी वैराग्य के बीज का कारण बन जाती हैं। किन्तु वैराग्य का जीवन बिना स्व अभिलाषा के नहीं अपनाया जा सकता। सन्तान की जब तक उस मार्ग पर जाने की रुचि न हो, तब तक उसमें किसी को धकेला नहीं जा सकता। सन्तान को सन्मार्ग पर जाने देना किसी भी स्थिति में बुरा नहीं कहा जा सकता। शर्म तो उन माता-पिता पर आती है जो सन्तान के जन्म लेने से पूर्व ही भ्रूण हत्या द्वारा उनकी जीवन-लीला समाप्त कर देते हैं अथवा कीटनाशक औषधि का स्वयं पान कर उनको भी वह ज़हर पिला कर जीवन से पलायन कर जाते हैं। विवेकशील माता-पिता विषम परिस्थितियों में भी अपनी सन्तान का अहित नहीं सोचते, वे हिम्मत के साथ उन परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं तथा कोई न कोई समाधान सोचते हैं। वे अपनी सन्तति को दीक्षित होने की स्वीकृति प्रदान कर गौरवपूर्ण कार्य करते हैं। यदि इसके बदले में वे समाज से किसी प्रकार की अपेक्षा करें तो इसे उचित नहीं कहा जा सकता। हाँ, समाज या संघ स्वधर्मी-वात्सल्य को अपना कर उनकी किसी प्रकार सहायता करे तो यह उसका कर्त्तव्य बनता है। संयम का पालन भावना से होता है, उसके लिए लोभ-लालच देना फलदायक नहीं हो सकता। धर्म का मार्ग ऋजु है।

जिस परिवार से किसी की दीक्षा होती है तो वह परिवार उस संघ से जुड़ जाता है। समय-समय पर गुरु-दर्शन के लिए जाता है तो परिवार में तप-त्याग की भावना में अभिवृद्धि होती है। धर्म के प्रति श्रद्धा और सही जानकारी के साथ वह परिवार अपना जीवन भी सही रास्ते पर लगाने में सक्षम होता है। ऐसे बहुत से परिवार मिलेंगे, जिनमें ऐसा परिणाम देखा गया है। कभी-कभी यह भी होता है कि अपने परिवार के दीक्षित संत या सती के जीवन को देखकर परिवार का अन्य सदस्य भी संयम मार्ग पर चल पड़ता है। कभी पत्नी के साथ पति तो कभी पति के साथ पत्नी भी दीक्षित होते रहे हैं। कभी पिता-पुत्र, कभी माता-पुत्री तो कभी सम्पूर्ण परिवार संयम मार्ग पर अग्रसर होता है।

विवेकशील त्यागी संत-सतियों के प्रति श्रद्धा और आदर का भाव होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार उनकी त्याग-भावना में सहयोग करने वाले परिवारजनों के प्रति भी आदर का भाव होना चाहिए। भोग के मार्ग पर संतान को आगे बढ़ाने वाले तो सभी माता-पिता होते हैं, किन्तु त्याग के मार्ग पर आगे बढ़ने की अनुमति देने वाले माता-पिता विरले होते हैं, अतः वे धन्यवाद के पात्र है। वे माता-पिता अधन्य हैं जो संतान की सांसारिक भोग-भावना के प्रति अभिलाषा न होने पर भी उन्हें बलात् बंधन में धकेलते हैं।

दीक्षा दुःखगर्भित हो या मोहगर्भित अथवा तो ज्ञानगर्भित, दीक्षा दीक्षा है। किसी

भी कारण से दीक्षित होने के बाद आगमों का स्वाध्याय करते हुए एवं संतों की सत्संग का लाभ लेते हुए व्यक्ति अपनी भावनाओं का परिष्कार कर सकता है तथा सही समझ का विकास कर सकता है। अनपढ़ बालक जिस प्रकार विद्यालय में प्रवेश लेकर कुछ न कुछ ज्ञानार्जन करता ही है, उसी प्रकार साधु-संतों के सत्संग के विद्यालय में प्रविष्ट होकर नवदीक्षित संत-सती अपनी दृष्टि की मलिनता को दूर करने की शिक्षा प्राप्त करते ही हैं। जो दीक्षित होकर के भी आगमों के स्वाध्याय और गुरुजनों के सत्संग का लाभ नहीं लेते वे प्राप्त अवसर का सदुपयोग नहीं करते, ऐसा माना जायेगा। विरक्त मुमुक्षु उत्तराध्ययन सूत्र के इस कथन को जानता है कि दिन-रात बीते जा रहे हैं, जो इनका उपयोग धर्म-साधना में करता है उसके लिए ये दिन-रात सफल हो जाते हैं तथा जो इनमें अधर्म के मार्ग पर चलता है वह अपना समय (दिन-रात) व्यर्थ खोता है। भोगी व्यक्ति संसार में भटकता रहता है तथा अभोगी मुक्त हो जाता है। अतः संसार के सर्वविध आकर्षण से दूर होकर साधक आत्म-साधना को अपना लक्ष्य बनाता है। वह मन से किसी का अहित नहीं सोचता, वचन से किसी पर प्रहार नहीं करता तथा काया से किसी प्राणी को पीड़ित नहीं करता। उसकी साधना सजगतापूर्वक पापविरति की साधना होती है। पाप से रहित होने के मार्ग पर बढ़ना निस्संदेह एक प्रशस्त कार्य है।

आगमों में उल्लेख आता है कि जिस परिवार से कोई श्रमण या श्रमणी का जीवन अंगीकार करता है, आवश्यकता होने पर उस परिवार का दायित्व राजा सम्हालता रहा है। इसी प्रकार यदि किसी वीर परिवार पर संकट के बादल मंडरा रहे हों तो संघ और समाज का दायित्व बनता है कि वह मित्र की भांति उस संकट से उबरने में उस परिवार का सहयोग करे।

जयपुर में आयोजित वीर परिवार सम्मान समारोह को इस दिशा में एक सकारात्मक कदम कहा जा सकता है, जो वीर परिवार के प्रति हमारे दिलों में एक आदर का भाव जगाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से एवं सामाजिक दृष्टि से इसके कई लाभ हैं। हम जिस प्रवृत्ति को आदर की दृष्टि से देखते हैं हम उसके मूल्य के प्रति आकर्षित होते हैं तथा अपने में उस प्रकार के बीजों का पल्लवन करने में समर्थ होते हैं। वीर परिवारों का सम्मान भोगों की अपेक्षा त्याग का महत्त्व स्वीकार करना है। समाज में भी इसका अच्छा संदेश जाता है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि इससे दीक्षा की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, दीक्षा गुणवत्ता के साथ हो। संख्या की अपेक्षा गुणवत्ता से ही समाज को अधिक लाभ हो सकता है। आज रत्नसंघ में साधुओं एवं साध्वियों में गुणवत्ता का विकास हुआ है। अनेक साधु-साध्वी अपने सामर्थ्य का पूर्ण सदुपयोग कर संयम-जीवन की सुरभि से महक रहे हैं। यह गुणवत्ता निरन्तर बढ़ती रहे तो इसका समाज पर, देश पर एवं परोक्ष रूप से सर्वत्र एक अच्छा परिणाम आ सकता है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

गर्हा-सूत्र

तिविहा गरहा पण्णत्ता, तं जहा-मणसा वेगे गरहति, वयसा वेगे गरहति, कायसा वेगे गरहति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

अहवा-गरहा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-दीहंपेगे अद्धं गरहति, रहस्संपेगे अद्धं गरहति, कायंपेगे पडिसाहरति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

अर्थ:- पापकर्म न करने की दृष्टि से गर्हा तीन प्रकार की कही गई है- कुछ लोग मन से गर्हा करते हैं, कुछ लोग वचन से गर्हा करते हैं और कुछ लोग काया से गर्हा करते हैं अथवा पाप कर्मों को नहीं करने की दृष्टि से गर्हा तीन प्रकार की कही गई है- कुछ लोग दीर्घकाल तक पाप-कर्मों की गर्हा करते हैं, कुछ लोग अल्प काल तक पाप-कर्मों की गर्हा करते हैं और कुछ लोग काया का निरोध कर गर्हा करते हैं। (भूतकाल में किये गये पापों की निन्दा करने को गर्हा कहते हैं।)

प्रत्याख्यान-सूत्र

तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा-मणसा वेगे पच्चक्खाति, वयसा वेगे पच्चक्खाति, कायसा वेगे पच्चक्खाति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

अहवा-पच्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-दीहंपेगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्संपेगे अद्धं पच्चक्खाति, कायंपेगे पडिसाहरति-पावाणं कम्माणं अकरणयाए।

अर्थ:-पापकर्म न करने की दृष्टि से प्रत्याख्यान तीन प्रकार का कहा गया है- कुछ लोग मन से प्रत्याख्यान करते हैं, कुछ लोग वचन से प्रत्याख्यान करते हैं और कुछ लोग काया से प्रत्याख्यान करते हैं।

अथवा पापकर्म न करने की दृष्टि से प्रत्याख्यान (त्याग) तीन प्रकार का कहा गया है- कुछ लोग दीर्घकाल तक पापकर्मों का प्रत्याख्यान करते हैं, कुछ लोग अल्पकाल तक पापकर्मों का प्रत्याख्यान करते हैं और कुछ लोग काया का निरोध कर प्रत्याख्यान करते हैं। पाप-कर्मों को आगे नहीं करने के रूप में भविष्य में पापकर्मों के त्याग को प्रत्याख्यान कहते हैं।

-स्थानाङ्गसूत्र, तृतीय स्थान, प्रथम उद्देशक, सूत्र-26-27

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

तप-त्याग

- तप के दो प्रकार हैं। एक का असर शरीर पर पड़ता है और दूसरे का असर मन पर पड़ता है। जिसका असर शरीर पर पड़े उसको कहते हैं बाह्य तप और जिसका असर मन पर पड़े वह है आन्तरिक तप।
- शारीरिक तप से जिस प्रकार तन का रोग नष्ट होता है, उसी प्रकार आभ्यन्तर तप से आत्मा का कर्म-मैल या मन के विकार नष्ट होते हैं।
- तप की क्रिया आत्म-गुण को जगाने के लिए है। किन्तु आत्म-गुण को जगाने के प्रसंग पर भी बढ़िया से बढ़िया वेश निकाले जा रहे हैं। आज बाईजी पचक्खाण करने जा रही हैं, तो नये-नये आभूषण, हीरे की चूड़ियाँ पहन कर जा रही हैं। आज के समय में इसको धर्म-प्रभावना समझा जा रहा है। वस्तुतः इसे धर्म-प्रभावना समझना बिल्कुल गलत है। आज तो यदि मैं यह कहूँ कि यह प्रभावना नहीं, बल्कि अप्रभावना है, तो भी अनुचित्त नहीं होगा।
- हमारी तपस्या अमीर गरीब सबके लिए समान हो।
- मन से किया गया त्याग ही सच्चा त्याग है। मन तो चाहता है कि त्याग नहीं करूँ, लेकिन वस्तु उपलब्ध नहीं है, इसलिए त्याग कर रहा है तो सच्चा त्याग नहीं- 'न से चाइ त्ति वुच्चइ।' जो परतन्त्रता के कारण त्याग करता है तो उसको त्याग का पूरा लाभ नहीं मिलता। इच्छापूर्वक एक नवकारसी भी करे तो वह अपनी कर्म-स्थिति से लाख वर्ष की कमी करके दुःखों को टाल देता है।
- त्याग के साथ ज्ञान का बल ही साधक को ऊँचा उठा सकता है। जैसे सुक्षेत्र में पड़ा हुआ बीज, जल संयोग से अंकुरित होकर फलित होता है और बिना जल के सूख जाता है, वैसे ही त्याग और ज्ञान भी बिना मिले सफल नहीं होते। जिस साधक में पेय, अपेय, भक्ष्य, अभक्ष्य और जीव-अजीव का ज्ञान न हो वह साधक उत्तम साधक नहीं होता।
- भौतिक सुख वही छोड़ सकता है जिसने दृश्यमान भौतिक जगत् की नश्वरता को समझ कर एक न एक दिन, देर-सवेर छूट जाने वाली वस्तुओं को स्वतः चलाकर छोड़ने के महत्त्व को, उससे होने वाले आनन्द को अच्छी तरह से समझ लिया है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (8)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- वीतराग देव, निर्ग्रन्थ गुरु एवं दयामय धर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाले सभी स्वधर्मी हैं, फिर चाहे वे गरीब हों या अमीर, ओसवाल हों या अग्रवाल या कोई और। उनकी सहायता करना धर्म की आराधना है।
- ज्ञानदान करके व्यक्ति ज्ञान-चारित्र की आराधना करके मोक्षगामी बन सकता है। वह समस्त जीवों को अभय दे सकता है।
- दान के सात स्थान हैं- ज्ञान, दर्शन, चारित्र, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका।
- समाज के लिए सहयोग करना व्यक्ति का कर्तव्य है। दानदाताओं के सहयोग से ही संस्थाएँ चलती हैं। जो देगा, वह तिरेगा।
- अपने पतिव्रत धर्म के सहारे, ब्रह्मचर्य के सहारे, शीलवती नारी धरती का धर्म बदल सकती है।
- गौरव के साथ कहना चाहिये कि प्रत्येक तीर्थंकर के शासन-काल में जितने सन्त बने, उनमें साध्वियों की संख्या ज्यादा रही।
- नारी पुरुष की सहधर्मिणी है, यह ध्यान रखकर चलेगी तो स्वयं का एवं परिवार का प्रबन्धन ठीक रख सकेगी।
- दान, शील, तप और भावना में से एक का अवलम्बन लेकर भी अनन्त प्राणी संसार से तिरने की ओर आगे बढ़े हैं।
- हाथ का सच्चा, बात का सच्चा और काछ का सच्चा, ये तीन बातें जिसमें होगी, उसे कोई अप्रतिष्ठित नहीं कर सकता।
- अवस्था के साथ व्यवस्था बनाकर चलने में हित है। यह बात त्याग-तप के लिए ही नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में जरूरी है।
- मुनि-दर्शन, प्रवचन-श्रवण, सन्त-सेवा, ज्ञानाराधना, तपाचरण आदि का लाभ चातुर्मास में भरपूर कमाया जा सकता है।
- सामायिक, स्वाध्याय, साधना और संगठन, इन चार सूत्रों के अतिरिक्त चातुर्मासकाल में आत्मचिन्तन पर मुख्य ध्यान देना चाहिये।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

विष को अमृत बनाने की कला

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? अनन्त सुख और अनन्त आनन्द! शास्त्र की भाषा में कहूँ तो अव्याबाध सुख अथवा अनन्त ज्ञान-दर्शन-सुख एवं वीर्य रूप निज स्वरूप की उपलब्धि। उपलब्धि की जगह अनुभूति भी कह सकते हैं। क्योंकि निज-स्वरूप तो अपने भीतर ही है, उसे कहीं बाहर से प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है, वह आत्मा का ही स्वरूप है, किन्तु अनादि काल से आत्मा पर-भाव में रमण कर रही है। निजस्वरूप की विस्मृति किये हुए है, जब ऊपर के आवरण हट जायेंगे, अज्ञान, मोह आदि परभावों के पर्दे दूर हो जायेंगे तब आत्मा को निज-स्वरूप की अनुभूति होगी, अनन्त ज्ञान-दर्शन-सुख, वीर्यात्मक रूप का अनुभव होगा। बस यही स्वात्मानुभूति या स्वात्मोपलब्धि है।

हम दुःखी क्यों?

प्रश्न होता है जब हमारा स्वरूप अनन्त सुखमय है, तो फिर आज हम दुःखी क्यों हो रहे हैं? रोग, पीड़ा और आतंकों से हम क्यों घिरे हुए हैं? जब खजाने में करोड़ों रुपये भरे पड़े हैं, फिर हम दर-दर की भीख मांगने वाले भिखारी क्यों बन गये? अनन्त सुख स्वरूप आत्मा को आखिर दुःख क्यों मिल रहा है?

यही प्रश्न भगवान महावीर स्वामी ने एक बार शिष्यों के समक्ष रखा था- **"किं भया पाणा समणाउसो!"**[2] (स्थानांगसूत्र, 3.2)

आयुष्मान श्रमणों! प्राणियों को भय क्या है? श्रमण गौतम जब मौन होकर भगवान की ओर देखते रहे, और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे तो स्वयं भगवान ने फरमाया- दुक्खभया पाणा।

प्राणियों को दुःख का सबसे बड़ा भय है। फिर प्रश्न हुआ। **दुक्खे केण कडे?**

यह दुःख किसने उत्पन्न किया? उत्तर मिला- **जीवेण कडे, पमाएण!**

स्वयं आत्मा ने ही दुःख पैदा किया है, और उसका कारण है- प्रमाद।

प्रमाद ही हमारे समस्त दुःखों की जड़ है। जितनी आधि, व्याधि और उपाधि आती है, उसका कारण है- आत्मा का प्रमादभाव। आचारांग सूत्र (1.3.1) में कहा गया है- **"माई पमाई पुण एइ गब्भं"**

मायावी और प्रमादी बार-बार जन्म-मरण के चक्र में भटकते रहते हैं। प्रमाद समस्त

कर्मों की जड़ है, समस्त पापों का मूल है- **पमायं कम्ममाहंसु।** (सूत्रकृतांग 1.8.3)

प्रमाद ही कर्म है, यही आस्रवद्वार है, जिसके मार्ग से कर्म आते हैं और आत्मा को दुःख व पीड़ा के चक्र में घुमाते रहते हैं।

प्रमत्त आत्मा आरम्भ करता है, हिंसा, असत्य आदि का आचरण करता है, परिग्रह का संग्रह करता है। आरम्भ और परिग्रह के कारण जीव की समाधि नष्ट हो जाती है, आधि, व्याधि और उपाधि बढ़ने लगती है। आत्मा दुःख एवं क्लेश को प्राप्त होता है।

दुःख मुक्ति का उपाय

भगवान ने आत्मा के दुःख का मूल कारण बताया तो सहज ही यह प्रश्न होता है कि उस दुःख से मुक्ति कैसे हो? दुःख विमुक्ति का उपाय क्या है?

मानव-मन की यह सहज वृत्ति है कि वह सतत दुःखों से मुक्त होने का उपाय खोजता रहा है। संसार में जितने भी धर्म हैं, दर्शन हैं, उनसे पूछें कि आपका उद्देश्य क्या है? तो क्या बतायेंगे? प्राणी को दुःख से मुक्त करना।

बुद्ध ने चार आर्य सत्य बताये हैं, उनमें यही बात कही है- 1. संसार में दुःख है, 2. दुःखों की उत्पत्ति के कारण हैं, 3. दुःख का नाश सम्भव है,4. दुःख-निरोध के उपाय हैं। इन चारों बातों का वर्णन करना ही बुद्धशासन है।

सांख्य, वैशेषिक आदि अन्य दर्शनों ने भी 'दुःख हानोपाय' को अर्थात् दुःख से मुक्त होने के उपाय की खोज करने को अपने दर्शनों का उद्देश्य बताया है। आइन्स्टीन ने विज्ञान का भी यही उद्देश्य बताया है-"अज्ञान एवं अभाव की पीड़ाओं से संत्रस्त मानव को सुखी बनाना विज्ञान का लक्ष्य है।"

संसार के समस्त विचारकों के सामने मुख्य प्रश्न यही रहा है कि मानव दुःख एवं पीड़ाओं से मुक्त कैसे हो? इस प्रश्न के समाधान में बहुत से विचारक ऊपर-ऊपर ही घूमते रहे हैं। वे बाह्य कारणों को दुःख का मूल मानकर उनके निराकरण का उपाय खोजते रहे हैं। किंतु जैन दर्शन इस प्रश्न की गहराई में गया है और उसने मूल को पकड़ा है। उसने दुःखों की उत्पत्ति का कारण भी खोजा है, जो अभी मैंने आपको बताया- प्रमाद। आरंभ और परिग्रह इसके साथी हैं। रोग का मूल जब पकड़ में आ जाता है और उसकी ठीक दवा लग जाती है तो फिर रोग मिटते देर नहीं लगती। शास्त्रों में दुःख निवारण का उपाय बताया है- अप्रमाद। इन्द्रियों के विषय, कषाय, आरम्भ, परिग्रह आदि से मुक्त होकर आत्म स्वभाव में रमण करना, स्व स्वरूप का अनुभव करना- यही दुःख मुक्ति का अमोघ उपाय है। आचार्य कुन्दकुन्द ने भी कहा है- **'जो झायइ अप्पाणं परम समाही हवे तस्स'** जो आत्म

स्वरूप का ध्यान करता है, आत्म भाव में रमण करता है, वह परम समाधि और सुख की प्राप्ति कर लेता है।

अधिकरण और उपकरण

अब तक के हमारे विवेचन का सार यह है कि दुःख से मुक्त होने का उपाय है- अप्रमाद! इसी को सीधी भाषा में यों कह सकते हैं, आरंभ और परिग्रह की भावना से मुक्त होना। जब तक हमारे मन में, आरंभ-अर्थात् हिंसा के संकल्प होंगे(आरंभ शब्द बहुत व्यापक है, इसमें हिंसा के सभी रूप आ जाते हैं) वैर, विरोध, घृणा एवं द्वेष की भावना होगी, इन्द्रिय विषयों के प्रति आसक्ति होगी, धन के प्रति आकर्षण होगा, ममता के बंधन से जकड़े रहेंगे, तब तक लाख उपाय करने पर भी आत्मा को शांति नहीं मिल सकेगी।

आप सोचते होंगे, तब तो शांति प्राप्त करने के लिए 'साधु' ही बन जाना पड़ेगा। चूंकि गृहस्थ जीवन में तो हिंसा, झूठ, परिग्रह आदि का चक्र चलता ही रहता है। घर है, परिवार है, समाज है, सबको साथ लेकर चलना है, सबका दायित्व है तो हिंसा भी करनी पड़ेगी, परिग्रह भी रखना होगा, फिर कैसे शांति प्राप्त होगी?

बंधुओं! जैन धर्म भाववादी धर्म है। वह साधना में वस्तु को नहीं, भाव को महत्त्व देता है। बंध और मोक्ष वस्तु पर नहीं भाव पर निर्भर करते हैं- **परिणामादो बंधो, मुक्खो जिणसासणे दिट्ठो (भाव पाहुड, 116)** जो वस्तु-सामग्री साधु के लिए कर्म-निर्जरा का कारण बनती है। वही वस्तु आपके लिए कर्मबंध का कारण क्यों बनती है? जो वस्तु साधक के लिए उपकरण है वह आपके लिए अधिकरण क्यों बन जाती है? आपके जीवन में भी देखिए, यह रूमाल सामायिक करते समय 'जयणा' का साधन बनकर सामायिक का उपकरण बनता है, वही बाजार से घर जाते समय इसमें सब्जी बांध कर ले जाते समय अधिकरण क्यों बन जाता है? वस्तु में कोई अन्तर आया? नहीं, फिर अन्तर किस में आया? भावना में। सामायिक करते समय आपकी भावना शुद्ध थी। जीवदया की भावना से आप इस रूमाल का उपयोग कर रहे थे। सब्जी लेते समय आप इसे हिंसा का साधन बना रहे हैं। वस्तु एक होते हुए भी उसके उपयोग और प्रयोग से मूल्यांकन में अन्तर पड़ जाता है। महाराज चतर सिंह जी ने कहा है-

वणी सूत री सींढडी, वणी सूत री पाग।
बंधवा-बंधवा में फरक, जसो जणीरो भाग।।

सींदड़ी अर्थात् डोरी भी उसी सूत की बनी है, जिस सूत की पाग बनी है, किन्तु डोरी से मुर्दा बांधा जा रहा है, और पाग वर राजा के मस्तक पर बांधी जा रही है, एक के बांधने में शोक उमड़ रहा है, दूसरी के बांधने में खुशियाँ उछल रही हैं। वस्तु में यह हर्ष-शोक का

आरोप भावना से होता है। इसीलिए शास्त्रों में बताया है कि जीवन यात्रा में बाह्य वस्तु की आवश्यकता होती है, अनेक प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करना पड़ता है, किंतु उनका उपयोग उपकरण के रूप में करना चाहिए, अधिकरण के रूप में नहीं।

एकबार राजगृह में भगवान महावीर स्वामी से गौतम स्वामी ने प्रश्न किया- "भंते! कोई श्रावक सामायिक करके बैठा है, उस समय कोई पुरुष उसके भंडोपकरण उठाकर ले जावे, और फिर सामायिक व्रत पूर्ण होने के बाद वह श्रावक अपने भंडोपकरण की खोज करे, तो क्या वह अपने भंडोपकरण की खोज करता है यह दूसरे के भंडोपकरण की?" (भगवती सूत्र, शतक 8, उद्देशक 5)

भगवान ने कहा- "गौतम वह अपने ही भंडोपकरण की खोज करता है, दूसरे के भंडोपकरण की नहीं?" गौतम स्वामी के मन में यह जिज्ञासा उठी कि क्यूँकि सामायिक में तो श्रावक भंडोपकरण को वोसरा देता है, इसलिए वह उसका कैसे हुआ? तो उन्होंने पुनः प्रभु से पूछा- "भंते! श्रावक जब शीलव्रत, गुणव्रत आदि की आराधना करता है, प्रत्याख्यान व पौषध करता है तब उसके भांड, क्या अभांड (स्वामित्व से मुक्त) नहीं हो जाते?"

प्रभु ने समाधान दिया-"गौतम! वे अभांड हो जाते हैं, अर्थात् उस समय उनपर उसकी ममता नहीं रहती। वह सामायिक में सुवर्ण, वस्त्र-पात्र आदि वस्तुओं पर से अपनी ममता हटा लेता है, इस कारण वे अभांड हो जाते हैं, किंतु सामायिक पूर्ण होने के बाद वह फिर से उन पर ममता करने लगता है, और ममता का बंधन जब जुड़ जाता है तो वे अभांड (उपकरण) पुनः उसके भांड (अधिकरण) बन जाते हैं।"

भावना का महत्त्व

यह संवाद स्पष्ट बताता है कि एक ही वस्तु चाहे वह छोटा सा कागज है, कपड़ा है, लकड़ी का टुकड़ा है या फिर हमारा शरीर ही है, जब तक हिंसा के लिए उसका उपयोग होता है, उस वस्तु पर हमारी ममता रहती है तब तक वह अधिकरण बना रहेगा। अधिकरण नरक का अधिकारी भी बना सकता है और उपकरण उपकारक होने से सद्गति प्रदान करता है।

मैं आपसे पूछूँ- एक चाकू है, यह उपकरण है या अधिकरण? आप कहेंगे- यह तो अधिकरण ही है, इससे किसी का खून किया जा सकता है, सब्जी, फल-फूल आदि काटे जा सकते हैं? पर क्या यह उपकरण नहीं बन सकता? प्राचीन काल में साधु जी शास्त्र लिखते थे किससे? कलम से और कलम किससे बनती थी? चाकू से। तो जो चाकू हिंसक भावना का प्रतीक माना जाता है, वही चाकू साधुजी के पास शास्त्र लेखन का सहायक बन

सकता है। चाकू से कलम भी बनती है और कतल भी होता है, फर्क है सिर्फ भावना का। कहते हैं कि बिल्ली जिन दांतों से चूहे को पकड़ती है, उन्हीं दांतों से अपने बच्चों को भी पकड़ती है। किंतु चूहे को पकड़ते ही खत्म कर डालती है, और अपने बच्चों को खरोंच भी नहीं आने देती। यह क्या बात है? बात यही कि भावना का फर्क है।

इसलिए मैंने आपको बताया कि इस संसार-प्रवाह में हमारी जीवन यात्रा चल रही है, इसमें समय-समय पर बाह्य वस्तुओं का उपयोग भी किया जाता है, किंतु उन वस्तुओं के साथ अपनी भावना को मलिन मत होने दो। वस्तु का उपयोग करते हुए भी ममत्व का गाढ़ बंधन मत जोड़ो। अपनी चिन्तन धारा को निर्मल एवं पवित्र रखो। वस्तु को अलग समझो, और स्वयं को अलग समझो। वस्तु को अपनी मत समझो। ज्ञानी पुरुष का यही लक्षण है-**''अन्तरगत न्यारा रहे जिम धाय खिलावे बाल।''** वह संसार में आवश्यक कार्य करता हुआ भी अन्तर में यह सोचता रहता है कि यह मेरा नहीं है, धन, परिवार आदि सब 'पर' हैं, एक दिन छूटने वाले हैं। जैसे कि धाय माता, आज की भाषा में 'नर्स' समझलो, बच्चे को नहलाती, धुलाती है, खिलाती है, दूध भी पिलाती है, पर कोई पूछे उससे कि क्या यह बच्चा तेरा है? तो कहेगी नहीं, मेरा नहीं है। तो तू क्यों इसको नहला रही है, दूध पिला रही है, और क्यों इसको गोदी में लेकर घुमा रही है? वह क्या उत्तर देगी? यही कि मेरी ड्यूटी है, मेरा कर्त्तव्य है। तो यही भावना आपके और हमारे मन में होनी चाहिए कि संसार में हिंसा, झूठ, परिग्रह आदि के कार्य हमें करने पड़ रहे हैं, वास्तव में ये हमारी आत्मा के उपकारी नहीं हैं। इस प्रकार के चिन्तन से, विचार से, ध्यान से आपकी आत्मा अन्तर में शांति का अनुभव करती रहेगी और मन प्रसन्न रहेगा।

सारांश यह है कि संसार में दुःख के कारणों को भी सुख में बदलने का साधन-भावना है। आचारांग सूत्र में यही बताया है कि-**''जे आसवा ते परिस्सवा''** (आचारांग 1.4.2) जो आस्रव हैं, कर्म बंध के हेतु हैं, वे निर्जरा के हेतु बन सकते हैं। पर कैसे? भावना से, ध्यान एवं चिन्तन से। इसलिए जीवन में भावना एवं ध्यान की महत्ता है, भावना एवं ध्यान के सहारे विष को अमृत बनाने की कला सीखी जा सकती है।

सुविचार

श्रीमती कंचन सुराणा

- जिन्दगी दो दिन की है। एक दिन आपके हक में, एक दिन आपके खिलाफ। जिस दिन हक में हो, गरुर ना करना एवं जिस दिन खिलाफ हो, सब्र कर लेना।
- बेहतर इंसान अपनी आदतों से जाना जाता है, वरना अच्छी बातें तो दीवारों पर भी लिखी होती हैं।

-सुराणा की बड़ी पोल, नागौर-341001 (राज.)

प्रवचन

समूह में जीने की कला : सामाचारी

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 02 सितम्बर, 2012 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर चातुर्मास में फरमाए गए प्रस्तुत प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमार जी जैन, वरिष्ठ निजी सहायक, वन-विभाग, जयपुर ने किया है। -सम्पादक

आत्मगुणों को आत्मसात् करने वाले अरिहंत भगवन्त, उन्हीं गुणों को प्रकट करने के लिए भगवद् आज्ञा रूप सामाचारी का पालन करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन करने के पश्चात्।

बंधुओं!

तीर्थंकर भगवान् महावीर की अंतिम आदेय अनमोल वाणी उसी तरह सदा याद रखने योग्य है, जिस तरह जीवन भर दी गई शिक्षा को कदाचित् पुत्र याद रख सके अथवा नहीं रख सके, परन्तु अंतिम समय में जो भोलावण, जो सीख, जो शिक्षा दी जाती है, उसको पुत्र ज़िन्दगी भर याद रखता है, उसको भूल नहीं सकता। उसी उत्तराध्ययन सूत्र की वाणी कहती है-

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्ख-विमोक्खणिं।
जं चरित्ता णं णिग्गंथा, तिण्णा संसारसागरं।।

मैं उत्तराध्ययनसूत्र की इस गाथा के आधर पर आपको आचार की, उस पद्धति के बारे में बताना चाहता हूँ जो सारे दुःखों का अंत करने वाली है। भले ही वह पद्धति निर्ग्रंथों को निर्देशित करके कही गयी हो। परन्तु गृहस्थ जीवन पर भी वह लागू होती है। तीर्थंकर भगवान् महावीर ने गौतम स्वामी को निर्देशित कर उपदेश दिये, गौतम बुद्ध ने आनन्द को निर्देशित कर उपदेश दिये। भगवान महावीर ने मात्र गौतम स्वामी के लिए, गौतम बुद्ध ने मात्र आनन्द के लिये ही नहीं कहा, अपितु सभी के लिये कहा। उत्तराध्ययनसूत्र के अनुसार समस्त दुःखों का अंत करने वाली है सामाचारी। आचार्य भगवन्त फरमाया करते थेः-

सबसे बढ़कर प्रेम है, उससे ऊपर नेम।
जा घर प्रेम न नेम है, वा घर कुशल न क्षेम।।

प्रेम इतना विस्तार कर गया है अपने लिये, परायों के लिये, छोटों के लिये, मोटों के लिये, एकेन्द्रिय के लिये, पंचेन्द्रिय के लिये, सबके प्रति प्रेम हो। जिस घर में प्रेम है वहाँ कोई नियम नहीं है वह कल्पातीत है। समूह में इतना प्रेम होता है कि छोटा बड़ों का काम करता है, बड़ा छोटे का काम करता है। कोई ईर्ष्या नहीं, कोई द्वेष नहीं, वहाँ कोई नियम की आवश्यकता नहीं। एवन्ता कुमार गौतमस्वामी को उनकी अंगुली पकड़ कर अपने घर गोचरी के लिये लाया है। वह उदारता से लाया है, माँ प्रसन्न हो रही है। पुराने समय में जयपुर का एक भी व्यक्ति संतों से क्षेत्र को फरसने के लिये विनति कर देता था तो संघ उसको स्वीकार कर लेता था। विनति करने के लिये संघ का अध्यक्ष, संघ का मंत्री गया अथवा नहीं गया, बड़ा व्यक्ति गया अथवा नहीं गया। एक भी व्यक्ति भावपूर्ण विनति कर देता तो संघ स्वीकार कर लेता। जिस घर में इतना प्रेम होता है, उस घर में नियम की आवश्यकता नहीं है। बड़ा आदमी राजा होते हुए भी बर्तन मांज रहा है, क्योंकि प्रेम है, जिस घर में अन्तरंगता है, सहिष्णुता है, एक दूसरे के लिये पूरक मानकर चला जा रहा है वहाँ नियम की जरूरत नहीं है।

जहाँ प्रेम नहीं वहाँ अपनत्व नहीं है। उस घर के लिये उस समूह के लिये नियम की, सामाचारी की जरूरत होती है। साधु-जीवन की जो दस सामाचारी हैं, वे गृहस्थ जीवन को भी सुन्दर बनाती हैं। उन दस सामाचारियों के आधार पर गृहस्थ जीवन के नियमों की बात कर रहा हूँ। **पहली सामाचारी है- 'आवस्सिया'**। अर्थात् घर से बाहर जाए तो आवश्यक कार्य से जाने की अनुमति लेकर जाए अथवा सूचना देकर जाए। जो लोग बुरा करने वाले हैं, जिन लोगों में कमियां हैं, जो सही मार्ग पर नहीं चल रहे हैं वे व्यक्ति 'आवस्सिया' कह ही नहीं सकते। जुआ खेलने वाला, व्यभिचार सेवन करने वाला, प्रतिष्ठा के प्रतिकूल कार्य करने वाला, कभी यह कह कर नहीं जाएगा कि मैं अमुक जगह जा रहा हूँ। आवस्सिया सामाचारी का पालन वो ही करेगा, जिसके जीवन में सच्चाई है, धर्म है, नीतिगतता है, नैतिकता है। जहाँ बुराई है वहाँ सामाचारी नहीं और जहाँ सामाचारी नहीं है वहाँ दुःखों का अंत नहीं है। सामाचारी नहीं वहाँ साख नहीं है। मारवाड़ी भाषा में कहूँ तो- लाख जावे साख रहे। साख रहेगी तो लाख मिल जाएगा। साख नहीं है तो सब कुछ राख हो जाता है। मैंने आचार्य भगवन्त के चरणों में रहते देखा अमुक सज्जन चीफ जस्टिस होते हुए भी बिना कहे घर से बाहर नहीं जाते थे। बड़ा भाई सामान्य स्थिति वाला था, छोटा भाई जस्टिस होते हुए भी बड़े भाई के पैर के हाथ लगाये बिना नहीं जाता था। सामाचारी कहती है कि गुरु छोटा है चेला बड़ा है अवस्था की दृष्टि से, पर गुरु बाहर जाने पर चेले से 'आवस्सिया' कहकर जावे। किसी का पिता सामान्य स्थिति वाला हो और बेटा

जज बन जावे, मंत्री बन जावे, मुख्यमंत्री बन जावे, फिर भी घर का नियम हो कि बिना कहे बाहर नहीं जाना। एक ही सामाचारी कहूँ जिसमें सारी सामाचारी समावेश की हुई है। जिसके मन में कुछ और है और बाहर में कुछ और है वह 'आवस्सिया' नहीं कर सकता। वह कदाचित् कह कर जाएगा तो नाम किसी जगह का लेगा और जाएगा किसी अन्य जगह।

साधु-जीवन की **दूसरी सामाचारी 'निसीहिया'** है। इसके द्वारा काम करके लौटने की सूचना दी जाती है। साधु जिस काम के लिये गया और उस काम को करके आए तो गुरु चरणों में निवेदन करे। वह काम करके आ गया हूँ। हो सकता है साधक जीवन में भिक्षाचरी, औषधि के लिये गया 5 मिनट का काम है 5 घंटे लग जावे, क्योंकि सूझती नहीं मिले, वर्षा आ जावे, देने वाला कहीं बाहर गया हो ऐसे घरों से देर से आ सकता है, गुरु को तब सोच करने की जरूरत नहीं। जो कहता कुछ है और करता कुछ है तब पूछना पड़ेगा- कहाँ गया? किससे लाया? सारे पारिवारिक दुःखों को मिटाने वाली सामाचारी है यह। इसका पालन करने वाला बुराई कर ही नहीं सकता। ''आवस्सिया निसीहिया'' कहने वाला बुराई नहीं कर सकता। कदाचित् बोध न होने से कोई आदत बुरी पड़ गई है, नहीं छूट रही है किन्तु घर से जाने एवं आने की पूरी सूचना देने वाले को गलत कार्य करने पर मन में ग्लानि होगी और धीरे-धीरे बुराई दूर हो जाएगी। बुराई नहीं टिकेगी, अगर वह वापिस आकर निस्सही कहता है तो। कहाँ पर गया 14 पूर्वधारी आनन्द भी प्रभु को सूचना देते थे। देर हुई तो बिना पूछे भी सारी बात कहते थे, आज यह घटना हो गई। घर में भी बाहर जाने वाला सदस्य लौटकर आने पर बताए कि यह काम करके आया हूँ। कहने वाला है तो समाधान हो जाएगा। इसलिये भगवान ने शब्द बताया 'सव्वदुक्खविमोक्खणिं।' सारी बुराइयों को खत्म करने वाली, सारे दोषों को समाप्त करने वाली है सामाचारी। सामंजस्य है, तो बड़े और छोटे का भेद नहीं है।

तीसरी सामाचारी है 'आपुच्छणा'। किसी भी कार्य में प्रवृत्ति करने से पहले गुरु से पूछना। एक भाई ने सुनाया म.सा. छोरे ने सगाई कर ली, शादी भी कर ली, म्हाने मालूम ही नहीं। धन्धा किया चार लाख का, घाटा लगा, पता नहीं ऐसा क्यों हुआ? वर्तमान में परिवार में बड़ों से बिना पूछे करने की आदत पड़ गई है। शास्त्र कह रहा है श्वासोच्छ्वास और पलक झपकने के अलावा कोई काम गुरु से बिना पूछे नहीं करे। पूछकर कार्य करने से अहंकार, दीनता, हीनता मिटती है। काम सिद्ध हो जाने पर बहुत सरलता से कहे, विनम्रता से कहे। काम नहीं होवे तो विनम्रता से कहे अमुक कारण से यह काम नहीं हुआ, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। आपने जैसा कहा, वैसा मैंने कर दिया।

साधक आपुच्छणा सामाचारी में गुरु से पूछे- **इच्छं णिओइउं भंते! वेयावच्चे व सज्झाए।** प्रातः अपने काम प्रारंभ करने से पहले शिष्य गुरु से पूछे भगवन्! मुझे आज क्या करना है? साधक के लिये दो ही काम बताये गये हैं:- 1. स्वाध्याय और 2. सेवा। जिस काम में गुरु शिष्य को नियुक्त करे उसी काम में लग जावे। यह नहीं कि शिष्य को अठाई करनी है, गुरु कह देवे अभी अवसर नहीं। मन में यह विचार नहीं लावे कि अमुक शिष्य तो दुबला पतला होते हुए भी उसे अठाई की स्वीकृति और मैं जब भी पूछूं तो मुझे कह देते हैं अभी अवसर नहीं है। मतलब क्या हुआ? पूछने की पद्धति समाप्त हो जाएगी। अगर हल्के रहना चाहते हो, स्वस्थ रहना चाहते हो, चिन्तन मुक्त रहना चाहते हो तो पूछ कर कार्य करो। घर में भी यही नियम लागू होता है। परिवार के मुखिया से पूछकर विशेष कार्यों में प्रवृत्ति करे। धन्धे की बात हो या भोजन बनाने की, पूछकर करने पर पिता या सासू से व्यवहार सुन्दर रह सकेगा।

चौथी सामाचारी है-'प्रतिपृच्छना'। भिक्षा के लिये जाने वाले शिष्य को कोई दूसरा शिष्य यह कह देवे कि मेरे लिये अमुक कपड़ा ले आना, मेरे लिये अमुक दवाई ले आना। जिस काम के लिये शिष्य जा रहा है यदि अन्य कोई शिष्य औषधि लाने, कपड़ा लाने का काम बतावे तो शिष्य पुनः गुरु के पास जाकर बतावे कि मुझे अमुक मुनि ने अमुक काम बताया है, जाने से पहले पुनः गुरु से पूछे। पुनः पूछने का अभिप्राय है कदाचित् वह कार्य किसी दूसरे मुनि ने कर दिया हो। अन्य किसी को उस कार्य के लिये आज्ञा प्रदान की गई हो। गृहस्थ जीवन में भी कार्य का मुखिया ने विभाजन सोच रखा हो या दिमाग में कोई अन्य बात हो तो परस्पर विचार-विमर्श से समाधान मिल जाता है।

पांचवी सामाचारी है 'छंदणा'। अपने लिये मिली हुई वस्तु के उपयोग हेतु दूसरे को निमंत्रित करना। यह सामाचारी- ईर्ष्या, द्वेष मिटाने वाली है। गुरु अपने किसी ज्ञानी शिष्य को प्रसन्न होकर कुछ दे, जो दूसरों को न दी गई हो, ऐसी वस्तु के लिए वह दूसरों को निमंत्रित करें। एक घर में चार बहुएँ थीं। एक लखपति घर की, दूसरी गुणवान, तीसरी रूपवान स्थिति की और चौथी सामान्य। सासूजी किसी बहू पर प्रसन्न होकर भेंट देती है तो जिस बहू को अमुक भेंट मिली तो अन्य किसी देरानी/जेठानी से पूछे कि मेरे पास तो यह चीज़ है, आपको चाहिये तो आप ले लो, तो देरानी/जेठानी के झगड़े नहीं होंगे। छोटे-बड़े का भेद कि यह अमीर घर की, मैं गरीब घर से हूँ, इसके लिये लापसी और मेरे लिए थूली- ऐसा विचार इस सामाचारी से समाप्त हो जाएगा। चन्दना अपने हक में अपने लिये मिली हुई वस्तु को दूसरों को देती है। समूह का जीवन चाहे श्रमण-श्रमणी का हो, श्रावक-श्राविका का हो अथवा वह जीवन किसी सद्गृहस्थ का हो। जो गृहस्थ घर में नियम के साथ रहता

है, उस घर में कूदकर मरने की, आत्महत्या करने की, घर छोड़कर चले जाने की घटना कभी नहीं होगी। कब नहीं होतीं ये घटनाएँ? जब बड़ा छोटों के प्रति प्रेम भाव, स्नेह भाव करता हो और छोटा बड़ों को सम्मान देता हो।

छठी सामाचारी है 'इच्छाकार'। कोई ज्ञान सीखना चाहता है तो विनम्रता के साथ कहे कि आपको साता हो, आपको अनुकूलता हो, आपके पास समय हो तो अमुक ज्ञान सीखना है। सामने वाला अवश्य सिखाने का भाव रखेगा। यदि कोई पुत्र विनम्रता के साथ अपने पिता से बात कहे तो कोई भी पिता बेटे की बात अवश्य सुनेगा। आपको अनुकूलता है, आपको समय है, आपको असाता तो नहीं होगी, मैं यह करना चाहता हूँ। इस प्रकार का भाव परिवार के व्यवहार में आ जाए तो कितना आनन्द होगा।

सातवीं सामाचारी 'मिथ्याकार' है। इसका तात्पर्य है हुई भूल के लिये खेद प्रकट करना पश्चात्ताप करना निर्दोष मात्र केवली भगवान होते हैं, छदमस्थ में दोष होते ही हैं। जाने-अनजाने में, सोचे समझे बिना कोई न कोई भूल हो ही जाती है। चलने वाले को धूल लगती है, करने वालों से भूल होती है। जहाँ सर्वज्ञता नहीं है, वहाँ भूल ही है। अतः भूल को, गलती को छुपाओ मत, झूठ मत बोलो, कारण कि एक झूठ को छिपाने के लिये 100 बार झूठ बोलना पड़ता है। भूल करेगा तो एक बुराई सौ बुराई को लायेगी। छदमस्थ कहते उसे ही हैं जो उपयोग नहीं रखने के कारण भूल कर बैठते हैं। अतः उसका खेद प्रकट करके समाधान करे। समाधान से बड़ी-बड़ी भूल भी धूल के साथ धुल जाती है। खेद के साथ निवेदन कर दे, किन्तु आज छोटी-छोटी भूल को छिपा कर बढ़ा रहे हैं। कमाने वाला पचास बार कमाता है, एक बार नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। चलने वाला 50 बार चलता है, कभी एक बार ठोकर भी खा सकता है। रोज खाने वाले को कभी वमन हो सकता है, दस्त भी हो सकता है, पर कारण मिटा दिया जाए तो खाना छोड़ने की जरूरत नहीं। खेद प्रकट कर लिया जाए, पश्चात्ताप कर लिया जाए, भूल स्वीकार कर ली जाए तो कार्य को छोड़ने की जरूरत नहीं है। जिसे शास्त्र की भाषा में 'मिच्छामि दुक्कडं' कहते हैं, वही मिथ्याकार है। मेरे से गलती हो गई है, मैं पश्चात्ताप करता हूँ। एक बार पश्चात्ताप कर लेने से फिर से वह भूल नहीं होगी।

आठवीं सामाचारी है 'तहक्कार' – गुरुदेव के वचनों को तहत्ति कह कर स्वीकार करे। अनुकूल प्रतिकूल सभी वचनों को हर्षित होकर आचरण में लावे। अनुकूल माने और प्रतिकूल नहीं माने तो कभी करणीय कार्य की भी अनुज्ञा नहीं मिलती है, लेकिन जो बड़ों की आज्ञा को स्वीकार कर चलते हैं उसे सहर्ष आज्ञा मिलेगी। तपस्वी को तपस्या की, ज्ञान वाले को ज्ञान की, सेवा करने वाले को सेवा करने की। शास्त्र की भाषा में यदि गुरु यह कह

दें कि कौआ सफेद होता है तो गुरुदेव ने कहा तो सही होगा। समझ में नहीं आने पर बाद में गुरु से पूछ सकता है। एक बार तो स्वीकार कर ले। सांप की बांबी पर अंगुली कर सो जावे तहत्ति आज्ञा। सेना की परेड में यदि सैनिक को सेनाध्यक्ष निर्देश कर दे कि खाई में, कीचड़ में सोना है, तो देश का रक्षण करने वाला सैनिक वह कर सकता है। गुरुदेव तो आत्मा से परमात्मा बनने में बाधक दोष दूर करने वाले हैं। अतः उनकी आज्ञा स्वीकार कर चलना चाहिए। इसी प्रकार परिवार में परिवार के मुखिया का आदर होना चाहिए। **'अभ्युत्थान' नौंवी सामाचारी है।** बड़ों के आने पर हाथ जोड़, सिर झुकाकर आदर सत्कार करे, सम्मान करे, विनयभक्ति करे। इस नियम से बड़ों के प्रति कभी गलत व्यवहार नहीं होगा।

दसवीं सामाचारी 'उवसंपया' है– जीवन विकास का आगम सूत्र है। अगर अपने जीवन को ऊपर उठाना चाहते हो तो बड़ों के पास बैठें। बड़ों के पास बैठने से मस्करी नहीं होगी, मज़ाक नहीं होगी, जीवन का विकास करेंगे। अच्छी संगति करें। बड़ों के पास, सज्जनों के पास बैठें। बड़ों के पास बैठने से पहली बात तो बुराई आयेगी ही नहीं और बुराई होगी भी तो बड़ों के संसर्ग से दूर हो जाएगी। अच्छा से अच्छा व्यक्ति है, लेकिन कुसंगति में बैठता है, उसमें बुराई नहीं भी है तो बुराई आ जाएगी। कोयले की दुकान पर बैठे हो, तो कालापन आ ही जायेगा और गंधी की दुकान पर बैठेंगे तो एक पैसा भी खर्च नहीं किया तब भी वहाँ बैठने से अच्छी गंध पायेगा, जीवन का विकास कर लेगा। श्रमण या श्रमणी श्रावक या श्राविका जो भी समूह में रहने वाला सद्गृहस्थ है, जिन घरों में इस सामाचारी का पालन होता है ऐसे नियम के साथ घर चलता है वह निश्चित ही तीर्थंकर भगवान की भाषा में सभी दुःखों का अंत कर लेता है, सभी सम्पदाओं का स्वामी होता है। प्रीति से सबका सर्वमान्य बनता है। कदाचित् सभी नियमों का पालन हो सके तो एक ही बात याद रखना हमेशा अपने से बड़ों के पास बैठना। इस एक सूत्र को लेकर चलने से उस परिवार में, समूह में, समाज में शान्ति, समाधि होगी। वह सामान्य से सर्वमान्य बन जाएगा।

ज्ञान के इस आचरण की सम्पदा को अपने जीवन में ढाल कर दूसरों को सिखाकर हर व्यक्ति के जीवन में आचरण की बात रखेंगे तो सुनना सार्थक होगा। ''दीप से दीप जले'' की कहावत के अनुसार एक ज्ञानी पूरे गांव को ज्ञानी बनाने वाला बन सकता है, ऐसे आचरण को जीवन में उतारेंगे तो शान्ति समाधि को प्राप्त करेंगे।

संशोधन

अगस्त 2012 के जिनवाणी अंक में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचन में पृ. 16, पंक्ति 19 पर ''सातवीं नरक'' के स्थान पर ''प्रथम नरक'' पढ़ा जाए।

प्रवचन

धर्मो रक्षति रक्षितः

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा 13 जुलाई, 2012 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में चातुर्मास के अन्तर्गत फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, वरिष्ठ निजी सहायक, वन-विभाग जयपुर ने किया है। **-सम्पादक**

षट्काय के जीवों की रक्षा कर अनुपम सुरक्षा प्रदान करने वाले सर्व जीव-रक्षक अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और रक्षा करने वालों का नेतृत्व करने वाले संघ के रक्षण में सतत जागृत आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्।

"धर्मो रक्षति रक्षितः" जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म की रक्षा माने क्या? मिली हुई स्वाधीनता का दुरुपयोग नहीं करना धर्म है। दुरुपयोग नहीं करने से ही सामर्थ्य और शक्ति प्राप्त होती है। शक्ति को पाकर उसका दुरुपयोग करने वाला प्राणी पुनः रसातल में चला जाता है। अपने को असुरक्षित मानकर प्राणी सुरक्षा के लिये पुद्गल की ओर झांकता है। पैसे से, परिवार से, परिजनों से, पुत्र-पौत्रों से सुरक्षा की अपेक्षा करता है। साधनों की दौड़ में कितना भयभीत है प्राणी, सुरक्षा के साधन कितने निष्फल से होते जा रहे हैं।

अनुभवी श्रमणोपासक ने कहा-"हम मौत से चार अंगुल के फासले पर चलते हैं। महानगरों की तेज गति से दौड़ती जिन्दगी, राजमार्ग पर जरा सा स्टीयरिंग ज्यादा घूम जाए तो जीवन जोखिम में चला जाए। सुना था इसी जयपुर में श्रेणीबद्ध अनेक बम विस्फोट हुए थे। एक भाई साहब कहने लगे "हमारी कार जौहरी बाजार के उस स्थल से निकली ही थी कि भीषण बम विस्फोट हो गया, कुछ सैकिन्ड का ही अंतर था।" कौन कर रहा है आपकी रक्षा? पूर्व में आपके द्वारा जाने-अनजाने में की गई जीव रक्षा- जिसे यूं कहा जाए, आपके द्वारा प्राप्त सामर्थ्य का दुरुपयोग नहीं किया गया, प्राण-भूत-जीव एवं सत्त्व को दुःख नहीं दिया गया, काया-वचन-मन के अशुभ योग का प्रवर्तन नहीं किया गया, पाँच इन्द्रियों के विषयों में राग-द्वेष नहीं किया गया। इस निषेधात्मक धर्म की पालना हुई, रक्षा हुई, उस रक्षित धर्म ने आपकी रक्षा की, **"धर्मो रक्षति रक्षितः"** के रूप में ऊपर कथित को हृदयगंम कर लिया जाए। जिससे जिन कारणों से आप यहाँ रक्षित होकर विराजे हैं, अभी

क्या उसके रक्षण की तैयारी है? केवल **बाहरी साधनों से आपनी रक्षा मानकर उन्हीं की हाय तौबा में, उन्हीं के लिये भागदौड़ कर दूसरे जीवों की रक्षा का हरण कर आज प्राणी रक्षा के स्वप्न देख रहा है। परिणाम ''ढाक के तीन पात''।** भगवान महावीर केन्सर अस्पताल की देखरेख करने वाली बहन अनिला जी कोठारी सुनाती हैं। पहले धर्म में कोई रुचि नहीं थीं, सामायिक आदि क्रियाएँ अच्छी नहीं लगती थीं। सेवा का शौक जरूर था, उसी के कारण अस्पताल में सेवा करने लगी, पर महाराज! विकट वातावरण- असहाय वेदना, पीड़ा, छटपटाहट और रोज की 8-10 मौतें। इससे जीवन की सच्चाई ध्यान में आने लगी, अभी थोड़ा-थोड़ा धर्म अच्छा लगने लगा। ये रोग, ये वेदना, ये मौत, ये अरक्षा। इस पर गत दिनों में चर्चा कर ली गई। भगवती सूत्र शतक 1 उद्देशक 2 के प्रारम्भिक सूत्र में ''सयं कडं दुक्खं वेएइ'' स्पष्ट कह रहा है कि किसी और ने पैदा नहीं की है यह समस्या, हमने ही पैदा की है। कोई समस्या आज आ रही है, किसी का काल परिपक्व नहीं हुआ, इसलिये अभी संचित है, अन्तर में, सत्ता में पड़ी हुई है। उसका वेदन नहीं हो रहा है, पर किया स्वयं ने ही है। स्मृति में बना रहे-''सयं कडं दुक्खं।''

कैंसर हो या टी.बी., ट्यूमर हो या बी.पी.,
झगड़े का कारण, पतिदेव बने या बीबी।

ये निमित्त मात्र हैं, मूलतः ''सयं कडं दुक्खं''। मरने वालों को देखकर भी पूरी जागृति कहाँ आती है, इन अरक्षितों से रक्षण कैसा? उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें अध्याय में अनाथी मुनि राजा श्रेणिक को इसी अरक्षा से सावधान कर रहे हैं-''**अप्पणा वि अणाहो सि....।** जो स्वयं ही अनाथ है। इसी उद्देशक में आगे पुद्गलों के चय, उनकी वर्ण स्थूलता, लेश्या, वेदना और क्रिया की चर्चा आई है। जड़ के साथ जकड़ा हुआ है जीव, जड़ के द्वारा पकड़ा हुआ है जीव।

एक व्यक्ति अधिक पुद्गल ग्रहण करता है, फिर भी उसे शक्ति कम प्राप्त होती है तथा कोई व्यक्ति कम पुद्गल प्राप्त करके भी अधिक शक्ति प्राप्त कर लेता है। रूई की अपेक्षा लोहे के छोटे अंश में अधिक शक्ति हो सकती है। पुद्गल भले कम ग्रहण करे किन्तु शक्ति अधिक होना संभव है। नरक गति से आये हुए व्यक्ति को क्रोध अधिक आता है। तिर्यंच गति से आए मनुष्य को भूख ज्यादा लगती है। मनुष्य गति से आए मनुष्य को अहंकार एवं मैथुन ज्यादा होता है। देव गति से आए मनुष्य को लोभ और परिग्रह की भावना अधिक घेरती हैं। महत्त्व होता है पाप के त्याग का। मासखमण सब नहीं कर सकते,

अट्ठाई सब नहीं कर सकते, परन्तु झूठ बोलना सब त्याग सकते हैं।

समता के साथ वेदना को सहन कर लिया जाए तो पाप घटता चला जाता है। वेदना कई प्रकार की होती हैं। कभी अल्प वेदना होती है तो कभी महावेदना होती है। जीव दोनों स्थितियों में समता में रहकर धर्म का पालन करता है तो धर्म उसकी रक्षा करता है। हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम बच्चों को धर्म की शिक्षा दें, उन्हें संस्कारित बनाएँ। जब तक बच्चों में संस्कार नहीं आएँगे तब तक पाप की प्रवृत्ति बढ़ती रहेगी पुद्गल के साथ सम्बन्ध बना रहेगा। पुद्गल की आसक्ति तोड़ना ही पुद्गल के सम्बन्ध से मुक्त होने का उपाय है। किन्तु आज व्यक्ति पुद्गलों के संग्रह में लगा है और उनके संग्रह से अपनी सुरक्षा मानता है। यही इसकी भूल है।

छोटे बालक तो फिर भी संस्कार शिविरों में आ जाते हैं, किन्तु 15 से 25 वर्ष तक के युवक-युवतियों का संस्कार शिविर लगाने की महती आवश्यकता है। क्योंकि भटकाव की स्थिति इसी उम्र में अधिक बनती है। इसी उम्र में वे अधर्म के मार्ग पर चल पड़ते हैं और समझाने पर भी धर्म को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। जो धर्म को स्वीकार कर उसका पालन करता है वह स्वयं धर्म के द्वारा रक्षित हो जाता है।

मिथ्यादृष्टि अपनी रक्षा बाहरी साधनों से करता है, वह दोष दूसरों पर डालता है। ''सयंकडं दुक्खं'' को स्वीकार नहीं करता। व्यक्ति अवस्था परिस्थिति की अनुकूलता पर फूलता है, प्रतिकूलता पर झूरता है। आगे क्रिया के वर्णन में उसकी दो क्रियाएँ कही हैं, पर यहाँ वेदना में अल्प वेदना कही।

दुःख का कारण बाहर से मानकर वह वर्तमान में कुछ हल्का हो जाता है दूसरों से रक्षा की आशा में उसका दुःख कुछ कम हो जाता है। उसमें अनिदा-अव्यक्त वेदना कही, अल्प वेदना कही शास्त्रकारों ने। पर यह दुःख किसी और ने पैदा नहीं किया। **''अप्पा कत्ता विकत्ता य'' ''सयं कडं दुक्खं''** आदि सूक्त उसकी अन्तरात्मा से उद्भूत होते हैं। बाहर के दुःख में समता रखने का प्रयास रखते हुए भी सामने वाले को दोषी नहीं ठहराते हुए अपने कृत कर्म के कारणभूत अपने दोषों का चिन्तन करते हुए दोषीपने से, अपने दोष सेवन से वह घोर दुःखी होता है। बाहर का दुःख उसके लिए **निदा-** व्यक्त वेदना महावेदना के लिये वर्णित हुआ। वर्तमान में वह सामने वाले में दोष नहीं देख रहा, उसे उसमें अपना प्रेम ही प्रतीत हो रहा है, अपना हित ही अनुभूति में आ रहा है, वह उसे अपना उपकारी ही मान रहा है। **''मित्ती मे सव्वभूएसु'' ''अप्पसम मनिज्ज छप्पिकाए''**

''सव्व भूयप्पभूयस्स आयतुला पयासु'' उसके जीवन से प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। उसकी सोच सही है,उसकी दृष्टि सम्यक् है- इसलिये महावेदना पर मिथ्यात्व की क्रिया नहीं, आगे के लिये गाढ़ा बन्धन नहीं।

शरीर स्थूल हो या सूक्ष्म, आहार कम हो या ज्यादा, श्वास लम्बे हों या छोटे, वर्ण काला हो या गोरा, द्रव्य लेश्या अवस्थित हो या परिवर्तित, वेदना कम हो या ज्यादा, किसी भी स्थिति में ''सयं कडं दुक्खं'' के विपरीत जाने वाला संसार बढ़ाता है। पुद्गल की आसक्ति से अधिक अरक्षित होता चला जाता है। ''सयं कडं दुक्खं'' के पश्चात् के सूत्र में वर्णित यह विवेचन आत्म-साधना की विशेष प्रेरणा प्रदान कर रहा है। इसे केवल उन जीवों की आयु, शरीर आदि की जानकारी मानकर नहीं छोड़ देना है, मुझे इसमें अपने जीवन को टटोलना है, अपनी विचारधारा को सम्यक् करना है। विचारधारा सही प्रवाह में चलने लगी तो मिली हुई स्वाधीनता का दुरुपयोग नहीं होगा। बल का दुरुपयोग नहीं होगा, हिंसा नहीं होगी। इन्द्रियों का दुरुपयोग नहीं होगा, असंयम नहीं होगा, इच्छा शक्ति का दुरुपयोग नहीं होगा, कामना नहीं होगी। हिंसा नहीं, अहिंसा; अस्तेय नहीं, संयम; कामना नहीं, इच्छा-निरोध-तप होगा। अहिंसा, संयम, तप यही तो धर्म है, यही तो हमारा रक्षक है। मिले हुए का दुरुपयोग नहीं, कितनी सुन्दर प्रेरणा है इस उद्देशक की। दुरुपयोग से आगे के दुःखों का आह्वान होगा, अतीत के दुरुपयोग से प्राप्त दुःख को जानकर, अपनी भूल को पहचानते हुए, दुरुपयोग नहीं करने पर ही हमारा कल्याण संभव है।

संवर-निर्जरा, संयम-तप रूपी धर्म के द्वारा अपनी रक्षा करें, इसी मंगल भावना के साथ।

अभिमत

जिनवाणी संवत्सरी अंक प्राप्त करके, पढ़कर के अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इतने सुन्दर, यथार्थ संशोधन करने के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद। आपश्री ने जो उपकार किया है, वह जिनशासन के लिए अत्यन्त चिन्तनीय है। शायद आपश्री ने अन्य संशोधकों के लिए एक अपूर्व द्वार खोल दिया है। खास तो लेखन की शैली अत्यन्त रोचक, सौम्य, मधुरता से पूर्ण जिनशासन के लिए अत्यन्त हितकारी संगठन बढ़ाने वाली होने से पढ़ने वाले को हर्ष उत्पन्न करने वाली है। संपूर्ण गुजरात-सौराष्ट्र एवं कच्छ आपश्री के विचारों के साथ ही है। आपश्री का शुभ प्रयास जिनशासन के लिए गौरवप्रद है।

-श्री सरदारमुनि जी, गच्छाधिपति, बरवाला संप्रदाय-गुजरात

(दिनाँक 28 जुलाई, 2012, उमराला-जिला-भावनगर, गुजरात)

प्रवचनांश

समय का सच

श्री पुखराज जैन

साध्वी-प्रमुखा, शासन-प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. द्वारा घोड़ों के चौक स्थानक में 19 अगस्त, 2012 को फरमाए गए प्रवचन से लिए गए अंश का संकलन श्री पुखराज जी जैन (मोहनोत), जोधपुर ने किया।-सम्पादक

देश व समाज के अग्रणी लोग चाहे वे नेता हों या मुखिया; यदि नेक कार्य में, धर्म-कार्य में, देश व समाज सुधार के कार्यों में स्वयं पहल करें तो विश्वासपूर्वक कह सकती हूँ कि देश, धर्म एवं समाज के उद्धार, उन्नति व प्रगति में सफलता मिल सकेगी। मेरे बैंगलोर चातुर्मास का एक प्रसंग यही सिद्ध करता है। मैंने प्रवचन में उपस्थित श्रोता भाई-बहनों से पाँच सौ एक (501) पौषधोपवास या संवर-दया करने की बात कही। यह प्रसंग रत्न संघ व जैन समाज के पूर्व महापुरुष आचार्य भगवंत श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की पुण्य-तिथि के अवसर का है। सभी ने सुना। आपस में कहा-सुनी, बातचीत, चर्चा होने लगी। वातावरण तैयार होता दिखाई देने लगा। तभी व्याख्यान श्रवण के लिए जो श्रावक वहाँ उपस्थित थे, उनमें से एक श्रावक जी खड़े हुए और बोले-"महासती जी! आप तो पाँच सौ एक व्रत-प्रत्याख्यान के लिए फरमा रही हैं, पर मेरा यह निश्चित मत है कि यहाँ के धर्मप्रेमी श्रावक-श्राविका इससे कहीं अधिक संख्या में प्रत्याख्यान कर सकते हैं, यदि संघ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष आदि बड़े अधिकारी स्वयं पहल करें और दया, उपवास आदि के प्रत्याख्यान लें। शायद आपकी मांगी से दुगुनी संख्या आ जाए और गिनती तीन बिन्दियों से आगे निकल जाए।"

श्रावक जी तो यह कह कर बैठ गए। मैंने भी सोचा- शायद यह बात सही निकले। पदाधिकारियों से बात की। प्रेरित किया उन्हें मैं इसे गुरुदेव की कृपा ही समझती हूँ कि कई पदाधिकारी सहमत हो गए। लगभग पाँच या इससे अधिक पदाधिकारियों ने वहीं तुरन्त स्वीकृति दे दी। इसके पश्चात् तो बहुत सुन्दर वातावरण बना और पूज्य शोभाचन्द्र जी म.सा. की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में कुल लगभग ग्यारह सौ पचपन दया, उपवास, पौषधादि हुए। नेता, अग्रणी, मुखिया आगे आकर स्वयं कुछ अच्छा करें तो समाज निश्चित ही आगे बढ़ेगा। यही आज के समय का सच है।

-10/567, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

कविता

नाम में क्या धरा है

डॉ. महेन्द्र भानावत

बार-बार तुमने मेरा नाम पूछा
मैं क्या बताऊँ मेरा नाम
नाम तो श्री भगवान का
क्या धरा है मेरे नाम में!
कई नाम रहे होंगे मेरे पिछले जन्मों में।
मैं कई जन्मों का संस्करण हूँ
वे सब जन्म छाया की तरह लुके हैं मेरे साथ
जो दिखाई नहीं देते, वे अदृश्य में
संस्कार, शील और स्मृतियों से पूरते हैं मुझे
परिपूर्ण करने की कोशिश करते हैं।
मैं फिर इस जनम में उलझ गया हूँ
इसलिए तो कहा है-
जनम-जनम का फेरा रे
मैं कहाँ-कहाँ पर डालूँ अपना डेरा रे
सब यहीं पड़ा रह जाना रे
मिट्टी हो या खजाना रे
क्या तेरा क्या मेरा रे
जनम-जनम का फेरा रे.....।
मैं इस जनम में ही कई नामों से गुजरता रहा हूँ
अब मैं अनाम होना चाहता हूँ
अगली अन्तहीन यात्राओं के लिए।
वे सब लोग जिनमें से आधे अब नहीं रहे
जब भी मिलते हैं
मुझे उन्हीं नामों से पुकारते हैं
और मैं उन सब नामों से बोलता हूँ
जानता हूँ- नाम में क्या धरा है।

-353, श्री कृष्णपुरा, उदयपुर-313001 (राज.)

English-Section

Harmony and Peace: A Jain Perspective*

Prof. Sagarmal Jain

Honorable Saints, Respectable Chairperson, dignitaries on the dais, scholars, sisters and brothers,

I am really thankful to the authorities of Ramkrishna Mission, Delhi for inviting me to say some words before this august gathering regarding to peace and harmony as a bare necessity of our age from Jain perspective as well as the perspective of Swami Vivekananda.

Harmony and Peace: Need of our Age

Among the most burning problems, the world is facing today; mental tension religious fundamentalism and intolerance are the most crucial. The miraculous advancement in science and technology provided us light legged means of transportaion and communication. As a result physical distances have no bars to meet the peoples of different nations, cultures and religions. Our world is shrinking, but unluckily and disdainfully the distances of our hearts are widening day by day. Instead of developing mutual harmony and faith, as well as peace we are spreading hatred and hostility and thus ignoring the values of harmonious living and co-existence. The blind and mad race of nuclear weapons is a clear indication that the human race is proceeding towards its formidable funeral procession. Rabindranath Tagore rightly observed "For man to come near to one another and yet to ignore the claims of humanity is the sure process of suicide." In the present circumstances, the only way out left for the survival of mankind is to develop a firm belief in mutual co-operation and co-existence. Religious harmony and fellowship of faiths is the first and foremost need of our age.

Humanity as a Binding Force

Undoubtedly, we belong to different faiths, religions and cultures. Our modes of worship as well as way of living also differ to some extent.

* A lecture given in world meet for Peace and Harmony at Ramkrishna Asharama, New Delhi on 11th Sept. 2012

There is also no denying the fact that our philosophical approaches and religious viewpoints are divergent, but among these diversities there-is a common thread of unity which binds all of us, and it is nothing except humanity. We all belong to the same human race. Unfortunately, at present, humanity as such is largely shoved into the background and differences of caste, colour and creed have become more important for us. We have forgotten our essential unity and are conflicting on the basis of these apparent diversities. But we must bear in our mind that it is only humanity, which can conjoin the people of different faiths, cultures and nationalities. Jaina ācāryas declared the human race as one (ega manussajai). Swami Vivekananda also propounds oneness of human race on the basis of the upnisadic vedant. The difference of caste, culture and creed are not only superficial but mostly they are the creation of man.

The second and foremost problem of human race is, the advancement in all the walks of life and knowledge could not sublimate our animal and selfish nature. We have already forgotten the devine aspect of humanity. The animal instinct lying within us is still forceful and is dominating our individual and social behavior and due to this our life is full of excitements, emotional disorders and mental tensions. The more advanced a nation, stronger the grip of these evils of our age over it. The single most specific feature by which our age may be characterized is that of tension. Now a day not only the individuals, but the total human race is living in tension.

Though outwardly we are pleading for peace and harmony, yet by heart we still have a strong faith in the law of the jungle, i.e. the dictum "might is right". We are living for the satisfaction of our animal nature only, though we talk of higher social and spiritual values. This duality or the gulf between our thought and action is the sole factor disturbing our inner as well as outer peace. Once the faith in higher spiritual values or even in our fellow beings is shaken and we start seeing each and every person or a community or a nation with the eyes of doubt, definitely, it is the sign of disturbed mentality or in other words living in tension.

Because of materialistic and mechanical outlook, our faith in spiritual values has been destroyed and when the mutual faith and faith in higher values of co-operation and co-existence in other words

harmony or peace is destroyed, doubts take place. The doubt causes fear, fear gives birth to tension or to violence and violence triggers violence. The present violence is the result of our materialistic attitude and doubting nature. The most valuable thing, for human race to achieve is harmony and peace, which has lost in the present situation. Lord Mahavira and Swami Vivekananda both have fully tried to establish the higher values of peace and harmony in human race.

Meaning of Peace in Jainism

The term 'peace' has various connotations. It can be defined in different ways from different angles. Intrinsically peace means a state of tranquility of mind. It is the state in which self rests in its own nature, undisturbed by external factors. Peace means soul devoid of passions and desires. Ācārāṅga mentions that an aspirant, who has attained peace has no desire. Peace means cessation of all desires and expectations. Sūtrakṛtāṅga equates it with 'Niravana' i.e. the emancipation from all desires, in other word; it is the state of self-contentment or total subjectivity i.e. the state of pure seership. Ācārāṅga maintains that one who is aware of peace will not fall in the grip of passions. While defining peace, Saint Thomas as Aquinas has rightly maintained the same view. He says, 'peace implies two things first our self should not be disturbed by external factors and secondly. our desires should find rest in one i.e. the self. This inner peace can also be explained from negative and positive view-points. Negatively, it is the state of the cessation of all the passions and desires. It is the total freedom from the vectors of attachment and aversion. Positively, it is the state of bliss and self contentment. But we must remember that these positive and negative aspects of inner peace are interdependent on each other, they are like the two sides of the same coin and they can not exist without each other. We can only distinguish them but not divide them. The inner peace is not mere an abstract idea, but it is something, which is whole and concrete. It represents our infinite self or Ātaman. Thus, here we have discussed regarding the inner peace. We must know that without this inner peace or spiritual peace, external peace or the peace in society is not possible. If we want to talk about world- peace, we must remember that without this spiritual peace world-peace is not possible.

Without this inner spiritual peace to talk about the world peace will be mere seeing a dream.

Now we turn to the external peace or the peace of human society. While the inner peace is the peace of our self, external peace is the peace of human society. We can also define it as environmental peace. In Jainism, the Prakrta word 'Khanti' & Saṁskṛta equivalent Kṣanti, also means forgiveness. In Sūtrakṛtāṅga, among ten virtues the first and foremost is forgiveness, which is the basic need for social peace in other words harmonious living in society. It is the state of cessation of wars and hostilities, among individuals and among individuals and society, different social groups as well as nations on the earth. So far as this outer peace or the peace of the society is concerned, it can also be defined in both ways negatively as well as positively. Defined, negatively it is the state of cessation of wars and hostilities and if defined positively, it is the state of harmonious living of individuals as well as societies and nations. It is the state of social co-operation and co-existence. But we must be aware of the fact that the real external peace is more than non-war. It is a vital peace. It is the state, free from mutual doubts and fears. Absence of actual war, does not mean the state of peace. It is not the state of peace, because where there is the nation of disgust and fear exist, the war exists. In modern world we term it as cold war. War is war, whether it is cold or actual, it disturbs the peace of individual and society. Real external peace is only possible, when our hearts are free from disgust and fear and each and every individual has firm faith not only in the dictum 'Live and Let Live', but to 'Live for others'.

According to Jaina Philosopher Umasvati-'By nature living beings are made for each other, (Parasparopagrho jīvānāṁ)'. So long as our heart are full of disgust and fear and we do not have full control on our selfish animal instincts as well as firm belief in the values of mutual co-operation and co-existence, real social peace on earth will no be possible.

Real peace dawns only if our hearts are full of universal love, which is something different from mere attachment or common good because for Jainas as well as for swami Vivekananda, attachment is always linked with aversion. But universal love is based on the concept

of equality of all beings and firm faith in the doctrine that by nature living beings are made for each other. We must also be aware of the fact that this external or environmental peace depends on the mental peace of individuals, since, our external behaviors is only an expression of our inner will and attitude towards life. Thus, these various aspects of peace are not mutually exclusive but inclusive. When the peace of society or in other words the environmental peace disturbed, the inner peace of the individual is disturbed and vice-versa. In my humble opinion hostilities and wars are the expressions and outcomes of sick mentality. It is the aggressive and selfish outlook of an individual or a society or a nation that gives birth to confrontations among individual-minds, individual and society as well as different social or religious groups and nations. At the root of all types of confrontations and wars, which disturb our environmental peace, there lies the feeling of discontentment as well as will for power, possession and hoarding. Thus social disturbances, conflict and confrontations are only symptoms of our mental tensions or sick mentality.

In fact, the peace of society depends on the psychology or mental make-up of its members, but it is also true that our attitude towards life and our behavioral pattern is shaped by our social environment and social training. The behavioral pattern and mentality of the members of non-violent society will surely be different from that of a violent society. While on the one side social norms, ideals and conditions affect the mental make-up and behavioral pattern of the individual, on the other side there are also individuals, who shape the social norms, ideals and conditions.

Though it is correct that in many cases disturbed social conditions and environmental factors may be responsible for vitiating our mental peace, yet they can not disturb the persons of strong spirituality. According to jainism spiritually developed soul remains unaffected at his mental level by external factors. But on the other hand disturbed mental state necessarily affects our social and environmental peace. Thus for Jainas the inner peace of the soul is the cause and social conditions are effect. Modern tension theory also supports this view. A book namely "Tension that causes Wars" tells us that economic

inequalities, insecurities and frustrations create groups and national conflict, but for Jainas economic inequalities and feeling of insecurities can not disturb those persons, who are spiritually self-contented and free from doubts and fears. So far as the frustrations are concerned they are generated by our ambitions and resentments and can be controlled only by extinction of desires and passions. There fore, we must try first to retain inner peace or the peace of self.

In Jaina texts, we find certain references about the importance and nature of peace. In Sūtrakṛtāṅga, it is said that "as the earth is the abode for all living beings so the peace is the abode for all the enlightened beings of past, present and future." These souls having attained the spiritual heights always rest in peace and preach for peace. For Jainas as well as Swami Vivekanand peace means the tranquility or calmness of mind and so they equated the term peace (Śānti) with the term equanimity or samata. For them peace rests on mental equanimity and social equality. When mental equanimity is disturbed, inner peace is disturbed and when social equality is disturbed external or social peace is disturbed. Jainism as a religion is nothing but a practice for mental equanimity and social equality. For the same, they use particular prakrta word "sāmāiay" (samata), the core principal concept of the Jainism. It is the pivot around which the whole jainism revolves. In English, the term Sāmāyika connotes various meaning such as equanimity, tranquility, equality, harmony and righteousness, indifferent contexts. Sometimes it means a balanced state of mind undisturbed by any kind of emotional excitement, pleasure or pain, achievement and disappointment, sometimes it also refers to the personality, completely free from the vectors of aversion and attachment, i.e. a dispassionate personality. These are the intrinsic definitions of "Samata or Śānti". But when this word is used extrinsically it means the feeling of equality with all the living beings and thus it conveys social equality and social harmony.

Harmony

Peace without harmonious living is impossible and this harmonious way of living depends on the three basic principles of jainism i.e. non-violence (ahiṁsa) non-absolutism (Anekānta) and non-

possessiveness (Aprigraha). Non violence means that every living being has a full right to live on this earth' no body has any right to disturb his peace and existence. It is the regard for all the forms of life. Non absolutism means that we should pay equal regard to others ideologies, faiths and religions. Non possessiveness menas that one can have a limited right to use the gifts of the nature or worldly things but not ownership on them, the others also have an equal right to use them. Thus Jainism as well as Swami Vivekananda presents a way of harmonious and peaceful living on the earth.

Now a days we have not only denied accepting social and religious check-post, but we have also denied natural check-post. Now our life has only accelerator and no brake. Our ambitions and desires have no limits, they always remain unfulfilled and these unfulfilled desires (Kama and Krodha) create frustrations or resentments which are the cause of our mental tensions. Thus we are deprived of mental peace and happiness as well as harmonious living. Thus in this age of science and technology we need the peace and harmony as an only alternatives for the survival of mankind. *-Director, Prachya Vidya Peeth, Shajapur (M.P.)*

जिनवाणी पर अभिमत

श्रीमती आशा गलुन्डिया

माह अगस्त 2012 की जिनवाणी में लेख पढ़कर अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई। वास्तव में यह अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि यह कहूँ कि यह गागर में ज्ञान का सागर है।

आपका कर्मसिद्धान्त पर सम्पादकीय, तत्त्वचिंतक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. का प्रवचन "आत्मालोचन से होती है आत्मशुद्धि", डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन "क्षमाः सुख शांति का प्रशस्त मार्ग" आदि लेख प्रासंगिक हैं, आत्मानुभूति व आत्मचिंतन करवाते हैं साथ ही जीवन को सही दिशा भी प्रदान करते हैं।

दुःख स्वकृत है परकृत नहीं; संवर एवं निर्जरा तथा शुभ एवं अशुभ कर्म के सिद्धान्तों को सम्पादकीय में जिस प्रकार सरल व तार्किक ढंग से समझाया है वह प्रशंसनीय ही नहीं अद्वितीय है। शुभ कर्म अघाती होते हैं और उनसे अशुभ कर्मों का संवर होता है, यह दृष्टिकोण बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कर्म सिद्धान्त का विवेचन बहुत ही मार्मिक एवं अलौकिक है।

डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन द्वारा क्षमा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए उसे ऊर्जा व चेतना का स्रोत एवं सकारात्मक सोच के रूप में बड़े सुन्दर व प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया गया है, वे भी बधाई की पात्र हैं।

-53, लेन नं. 2, गोपालबारी, जयपुर (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 77)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(स्नातक)

जिज्ञासा– स्नातक संज्ञा वाले होते हैं अथवा नो संज्ञा वाले?

समाधान– जैसाकि पूर्व की जिज्ञासाओं के समाधान में स्पष्ट किया जा चुका है कि पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक के जीव संज्ञा वाले होते हैं। उनमें आहारादि की आसक्ति होती है। किन्तु विशेषता यह है कि छठे गुणस्थानवर्ती ऐसे साधु-साध्वी जो शुभ योगी हैं, शुभ योगों में वर्तमान हैं वे नो संज्ञा वाले कहलाते हैं। सातवें से चौदहवें गुणस्थान वाले अप्रमत्त होने के कारण नो संज्ञा वाले ही होते हैं। स्नातक तेरहवें-चौदहवें गुणस्थानवर्ती होने से नो संज्ञा वाले ही होते हैं।

जिज्ञासा– स्नातक आहारक होते हैं अथवा अनाहारक?

समाधान– स्नातक सयोगी तथा अयोगी दोनों प्रकार के होते हैं। तेरहवें गुणस्थानवर्ती सयोगी केवली आहारक तथा अनाहारक दोनों होते हैं, जबकि चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली व सिद्ध भगवान अनाहारक ही होते हैं। सयोगी केवली जब केवली समुद्घात करते हैं, तब उसमें तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में वे अनाहारक होते हैं। बाकी समयों में आहारक ही होते हैं। ओजाहार, रोमाहार, कवलाहार, मनोभक्षी आहार इनमें से जब किसी भी प्रकार का आहार नहीं करे तब वह जीव अनाहारक होता है।

जिज्ञासा– स्नातक की जघन्य, उत्कृष्ट स्थिति कितनी होती है?

समाधान– स्नातक की तेरहवें गुणस्थान की अपेक्षा स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व है। यह स्थिति सामान्य केवली की अपेक्षा समझनी चाहिए। तीर्थंकर की अपेक्षा से तो स्थिति-जघन्य तीस वर्ष झाझेरी तथा उत्कृष्ट एक लाख पूर्व में एक हजार वर्ष कम की समझनी चाहिए। जबकि चौदहवें गुणस्थान की अपेक्षा स्थिति जघन्य व उत्कृष्ट

दोनों ही अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। दूसरे शब्दों में चौदहवें गुणस्थान की स्थिति पाँच लघु अक्षर (अ,इ,उ,ऋ,लृ) के मध्यम रीति से उच्चारण करने जितनी होती है। इन पाँच लघु अक्षरों के मध्यम रीति से उच्चारण करने में लगभग दो सैकिण्ड का काल लगता है।

जिज्ञासा– स्नातकों में कौन-कौनसी समुद्घात पाई जाती हैं?

समाधान– स्नातकों में जो सयोगी केवली होते हैं, उनमें एकमात्र केवली समुद्घात मिल सकती है। शेष छहों समुद्घात इनमें नहीं मिलती। छहों समुद्घात प्रमादी जीवों में ही मिलती है, जबकि स्नातक अप्रमादी ही होते हैं। केवली समुद्घात सामान्य केवली तथा तीर्थंकर केवली इन दोनों में मिल सकती हैं।

जिनकी केवलज्ञान प्राप्ति के समय 6 माह अथवा इससे कम आयु शेष रहे तो उनमें केवली समुद्घात मिलती है। जिनकी केवलज्ञान प्राप्ति के समय 6 माह से अधिक आयु शेष हो उनमें किसी में मिलती है, किसी में नहीं नहीं मिलती।

जिज्ञासा– स्नातक लोक के कितने क्षेत्र को अवगाहित करते हैं?

समाधान– स्नातक लोक के असंख्यातवें भाग में, असंख्यात भागों में तथा सम्पूर्ण लोक क्षेत्र को अवगाहित करते हैं। जब सयोगी केवली शरीरस्थ होते हैं, अथवा केवली समुद्घात में दण्ड या कपाट अवस्था में आत्म-प्रदेश फैलाते हैं, तब वे लोक के असंख्यातवें भाग क्षेत्र में रहते है। किन्तु मन्थान अवस्था में केवली भगवान के प्रदेशों से लोक का बहुत भाग व्याप्त हो जाता है और थोड़ा भाग शेष बचता है, अतः उस समय लोक के असंख्य भागों में रहते हैं। जब चौथे समय में आत्म-प्रदेशों को लोकपूरित बना देते हैं तब वे सम्पूर्ण लोक व्यापी हो जाते हैं।

अयोगी केवली स्नातक तो लोक के असंख्यातवें भाग क्षेत्र में ही रहते हैं। सिद्ध बन जाने के बाद भी उनका क्षेत्र उतना ही रहता है।

जिज्ञासा– स्नातक एक समय में कितने हो सकते हैं?

समाधान– स्नातकों का परिमाण (संख्या) दो प्रकार से बतलाया गया है-

1. प्रतिपद्यमान की अपेक्षा।
2. पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा।

प्रतिपद्यमान अर्थात् वर्तमान समय में नये बनने वालों की अपेक्षा स्नातक कदाचित् होते हैं, कदाचित् नहीं भी होते। यदि होते हैं तो जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट 108 होते हैं। पूर्व प्रतिपन्न अर्थात् पहले से स्नातक पद को प्राप्त किये हुए की अपेक्षा जघन्य-उत्कृष्ट कोटि पृथक्त्व अर्थात् दो करोड़ से लेकर नौ करोड़ तक होते हैं। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

भौतिकता और आध्यात्मिकता में अन्तर

श्री अरविन्द लोढा

- भौतिकता के वातावरण में पला मन प्रसिद्धि को अपने प्राण मानता है, जबकि आध्यात्मिकता के वातावरण में चेतन अपनी शुद्धि के लिए प्राण लगाता है।
- वस्तु (जड़) का महत्त्व व्यक्ति (जीव) से अधिक बढ़ता है तो भौतिकता का प्रभाव बढ़ता है और व्यक्ति (जीव) का महत्त्व वस्तु (जड़) से अधिक होता है तब आध्यात्मिकता जन्म लेती है।
- भौतिकता में 'स्व' को छोड़कर 'पर' के विषय में अध्ययन करना होता है, जबकि आध्यात्मिकता में पर को छोड़कर स्व को प्राप्त कर स्व की पढ़ाई प्रारम्भ करनी होती है।
- भौतिकता के वश जो बोला जाता है वह आदेश होता है, जबकि आध्यात्मिकता के वश में जो बोला जाता है वह आदर्शमय हो जाता है।
- भौतिकता भय को उत्पन्न करती है, आध्यात्मिकता अभय अवस्था को उपलब्ध कराती है।
- नाम नहीं बिगड़े यह भौतिक सोच है, परिणाम नहीं बिगड़े यह आध्यात्मिक सोच है।
- भौतिकता कल को क्लेशमय बनाती है, जबकि आध्यात्मिकता कल को कलश सम बना देती है।
- भौतिकता में डूबा हुआ व्यक्ति भूलता है अपने आपको! आध्यात्मिकता में डुबकी लगाने वाला व्यक्ति खोजता अपने आपको।
- भौतिकता भव को बढ़ाती है, आध्यात्मिकता भाव को बढ़ाती है।
- भौतिकता ज्वाला रूप है, आध्यात्मिकता ज्योति रूप है।

-'एल-आई-22, मण्डोर मण्डी, जोधपुर-342001 (राज.)

पत्र-स्तम्भ

मैं ही क्यों?

आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी

धर्मनिष्ठ नमन के मन में यह प्रश्न उठता है कि दुःख, अन्याय, अपमान, कष्टों की अधिकता मेरे जीवन में ही क्यों? इस प्रकार धर्म के प्रति आस्था को डगमगाने वाले ये विचार नमन के मन को झकझोर देते हैं, जीवन में अंधकार भर देते हैं। इस अंधकार में प्रकाश की किरण की तरह रहेंगे महाराज के समाधान।-सम्पादक

महाराज साहब,

पिछले कई दिनों से दिमाग में काँटे की तरह चुभ
रहे एक प्रश्न का समाधान प्राप्त करने के लिए आज मैं
आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ।
यदि मुझे सम्यक् समाधान नहीं मिला तो संभव है कि
जीवन में आज थोड़ा-बहुत भी
जो शुभ और सुंदर है, वह सब
या तो जीवन में से दूर हो जायेगा या फिर मैं
खुद होकर उन सबको अपने जीवन में से
दूर कर बैठूँगा।
प्रश्न मेरा यह है कि दुनिया में क्या
अच्छे बनने वाले को ही,
अच्छे बने रहने वाले को ही,
अच्छे मार्ग पर चलने वाले को ही
दुःख, कष्ट,
अपमान, अन्याय
सहन करने पड़ते हैं?
आप झुकते रहिए,
सब आपको दबाते रहेंगे।
आप मूल्यों को सम्हाल कर रखिए,
लोग आपको व्यवहारशून्य मानेंगे।

आप न्याय-नीति का दामन थामे रखिए,
आपको भिखारी बनने के दिन देखने पड़ेंगे।
आप जीवन में मर्यादा को जीवंत रखिए,
समाज में आपकी छवि 'पिछड़े' के रूप में बन जाएगी।
आप जीवन में धर्म को प्रथम स्थान दीजिए,
लोग आपको आखिरी स्थान पर ढकेल देने के लिए
तत्पर बनकर रहेंगे.....
यह वेदना किसी और की नहीं, मेरी खुद की है।
यह आक्रोश किसी और का नहीं,
मेरा खुद का है।
यह आक्रंद किसी और का नहीं,
मेरा खुद का है।
यह अनुभव किसी और का हो या न हो,
मेरा खुद का अनुभव तो यही है।
मन में एक ही प्रश्न उठता है-
'दुःख मुझ पर ही क्यों ?'
'अन्याय मुझ पर ही क्यों ?'
'अपमान मेरा ही क्यों ?'
'कष्टों की भरमार मेरे जीवन में ही क्यों ?'
'दबकर रहना मेरे नसीब में ही क्यों ?'
'आँसू बहाने का दुर्भाग्य मेरा ही क्यों ?'
महाराज साहब,
कृपया मेरे इन प्रश्नों का आप समाधान दीजिए।
मेरी इन उलझनों को आप दूर कर दीजिए।
मेरे हृदय के इस आक्रंद को
आप शान्त कर दीजिए।
मेरी इस व्यथा को आप दूर कर दीजिए।
हाथ में फूल की माला लेकर
खड़े रहने वाले के सिर पर

यदि पत्थर ही पड़ते हों तो बेहतर है कि
फूल की माला छोड़कर वह पत्थर ही पकड़ ले-
कम-से-कम सिर सलामत तो रहेगा!

नमन,

अत्यंत शान्ति से तुम्हारा पत्र पढ़ा।
तुम्हारे हृदय की जो व्यथा है उसे
दूर करने के प्रयास तो मैं करूँगा ही,
परन्तु
उसके पहले कुछ प्रश्न मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ।
तुम उनके उत्तर यदि दोगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।
जवाब दो-

छेनी की मार किस पत्थर पर ज्यादा पड़ती है?
चटनी पीसने के पत्थर पर या
प्रतिमा बन रहे पत्थर पर?
पैरों तले कुचले जाने का दुर्भाग्य किसके नसीब में ज्यादा होता है?
काँटे के नसीब में या फूल के नसीब में?

अग्निपरीक्षा में से किसे गुजरना पड़ता है?
कथीर को या कंचन को?
संसार की तकलीफें किसे अधिक सहनी पड़ती हैं?
पागल को या समझदार को?
नियंत्रण में रहने के कष्ट किसे अधिक झेलने पड़ते हैं?
वेश्या को या
सती को?
गुंडे से किसे डरना पड़ता है?
भिखारी को या धनवान को?
तुम्हारे उत्तर यही होंगे कि-
छेनी की मार तो
प्रतिमा बनने वाले पत्थर पर ही अधिक पड़ती है।
कुचले जाने का दुर्भाग्य तो

पुष्प के नसीब में ही लिखा होता है।
अग्निपरीक्षा में से तो कंचन को ही गुजरना पड़ता है।
संसार की तकलीफें तो समझदार को ही ज्यादा
सहनी पड़ती हैं।
अधिक नियंत्रण तो सती पर ही लादे जाते हैं।
और, गुंडे से बचने के प्रयास तो धनवान को ही
ज्यादा करने पड़ते हैं।
यदि यही तुम्हारे उत्तर हैं मेरे प्रश्नों के तो
तुम्हारे प्रश्नों के भी मेरे यही उत्तर हैं–
तुम यदि सज्जन ही बने रहना चाहते हो
तो दुर्जनों से ज्यादा कष्ट तुम्हें ही सहने पड़ेंगे।
तुम यदि पवित्र ही बने रहना चाहते हो
तो बदमाशों और लफंगों से ज्यादा तकलीफें तुम्हें ही झेलनी पड़ेंगी।
तुम यदि धर्मी ही बने रहना चाहते हो तो
पापियों से अधिक मुसीबतें तुम्हारी ही किस्मत में
लिखी जाती रहेंगी।
पसंदगी तुम्हारे हाथ में है–
काँटे जैसी, कष्ट बिना की लम्बी ज़िन्दगी जीना चाहते हो तो भी तुम स्वतंत्र हो और
फूल जैसी, कष्टभरी छोटी ज़िन्दगी जीना चाहते हो तो भी तुम स्वतंत्र हो!

नमन,

गुरुत्वाकर्षण के नियम पर आधारित एक बात तुम्हें बताऊँ?
बिस्तर में सोते समय जो कष्ट (श्रम) किसी व्यक्ति को होता है
उससे ज्यादा कष्ट उसे उठकर
बिस्तर में बैठने की कोशिश करते समय होता है।
वही व्यक्ति जब खड़ा होता है तब उसे और ज्यादा कष्ट होता है।
चलने लगता है तब और ज्यादा कष्ट होता है।
दौड़ने लगता है तब उससे भी ज्यादा कष्ट होता है।
लम्बी छलाँग लगाता है तब और ज्यादा कष्ट होता है।
ऊँची छलाँग लगाता है तब तो सबसे ज्यादा कष्ट होता है।

इसके पीछे क्या कारण है?
यही कि पृथ्वी उसे अपनी ओर खींचना चाहती है, जबकि
वह पृथ्वी से ऊपर उठना चाहता है।
कष्ट उसे उठाने ही पड़ेंगे, इसमें आश्चर्य क्या है?
बस, यही बात तुम्हें अपने संदर्भ में समझनी है।

तुम यदि दुर्जन में से सज्जन बनना चाहते हो,
अपवित्रता के कीचड़ में से बाहर निकलकर
पवित्रता के मानसरोवर में स्नान करना चाहते हो,
स्वच्छंदता की खाई में से बाहर निकलकर
समर्पणभाव के शिखर पर आरूढ़ होना चाहते हो,
अपने बिगडे हुए स्वभाव को उदार बनाना चाहते हो,
तो तुम्हें अधिक कष्ट, अधिक असुविधा, अधिक अपमान और
अधिक अन्याय सहने ही पडेंगे।

कारण? यही कि दुनिया के अधिकांश लोगों को दुर्जनता की गंदगी में,
वासना के कीचड़ में, स्वच्छंदता के कचरे में, सुखशीलवृत्ति के नशे में,
लोभांधता की पराधीनता में, और कामांधता की गुलामी में लोटने में, खेलने में और
झूमते रहने में ही रुचि है।
इस सबमें ही उन्हें जीवन की सार्थकता दिखाई देती है।
अब तुम यदि ऐसे लोगों की इस तुच्छ जीवनशैली को
छोड़कर उदात्त जीवनशैली अपनाने के लिए आगे बढ़ रहे हो तो
ऐसे लोगों की ओर से तुम्हारा विरोध तो होगा ही,
इसमें क्या आश्चर्य है? पढ़ा है तुमने यह वाक्य?
'चोरों की दुनिया में प्रकाश करने वाला चोरों का दुश्मन बन जाता है।''
इसका तात्पर्य स्पष्ट है।
चोरों को अंधकार ही रास आता है, प्रकाश करने वाले को वे निभा ही कैसे सकते हैं?
बस इसी प्रकार, जगत् के अज्ञानीवर्ग को अधमता ही रास आती है,
उत्तमता के मार्ग पर कदम रखने वाले को वे निभा ही कैसे सकते हैं?
उसका स्वीकार करके वे उसका सत्कार कर ही कैसे सकते हैं?

(क्रमशः)

युवा-स्तम्भ

जीवनदृष्टि बदलने का उपाय है ध्यान

डॉ. एन.के. खींचा (सेवानिवृत्त आर.ए.एस.)

जीवन का विजन क्या हो? जीवन का मिशन क्या हो? लक्ष्य क्या हो? जीवन का उद्देश्य क्या हो? इन प्रश्नों पर विचार करते रहने पर जीवन को सही दिशा में ले जाया जा सकता है। जीवन में शान्ति एवं प्रसन्नता सबको अभीष्ट है, किन्तु प्रयत्न उसके विपरीत दिशा में हो रहे हैं। जीवन में आनन्द से सराबोर होना हो तो द्रष्टाभाव का विकास करना होगा और ध्यान इसके लिए अमूल्य साधन है।

जिन्दगी में सुख कम है, दुःख अधिक है। जीवन में मिठास कम है, कड़वापन ज्यादा है। परिवारों में राग-द्वेष तथा जलन की आग है। तनाव, पीड़ा और अवसाद है। समृद्धि तो खूब है, लेकिन शांति नहीं है, सुख नहीं है, आनन्द नहीं है। भीतर ही भीतर भय है, चिन्ता है। चिन्ता है- प्रतिकूलता के आने की, अनुकूलता के समाप्त हो जाने की। हम येन-केन प्रकारेण अनुकूलता को बनाये रखना चाहते हैं।

क्या करें? जीवन की प्लानिंग करें। प्रज्ञा जगायें। बोध जगायें। जागकर, चिन्तन कर कर्म करें। प्रसन्न रहने का प्रयास करें। उपाय खोजें। जिन्दगी जीने का ढंग सीखें। दिखावा, ढोंग तथा प्रदर्शन से बचें। अन्दर-बाहर का अन्तर मिटा डालें। जीवन में नये विकारों से बचें। अर्न्तमुखी बनें। बाहर की दुनिया से अपने आपको बचायें। ध्यान के प्रति यदि जीवन में रस जग जाय तो चित्त स्थिर हो सकता है। चित्त शांत हो सकता है। ध्यान-मार्ग जीवन को स्वस्थ चित्त वाला बना सकता है। ध्यान जीवन की कीमिया है, ध्यान करने से जीवन व्यवस्थित हो सकता है। ध्यान मन को एकाग्र कर सकता है। ध्यान से विवाद मिटेंगे। ध्यान से भाव बदलेगा। सोचने-विचारने का नज़रिया बदलेगा। बेहतर सोचने लगेंगे। उदारवादी एवं सहिष्णु दृष्टिकोण बनेगा। ध्यान करने से मैनेजमेंट आयेगा। हम टाइम मैनेजमेंट स्वतः ही करने लगेंगे। अर्नगल प्रलाप से बचेंगे। वाद-विवाद, लफ्फाजी बातों से बचेंगे। जितना जरूरत है उतना ही बोलेंगे। जीवन में मौन अवतरित होगी।

जीवन का असली लक्ष्य क्या? जीवन का लक्ष्य धन नहीं हो सकता। पैसा साधन है, साध्य नहीं है। जीवन में सब कुछ अनित्य है, अशरण है। जीवन का लक्ष्य होना चाहिए असीम, चिर स्थायी शांति, आनन्द एवं तनाव मुक्त जीवन! जीवन का लक्ष्य होना चाहिए- 'परमतत्त्व' की प्राप्ति। धन स्वार्थ है। धन से जीवन का मंगल संभव नहीं है। धन क्षणिक सुख है। धन स्थायी चिर आनन्द नहीं दे सकता। अतः लक्ष्यविहीन न बनें। जीवन

को हासिए पर मत डालिए। अतः ध्यान-मार्ग से परिपक्व निर्णय करें। ध्यान को अपना लक्ष्य बनायें। स्वार्थी न बनें। सबके हित के लिए सोचें। असहिष्णु न बनें। जड़ से इन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं। इन्द्रियों से मन ऊँचा है। मन से विवेक श्रेष्ठ है। विवेक से आत्मा परम श्रेष्ठ है। क्यों हम इन्द्रियों, वासनाओं, कामनाओं, लालच, स्वार्थ और मोह-माया में आबद्ध हैं? मन को ध्यान में लवलीन करें, सहज बनें, बनावटीपन त्यागें। जीवन में समझदार बनें। प्राथमिकताएँ बदलें। धन के बजाय शांति और आनन्द को प्राथमिकता की श्रेणी में रखें।

ध्यान से आध्यात्मिक सम्पदा अर्जित करें। ऐसी सम्पदा बनायें जो शांति और आनन्द देती हो। ध्यान से हम अपने स्वयं के साथी बन सकते हैं। ध्यान मन का व्रत है। मन का उपवास है। ध्यान दिव्य-साधना है। ध्यान जीवन में गुणवत्ता लाने का मार्ग है। काया तो अन्नधर्मा है, रोग धर्मा है, भोग धर्मा है तथा मरण धर्मा है, लेकिन ध्यान जीवन की ज्योति है। ध्यान से जीवन बदल सकता है।

-544-ए, सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल के पीछे, जयपुर-302017 (राज.)

वाणी का संयम

श्री जसराज देवड़ा धोका

प्रत्येक परिवार की सुख शान्ति हेतु उसके सदस्यों द्वारा बोली गई भाषा का अत्यधिक महत्त्व है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-'मीठी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय, औरन को शीतल करे, आप हुँ शीतल होय' सच्ची और कड़वी लगने वाली बात को भी सीधी मधुर भाषा में कहने से सुनने वाला भी क्रोधित नहीं होता है। महापुरुषों ने सदैव कहा है-**पहले तोलो फिर बोलो।** बोलने का विवेक नहीं होने के भयंकर परिणाम हो सकते हैं।

आजकल घर-घर में कलह झगड़े बोलने में विवेक नहीं होने से हो रहे हैं। आप स्वयं चाहते हैं हमारे से कोई अच्छी बात करे तो आपका भी फर्ज बनता है सभी के साथ सोच-समझकर बात करें। परस्पर मतभेद हो सकता है, लेकिन हमें इसके लिए मनभेद नहीं रखना चाहिये। किसी के साथ संवाद कभी भी बन्द नहीं करना चाहिये। मनुष्य के शरीर में दाँत कठोर एवं जिह्वा नरम है। जिह्वा मिष्ठान्न भी खिलाती है तो अपराध की सजा भी दिलाती है। मधुर भाषी व्यक्ति से सभी बात करना पसन्द करते हैं। जबकि कड़वे बोलने वाले को कोई पास भी नहीं बुलाता। हमें हँसी-मजाक की बातें करने से पहले सामने वाले की उम्र का भी खयाल रखना चाहिये। किसी के घर गम, शोक का माहौल हो तो वहाँ पर बेतुकी बात करने वाले को सभी जन कटाक्ष की नज़र से देखते हैं। संक्षेप में सार्थक बात करनी चाहिये। ज्यादा बोलना अच्छा नहीं रहता।

-जसराज एण्ड कम्पनी, 15-8-377/2, बेगम बाजार, हैदराबाद-500012

नारी-स्तम्भ

समय का मूल्यांकन

डॉ. शैलजा अरोड़ा

समय वह है जो कभी रुकता नहीं। समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। समय गतिमान है। समय विजय और पराजय है। समय तिल को ताड़ और ताड़ को तिल बना देता है। समय राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है। इसने न जाने कितने सूर्य, चन्द्र नक्षत्र, तारे, युग, कल्प आदि देखे हैं। इसने कितनों को रोते-धोते-बिलखते और हंसते-गाते-खिलखिलाते हुए देखा है। कितने ही हर्ष-विषाद के स्वरूप को अत्यन्त निकटता से देखते हुए बिना किसी हर्ष और विषाद के यह समय आगे बढ़ता गया है। समय वह यात्री है जो अथक यात्रा करता है। समय कभी एक जैसा नहीं रहता। समय अपने आप में अच्छा या बुरा नहीं होता। हम अपनी सफलता अथवा असफलता के आधार पर उसका मूल्यांकन अच्छे या बुरे रूप में करते हैं। समय बड़ा शक्तिशाली होता है। कहावत है जो समय की अनदेखी करता है, वह उसे बर्बाद करता है।

समय से सोना, समय से उठना, समय से आहार-विहार करना अच्छा लगता है। समय की परख बहुधा लोग नहीं कर पाते, पढ़े लिखे निपुणजन भी मात खा जाते हैं और हाथ मलते रह जाते हैं। प्रचलित कहावत है-'डाल का चूका बन्दर और आसाढ़ का चूका किसान कहीं का नहीं रहता।' चूकना कुछ और नहीं वरन् समय की नज़ाकत को न समझना और उपयुक्त समय पर कदम न उठाना ही है। समय का एक नाम वक्त भी है, इसीलिए तो किसी ने कहा है-

दुश्मनी वक्त से नहीं अच्छी, वक्त पानी उतार देता है।
अहमियत वक्त की अगर समझो, वक्त किस्मत संवार देता है।।

समय बड़ा बलवान होता है। समय घड़ी की सुई की तरह व्यक्ति को जीवन में उपलब्धियों के शिखर पर पहुँचाता है, उसे लोकप्रिय बनाता है तो कभी वही समय उसे रसातल में भी पटक देता है। समय की कीमत उस व्यक्ति से पूछें जिसकी गाड़ी दो मिनट विलम्ब से पहुँचने के कारण छूट गई हो, समय का मूल्य उस छात्र से पूछो जो ट्रैफिक जाम के कारण परीक्षा केन्द्र पर विलम्ब से पहुँचा हो और परीक्षा में बैठने से वंचित कर दिया गया हो, समय का महत्त्व उस व्यक्ति से पूछो जिसका परिजन समय पर चिकित्सक के पास न पहुँचने के कारण अकाल ही काल का ग्रास बन गया हो। जो समय के साथ नहीं चला, वह ठीक उसी तरह डूब गया जैसे एक कुशल तैराक पानी के रुख के विपरीत तैरने पर डूब जाता है। कहते हैं कि समय अच्छे-अच्छों का पानी उतार देता है। यह समय का ही कमाल है

जो अयोग्य को योग्य, तो कहीं योग्य को अयोग्य सिद्ध कर देता है।

यदि समय बलवान नहीं होता तो अर्जुन को बृहन्नला और भीम को रसोईया न बनना पड़ता। समय की दुहाई भगवान राम को भी देनी पड़ी। हनुमान यदि समय से संजीवनी बूटी न लाये होते तो राम अयोध्या में मुँह दिखाने लायक नहीं रहते। किसी ने ठीक ही कहा है-

समय घटाता है सद्धा, समय बढ़ाता भाव।
समय घाव पर घाव दे, समय भरे हर घाव।।

महापुरुषों का कथन है कि स्वास्थ्य, सम्मान और सम्पदा हाथ से निकल जाए तो प्रयत्न से उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु हाथ से निकला समय कभी वापस नहीं लाया जा सकता। चूंकि समय सीमित है, इसलिए मनुष्य को समय के नियोजन एवं प्रबंधन की अतीव आवश्यकता है। समय का सम्यक् उपयोग ही मनुष्य की सच्ची सम्पत्ति है और समय का दुरुपयोग विपत्ति को दिया गया निमंत्रण है। जो व्यक्ति प्रत्येक पल के महत्त्व को समझता है, वह किसी काम को कल पर नहीं छोड़ता। सफलता और शौर्य रूपी सुन्दरी उनके गले में ही वरमाला डालती है। किसी ने एक बार नेपोलियन बोनापार्ट से उत्सुकतावश पूछा-''आप इतना अधिक काम करने के साथ ही सामाजिक हित के अन्य कार्यों में भाग लेने के लिए कैसे समय निकाल लेते हैं?'' उनका उत्तर था- ''मैं आज का काम आज ही कर लेता हूँ, उसी कभी भी कल पर नहीं छोड़ता।''

जैन दर्शन के अनुसार एक निमेष में असंख्य समय बीत जाते हैं। इतने सूक्ष्म समय का जो सम्मान करना जानता है, इस अमूल्य निधि को संजोना जानता है, वह अवश्य ही ऊँचाइयों को छू सकता है, उच्चता के शिखर तक पहुँच सकता है। सौभाग्य का निर्माण करने के लिए आवश्यक है दुर्भाग्य का निर्माण करने वाले आलस्य एवं प्रमाद जैसे कारकों से बचा जाए। हास्य-व्यंग्य, नशा तथा विकारों में लीन रहना समय को बर्बाद करना है। न जाने कब क्या घटित हो जाए। हमारी बुद्धिमत्ता इसी में है कि हम समय का उचित मूल्यांकन करना सीखें। हमारी दिनचर्या का क्रम समय-नियोजन व प्रबन्धन के साथ जुड़ा रहे। इससे न केवल हमारे लक्ष्य की पूर्ति होती है, प्रत्युत हमारी मानसिक शांति भी बनी रहती है।

संसार में सबसे मूल्यवान तत्त्व है समय। बीता समय कभी वापस नहीं आता। अन्य कीमती वस्तुएँ यदि खो जाएँ तो उन्हें पुनः प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु समय के साथ ऐसा नहीं है। समय निकल जाने पर पछतावा करना व्यर्थ है-'का वर्षा जब कृषि सुखाने।' सांप के सरक जाने के बाद लकीर पीटने से कोई लाभ नहीं होता।

संसार के कार्यों में समय की कीमत पैसे, पद, मान और सुख-सुविधा के लाभ व हानि से आंकी जाती है, जैसे- समय पर शादी के लिए हाँ कर दी होती तो करोड़पति का

दामाद होता, समय पर स्टेशन पहुँच जाते तो सुखपूर्वक गन्तव्य तक पहुँच जाते, समय पर पढ़ लेते तो आज पास हो जाते, समय पर सौदा कर लेते तो करोड़ों का फायदा होता, समय पर साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए पहुँच जाते तो अभी नौकरी लग जाती आदि कई उदाहरण 'समय' की अमूल्यता को, समय की नज़ाकत को बतलाते है। दूसरी तरफ अध्यात्म में या मुक्ति के मार्ग में समय के मोल को इससे भी अधिक आंका गया है। इस मार्ग में समय की कीमत को नहीं जानने वाला इस जन्म में होने वाली हानि को ही नहीं प्राप्त करता, अपितु कई जन्मों में प्राप्त होने वाली हानि से युक्त हो सकता है। इसे ही ध्यान में रखकर भगवान महावीर कहते है-''खणं जाणाहि पंडिए'' ''समयं गोयम! मा पमायए''। ''जो क्षण को जानता है वह पण्डित है'' और ''हे गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत कर।'' अपने भीतर होने वाले राग-द्वेष के बन्धन के क्षणों को जानने वाला पण्डित होता है। अपने शिष्य गौतम को वे कहते हैं राग-द्वेष की ग्रन्थियों को तोड़ने के इस मार्ग पर एक क्षण के लिए भी प्रमाद मत कर अर्थात् प्रत्येक क्षण जागरूक होकर बन्धन को तोड़ता चला जा। एक क्षण भी प्रमाद किया अथवा जागरूक नहीं रहा तो ये राग के बीज नये जन्म के लिए तुम्हें विवश कर देंगे।

इस प्रकार समय का मूल्याकंन संसार और मोक्ष मार्ग दोनों में अपेक्षित है। जो श्रावक या श्राविका है, उसे दोनों मार्गों में समय का मूल्यांकन करना सीखना चाहिये। समय को पहचानने और जानने वाला सदैव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है।

-4/114, एस.एफ.एस., अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री सुनील कुमार जैन

जिनवाणी पत्रिका वास्तविक रूप से जैन धर्म का आईना है। यह जिन भगवंतों द्वारा कहे गये आगम कथनों का सार है। जीवन से हताश व निराश व्यक्तियों को जीवन जीने की प्रेरणा देती है। यह जिन धर्म से अनजान इन्सानों के लिए प्रशस्त मार्ग का प्रथम सोपान है। इस छोटी सी पुस्तक में जिनवाणी का मर्म छुपा है। इसे पढ़ने से पूर्व मेरी इस पुस्तक के बारे में यह राय थी कि यह पत्रिका, अन्य पत्रिकाओं की भाँति जैन समाज की एक ''विज्ञापन पत्रिका'' है। परन्तु मेरे एक रिश्तेदार द्वारा दिया गया इस पत्रिका का जुलाई अंक पढ़ा तो मुझे मेरी इस धारणा पर अफसोस हुआ और पश्चात्ताप हुआ कि मैंने इस पुस्तक को पढ़ने में इतना विलम्ब क्यों किया? यह पत्रिका यथार्थ में 'गागर में सागर' समान है।

-अग्रसेन कॉलोनी, बरगमां रोड़, रोडवेज डिपो के पीछे, हिण्डौन सिटी, जिला-करौली-322230 (राज.)

बाल-स्तम्भ

दंभ में दम नहीं

श्री कपिल जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 नवम्बर 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

पुराने समय की बात है कि जंगल में चण्डख नामक एक गीदड़ रहता था। वह भूख से व्याकुल होने के कारण भोजन की तलाश में शहर आ गया। शहर में उसे कुत्तों ने घेर लिया और नोंचने लगे।

कुत्तों से जान बचाकर चण्डख गीदड़ भागा और एक धोबी के घर में घुस गया। वहाँ धोबी ने एक बड़े बर्तन में नील का पानी भर रखा था। जब गीदड़ घर में अन्दर गया तो उस बर्तन में गिरा। उस बर्तन में से बाहर निकलने पर गीदड़ का रंग नीला हो गया था। गीदड़ अपने इस रंग को देखकर चकित भी था और खुश भी। क्योंकि अब उससे शहर के कुत्ते दूर भाग रहे थे। गीदड़ शहर से पुनः जंगल पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर उसने पाया कि कोई भी पशु उसे पहचान नहीं पाया और सब उसे देखकर चकित हो रहे थे। सभी पशु आपस में बातचीत करने लगे कि हमने ऐसा जानवर पहले कभी नहीं देखा, पता नहीं कितना शक्तिशाली होगा, कोई कहने लगा कि महाबलवान जीव आ गया है।

खरगोश आदि सभी छोटे पशु उससे डरकर भागने लगे और उसे विचित्र बलवान जानवर समझकर शेर-बाघ जैसे पशु भी अपनी जगह छोड़कर भागने लगे। चण्डख ने पशुओं को भागते हुए देखा तो बोला मैं तुम्हारी रक्षा के लिए आया हूँ। त्रिलोकी के राजा ब्रह्मा ने मुझे तुम्हारी सुरक्षा करने के लिए भेजा है। यह सुनकर शेर-बाघ आदि पशुओं ने चण्डख को अपना राजा मान लिया और बोले- "स्वामिन्! हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।" फिर चण्डख ने शेर को अपना प्रधानमंत्री, बाघ को नगर रक्षक और भेड़िये को सन्तरी बना दिया।

अहंकार के कारण अपने पुराने आत्मीय मित्रों गीदड़ आदि से बात नहीं करता और उन्हें जंगल से बाहर निकलवा दिया अब शेष गीदड़ सोचने लगे इस चण्डख को सबक सिखाना पड़ेगा।

शेर आदि चण्डख को खुश रखने के लिए छोटे-छोटे जानवरों को मारकर उसे भेंट करते थे। चण्डख उसमें से कुछ खाकर शेष अपने नौकर चाकरों में बाँट देता था।

कुछ दिन तो उसका राज्य बड़ी शांति से चलता रहा, किन्तु एक दिन एक घटना घटी। उस दिन सभी गीदड़ आपस में किलकारियाँ कर रहे थे। जब चण्डख ने उनकी किलकारियाँ सुनी तो उसका रोम-रोम खिल उठा और अपने आप पर काबू नहीं रख पाया एवं पागल होकर किलकारियाँ मारने लगा।

शेर, बाघ आदि पशुओं ने उसकी किलकारियाँ सुनीं तो समझ गये कि यह चण्डख ब्रह्मा का दूत नहीं, बल्कि मामूली गीदड़ है। सभी ने सोचा, इस गीदड़ ने तो हमें मूर्ख बनाया है। हमें इसकी मूर्खता का सबक देना चाहिए। बाघ ने कहा- इसे मृत्यु दण्ड देना ही ठीक रहेगा।

चण्डख ने शेर, बाघ आदि की बात सुनी तो वह समझ गया, उसकी पोल खुल गई है। चण्डख वहाँ से भागने लगा, किन्तु शेर ने एक ही छलांग में उसे दबोच लिया और मार दिया।

इस तरह गीदड़ को अपने आत्मीय मित्र लोगों की उपेक्षा करने एवं दंभ में रहने के कारण दम तोड़ना पड़ा, जीवन समाप्त करना पड़ा।

शिक्षा- जो अपनों को दुत्कार कर परायों को अपनाता है, उसका नाश हो जाता है।

प्रश्नः-

1. गीदड़ का रंग नीला कैसे हुआ?
2. शेर, बाघ आदि ने चण्डख को अपना राजा क्यों मान लिया?
3. ब्रह्मा और दंभ के तीन पर्यायवाची शब्द लिखें।
4. 'रोम-रोम खिल उठा' और 'पोल खुल गई' मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिये।
5. दंभ में दम नहीं होता है, इस कथन को समझाइए।
6. क्या अजनबी से डरना चाहिए?

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2012] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'स्वतन्त्रता का आनन्द' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 23 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	भव्यता जैन-सांघीपुरम् (कच्छ)	26
द्वितीय पुरस्कार-200/-	प्रणत धींग-उदयपुर (राज.)	23
तृतीय पुरस्कार- 150/-	नमन जैन-इन्दौर (म.प्र.)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	विमलचन्द सुराणा-सेवकीकला, जोधपुर (राज.)	23
	रीना टाटिया-जोधपुर(राज.)	23
	प्रेक्षा जैन-जोधपुर (राज.)	22
	निशा जैन-खेरली, अलवर (राज.)	22
	वत्सल जारोली-उदयपुर (राज.)	21

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर की दीक्षा-अर्द्धशती पर रचनाएँ आमन्त्रित

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, चारित्रनिष्ठ, जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. के संयमनिष्ठ जीवन का आगामी कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 19 नवम्बर, 2012 को 50 वां वर्ष (स्वर्ण जयन्ती वर्ष) प्रारम्भ हो रहा है। इस अवसर पर जिनवाणी का आगामी नवम्बर, 2012 का अंक विशेष रूप से परम पूज्य आचार्यप्रवर के संयम-जीवन पर केन्द्रित रहेगा। एतदर्थ श्रद्धालु श्रावकों एवं विद्वद्जनों से अनुरोध है कि वे आचार्यप्रवर के जीवन से सम्बद्ध निम्नांकित बिन्दुओं में से किसी एक पर अपने आलेख/संस्मरण/भजन/स्तवन आदि शीघ्रातिशीघ्र सम्पादक के पते पर प्रेषित कर अनुगृहीत करें।

1. संयमनिष्ठ जीवन के 50 वर्षों का लेखा-जोखा
2. चातुर्मासों की उपलब्धियों के विशेष प्रसंग
3. प्रवचनशैली
4. अनुशासन की दृढ़ता
5. व्यसन-फैशन के त्याग की प्रेरणा
6. संस्कार-प्रबोधन
7. सामायिक-स्वाध्याय एवं ध्यान की प्रेरणा
8. सद्गुणों के पुंज
9. ध्यान-मौन आदि की साधना
10. सूझबूझ और गुरुभक्ति

-सम्पादक, 3 के-24/25, कुडी भगतासनी, जोधपुर-342005 (राज.)

भावाभिव्यक्ति

मुक्ति की राह दिखाई

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

दुःख दूर हों सुख शान्ति पाएँ
चाहे यह हर कोई,
क्यों अनचाहा जावे नहीं, मनचाहा आवे नहीं,
समझें हम सच्चाई,
आओ, देखो, झाँकें हम
अपने अन्तर्मन की गहराई,
हर उदय का व्यय हो रहा,
संवेदनाओं ने बात यह बताई,
काया देखते-देखते यह,
अनुभव से समझ में आई,
बुद्धि देखे जाने जिसको
हम ने बात भुलाई,
साधें अपने चित्त को छोड़ अनित्य की परछाई,
हर संवेदन सम रह जाएँ, तब कर पाएँ अपनी भलाई।
लम्बा रस्ता, पर चलने से ही,
होगी दूरी की घटाई,
अणु-अणु संवेदन है,
अब भावित शक्ति जगाई,
रोम-रोम बंधन खुले, भंग अवस्था आई,
धन्य है गुरुवर तुमको,
मुक्ति की राह दिखाई,
परम सत्य के दर्शन से
सर्व मुदिता है छाई।

(ध्यान-साधना शिविर पर प्रतिक्रिया)

प्रेरक-संस्मरण

जडावकंवरजी की आलोयणा

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरड़िया

कुछ दिनों पहले सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य मिला था। यही एक संस्था है जहाँ से नियमित रूप से साहित्य प्रकाशित होता है और मिलता है। बाकी दो-तीन संस्थाओं से साहित्य आना बन्द हो गया है, या कभी-कभी दर्शन होते हैं।

मण्डल से प्राप्त पुस्तकों में से एक "कवयित्री महासती श्री जड़ावकंवर जी म.सा. की काव्य साधना" थी। इसमें महासतीजी के काव्य की विविध धाराओं का उल्लेख था। पढ़कर अच्छा लगा। लेकिन विशेषकर 'आलोयणा' उनकी कालजयी रचना है। उसमें मेरी रुचि थी। देखने की उत्कंठा जागृत हुई, क्योंकि आज से 75 साल पहले जब मैं पाँच वर्ष का था, मेरी नानीजी घेरीबाई एक छोटे से गांव चौकड़ी में जहाँ मेरा ननिहाल है, महाजनों में सिर्फ उन्हीं का एक घर था। रात के समय सामायिक के बाद घर के मुख्य द्वार की थली के पास बैठकर हर रोज यह 'आलोयणा' गाती थी। जब वे अपने सुरीले कंठ से तन्मयता व एकाग्रता से गाती थी तो समय ठहर जाता था। मुख्य मार्ग पर घर होने से राह चलते राही भी ठहर जाते थे। हम लोग भी बैठकर सुनते थे और उनके साथ-साथ गाते थे।

आलोयणा में शब्दों का चुनाव इतना सरल व सुन्दर है कि हमारे दैनिक जीवन की एक-एक बात, एक-एक घटना सामने आकर खड़ी हो जाती है और किये गये पापों के लिए प्रभु से क्षमा मांगते हुए प्रायश्चित्त करते हैं।

जब वह हाथ जोड़कर टेर लगाकर 'ओ नाथजी!' का उच्चारण शुरु करती तो लगता था उनके नाथजी उनके सामने खड़े हैं जिनसे वे अपने मन की बात, मन की व्यथा व्यक्त कर रही हैं। मन की गहराई से ये शब्द निकलते थे। ऐसी आस्था, ऐसी क्षमायाचना उन शब्दों में भक्ति की शक्ति थी कि जब वे भावविभोर होकर आखिर में दीनानाथजी बोलती थी तो कभी-कभी सुबक पड़ती थीं। यह था कवयित्री जी के सरल सुबोध शब्दों का प्रभाव। इतनी सीधी सादी भाषा की आलोयणा कोई गाता है तो किसी का भी मन कोमल हो जाता है, विचार निर्मल बन जाते हैं, गाने वाला भक्ति रस में डूब जाता है।

हमारे गांव नोखा चांदावतां में हमारे मौहल्ले के महिला स्थानक में जब सब महिलाएँ मिलकर समवेत स्वर में आलोयणा गाती थीं तो समा बंध जाता था। हम बाहर स्थानक की चौकी पर बैठकर चुपचाप सुना करते थे। यह गांव-गांव, घर-घर में बड़े मनोयोग से गाई जाने वाली हृदय को मथने वाली आलोयणा है, जिसे गाने वाला और सुनने वाला आनन्द रस में डूब जाता है। आप भी परिवार के साथ गाइये और आनन्द उठाइये।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जीवन निर्माण की बातें भाग-1- पारसमल चण्डालिया, ***प्रकाशक***- श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, नेहरू गेट के बाहर, ब्यावर (राज.), फोनः 01462-251216, 257699, ***पृष्ठ***- 8+102, ***मूल्य***-10 रुपये, ***सन्***- 2012

सम्यग्दर्शन मासिक पत्रिका में सह सम्पादक श्री पारसमल चण्डालिया द्वारा नियमित रूप से "जीवन निर्माण की बातें" शीर्षक से सुविचार दिए जा रहे हैं। उन्हीं सुविचारों में से एक हजार विचार उपर्युक्त पुस्तक के भाग-1 में प्रकाशित हुए हैं। इनका स्वाध्याय करके पाठक अपने जीवन को सही दिशा दे सकता है। पुस्तक के कतिपय विचार इस प्रकार हैं-

1. व्यक्ति को अपनी सफलता पर सन्तोष करके नहीं बैठना चाहिए, अपितु उत्तरोत्तर पुरुषार्थ करते हुए चरम लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए।
2. सच्चा साधक वही है जो सांसारिक प्रलोभनों से विचलित नहीं होता।
3. व्यक्ति अपने स्वार्थ के चक्कर में भला बुरा, हित-अहित सब कुछ भूल जाता है।
4. जब मन में शान्ति होगी तो बाहर भी शान्ति का वातावरण बनेगा।
5. पाप के मार्ग से आया हुआ पैसा मानव में दुर्बुद्धि पैदा किए बिना नहीं रहता।

पुस्तक पठनीय, मननीय एवं आचरणीय विचारों से सम्पृक्त है। विशेष अवसर पर पुस्तक का वितरण भी किया जा सकता है।

जैन आगमों में मध्यलोक- श्री विमलकुमार नवलखा, ***प्रकाशक***- जैन मुनि कन्हैयालाल 'कमल' स्मृति ट्रस्ट, आबू पर्वत-307501 (राज.) ***पुस्तक प्राप्ति स्थान***- (1) श्री वर्धमान महावीर केन्द्र, सब्जी मण्डी के पास, आबू पर्वत (राज.) फोनः 02974- 235566, (2) आगम अनुयोग ट्रस्ट, स्थानकवासी बाड़ी, स्था. सोसायटी, नारायणपुरा, अहमदाबाद, फोनः 079-27551426, ***सम्पर्क***- श्री महावीर 'मधुरम्' मो. 099285-06675 ***पृष्ठ***- 204, ***मूल्य***-100 रुपये, ***सन्***- 2011

उपाध्याय मुनि कन्हैयालाल जी 'कमल' द्वारा 'गणितानुयोग' का सम्पादन किया गया था। गणितानुयोग में विभिन्न आगमों के आधार पर जैन दृष्टि से खगोल, भूगोल एवं गणित का निरूपण हुआ है। प्रस्तुत कृति में उसी गणितानुयोग, विभिन्न आगमों एवं त्रिलोकसार, तिलोयपण्णती, जैन तत्त्व प्रकाश, लघुक्षेत्र समास, लोकप्रकाश आदि ग्रन्थों का उपयोग कर जैन खगोल-भूगोल को सरलरीति से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

खम्भात सम्प्रदाय के श्री नवीन ऋषि जी द्वारा सम्पादित गुजराती पुस्तक ''जैनदृष्टिअे मध्यलोक'' का भी सहयोग लेकर हिन्दी पाठकों को मध्यलोक से सम्बद्ध प्रामाणिक सामग्री परोसने का प्रयत्न किया गया है। चौदह राजूलोक के तीन विभाग हैं- अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्वलोक। अधोलोक में नरकावास है, ऊर्ध्वलोक में देवों एवं सिद्धों का निवास है। मध्यलोक में मनुष्य, तिर्यञ्च एवं देवों की उपस्थिति है। मध्यलोक में अढ़ाईद्वीप का वर्णन आता है। अढ़ाईद्वीप में जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड और अर्द्धपुष्करद्वीप की गणना होती है। यह मनुष्य क्षेत्र कहलाता है। जैनागमों एवं उत्तरकालीन ग्रन्थों के आधार पर मध्यलोक का निरूपण करने के साथ कहीं-कहीं वैदिक एवं बौद्ध मान्यताओं से भी तुलना की गई है। ग्रन्थ में परिधि, जीवा, धनुःपृष्ठ, ईषु, बाहा, प्रतर, जीवावर्ग, घनफल आदि को भी स्पष्ट किया गया है। मध्यलोक का वर्णन-विषय विशाल है, जिसमें द्वीप, समुद्र, नदियां, द्रह, पर्वत, नक्षत्र आदि अनेक विषय समाविष्ट होते हैं। इस ग्रन्थ के माध्यम से मध्यलोक के स्वरूप को समझने में सरलता का अनुभव होगा, ऐसी आशा है। ग्रन्थ के प्रणयन में श्री विनयमुनिजी 'वागीश' की प्रेरणा रही है।

हम कितने शाकाहारी? - प्रीतेश जैन, ***प्रकाशक***- (1) जय जिनेन्द्र ग्रुप, भिलाई, मो. 094252-43500, (2) कल्याणमल चंचलमल चोरडिया चेरिटेबल ट्रस्ट, चोरडिया भवन, गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.) फोनः 0291-2621454, 94141-34606

हम अपने को शाकाहारी समझते हैं, किन्तु आइसक्रीम, चॉकलेट, चिप्स, साबुदाना, ब्राण्डेड आटा, नेलपालिश, लिपिस्टिक आदि बहुत सी ऐसी वस्तुएँ हैं जो हमारे दैनिक जीवन में प्रयुक्त होती हैं और उनमें कोई न कोई ऐसी चीज़ मिली रहती है, जो मांसाहार की श्रेणि में आती है। पुस्तक में ऐसी 50 वस्तुओं की सूची दी गई है।

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2012- सम्पादक- श्री बाबूलाल जैन, 'उज्ज्वल', ***प्रकाशक***- गजेन्द्र संदेश कार्यालय, 105, तिरुपति अपार्टमेण्ट, आकुर्ली रोड़ नं.1, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101, फोनः 022-22871278

श्री बाबूलाल जैन उज्ज्वल द्वारा प्रतिवर्ष समग्र जैन चातुर्मास सूची प्रकाशित की जाती है। वर्ष 2012 की सूची में स्थानकवासी, तेरापंथी, मूर्तिपूजक एवं दिगम्बर सम्प्रदायों के आचार्यों, गच्छों आदि के सन् 2012 के चातुर्मास की सम्पूर्ण सूची से विदित होता है कि इस समय 14710 जैन साधु-साध्वी विद्यमान है। इनमें प्रतिवर्ष निरन्तर वृद्धि हो रही है। सन् 1983 में यह संख्या मात्र 9089 थी। यदि एक हजार की संख्या पर एक साधु या साध्वी बने तो जैनों की संख्या 1 करोड़ 47 लाख पहुँचती है।

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (30)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह तीसरी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 नवम्बर 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.116 से 175 तक से प्रश्न)

उत्तर संख्या में दें:-

1. महाराज चामुण्ड की सेना में ..... हाथी, अगणित पदाति सुभट थे।
2. आचार्य सर्वदेवसूरि ..... राज्य की राजधानी कोरयण्ट नगर में आये।
3. आचार्य माघनन्दि को ..... सशक्त किशोर, शिष्यों के रूप में मिले।
4. वह प्रमाण नियमसार की गाथा संख्या..... है, यह आचार्य कुन्दकुन्द ने लिखा है।
5. चारुकीर्ति महाराजा बल्लाल के प्राणों की रक्षा करने वाले..... वें पट्टधर हुए।

जोड़ी मिलाइए:-

	अ	ब
6.	निसिहिया	कोल्हापुर
7.	कुलभूषण	तुलनात्मक

8. श्रीनन्दी वसदियां
9. आलोचनात्मक देशभूषण
10. क्षुल्लकपुर नन्दिपण्डित

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

11. मण्डलाचार्य अर्थात् ..... प्रभावशाली आचार्य थे।
12. शिक्षण संस्थानों में से जैन ... के उच्चकोटि के शिक्षा केन्द्र बन गये।
13. आचार्य देव! मुझे भी आप ..... की दीक्षा दे दीजिये।
14. लिंग-पाहुड़ के सम्बन्ध में मान्यता है कि यह आचार्य ... की रचना है।
15. आचार्य माघनन्दि .... को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया।

जो शब्द गलत है उसे अण्डर लाइन करिये और सही उत्तर लिखिए:-

16. तत्काल ज्वालामुखी बिल द्वारा उत्पन्न अपार आनन्द नष्ट हो गया।
17. साधारण कार्यों के बल पर भट्टारकों ने राजाओं को भी आकर्षित किया।
18. कुन्दकुन्द ने अपने गुरु और संघ के विरुद्ध चलकर शंखनाद फूंका।
19. किशोर-किशोरियों, तरुण-तरुणियों को विवाह मायाजाल में जोड़ा जाता है।
20. कोल्हापुर में पार्श्वनाथ नामक जैन मन्दिर का निर्वाण करवाया।
21. आचार्य हरिभद्र ने इस आगम का प्रचार करने का दृढ़ संकल्प किया।
22. पादलेप-औषधि के प्रभाव से आचार्य पूज्यपाद युगमन्दिर स्वामी के दर्शन किये।
23. संघ जब सजग, सशक्त रहा तब तक शैथिल्य को जगह देने अवकाश नहीं रहा।
24. एक गद्दी फलोदी में स्थापित हुई और दुसरी चित्तौड़ में।
25. अपना सुख कौन चाहता, मुक्ति किसे प्रिय नहीं?

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (28) का परिणाम

जिनवाणी जुलाई, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 187 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- जया भण्डारी-ब्यावर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- धर्मचन्द धम्माणी-अहमदाबाद (गुजरात)

तृतीय पुरस्कार- कमला सुराणा-जोधपुर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. रेखा कोठारी-अजमेर (राज.)

2. प्रमिला मेहता-जयपुर (राज.)

3. चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर (राज.)

4. विजयालक्ष्मी मोहनोत-जयपुर (राज.)

5. सुनीता नवलखा-कोटा (राज.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता– Smt.Manju Palrecha-Jodhpur, Chandanmal palrecha-Jodhpur, Smt.Pramila Kailash Kothari-Jodhpur, Sudha Bhansali-Jodhpur, Hem Raj Surana-Jaipur, Paras Jain-Bellary, Dhram Chandra Dhammani-Ahmedabad, Aruna Jain-Hoshiarpur, Smt.Kamal Choradia-Jaipur, Kanak jain-Delhi, Kamala Surana-Jodhpur, Pramila Mehta-Jaipur, Rikhab Raj Bohra-Delhi, R.R.Kothari-Dhulia, Manjula Vasant Kumarji Jain-Mumbai, Anu Jain-Hoshiarpur, R.Chandra Bothra-Chennai, Chandra Lata Mehta-Jaipur, Hans Raj Mohnot-Jaipur, Shanta Chamanji Pitaliya-Amravati, Rekha Kothri-Ajmer, Laxmi Chand Chajjed-Samdari, Gyan Chand Kothari-Ajmer, Neha Rohit Oswal-Belgaum, Pawan B.Jain-Belgaum, Heera Bai Rameshji Karnawer-Ahmed Nagar (M.H), Vimala Bai Misrilalji Khivsara-Dhule, Vijaya Laxmi-Ajmer, Hema Kothari-Jaipur, Kapil Kothari-Jaipur, Sushila Tater-Bhilwara, Padam Chand Munot-Jaipur, Smt.Anjana Karkani-Dewas, Navratan Mal jain-Jodhpur, Babulal Katariya-Panjagutta (A.P), Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Manju Dilip Jain-Mumbai, Kiran Jain-Hoshiarpur, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Saroj Nahar-Delhi, Renu Virendra Jain-Mumbai, Bhopal Chand Sethi-Jodhpur, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Kanchan Lodha-Nasik, Nirmala Kothari-Jaipur, Pramila B.Pokhrana-Dhulia, Lata S.Anchaliya-Dhulia, Smt.Neelam-Jaipur, Saroj Parasmalji Jain-Dhulia, Ghewarchand Chajjed-Bellary, Vijaya Laxmi Mohnot-Jaipur, Gajraj Kanak Kumar Jain-Ajmer, Smt.Sunita Navlakha-kota, Devendra Nath Modi-Jodhpur, Smt.kamala Modi-Jodhpur, Smt.Kusum singhvi-Jodhpur, Smt. Mohan Lodha-Pushkar, Johari Mal Chajer-Jodhpur, Leena Mahendra jain-Chiplun, Shilpa Surana-Ajmer, Anurag Surana-Ajmer, Sushila Begani-Bikaner, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Usha Lunawat-Ajmer, Chandanmal palrecha-Jodhpur, Nirmala H.Surana-Bikaner, Chanchal Gollechha-Jaipur, Smt.Manju Palrecha-Jodhpur, Nen chand Bafna-Jodhpur, Jaya Bhandari-Beawar, V.K.Bagmar-Hyderabad, Harshit Jain-Sawai Madhopur, Vijaya Laxmi-Ajmer, Meera Jain Lohiya-Sawai Madhopur, Anurag Surana-Ajmer, Gyan Chand Kothari-Ajmer, Buddhi Prakash jain.

24.5 एवं 24 अंक प्राप्तकर्ता– Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Ladji Mehta-Bhilwara, Priti Gugaliya-Bhilwara, Smt.Madhuji Pipada-Bhilwara, Manila Palrecha-Jaipur, Madhubala pramodkumarji Bora-Ichalkaranji, Vimal Ranulal Kochar-Nasik, Ranulal M.Kochar-Nasik, Suresh kumar Saand-Pali, Dharmesh Punamia-Pali Marwar, Anil Kumar Jain-Kota, Nen chand Bafna-Jodhpur, Smita Nilesh Muthiyan-Ichalkaranji, Vinod Jain-Shivmoga, Rupa Devi jain-Gotan (Raj), Chetana B.Bothra-Mumbai, Vandana Punamia-pali, Prabha Gulecha-Bangalore, Bhavika M.shah-Belgaum, Sunita Oswal-Jaipur, R.T.Jain-julgaon, Prem Jain-Alwer, Sugan Chand Chajjed-Jodhpur, Prem Lata Lodha-Jaipur, Vijaya Devi R. Bagmar-Gajendragad, Balwant Singh Choradia-Jhalawar (Raj), Rajendra Kumar Tejmalji Chajed-Bhusawal (M.H), Rajani Bhandari-Gurgaon, Reema Jain-Ludhiana, Rohit Oswal-Jaipur, Meenu Jain (Mehta)-Jaipur, Dal Chand Jain-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, Padam Chand Gandhi-Jodhpur, Vikas Bamb-Mumbai, Narendra Gopichand Bamb-Mumbai, Hema Kishore Bagmar-Secundrabad, Shanta Mahendra Bafna-Nasik, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Kusum Pareshji Ponamia-Ichalkaranji, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Subhash Mohanlalji Dhadiwal-Bhayandar, Indu Kamaleshji Jain-Malad, Anita Abar-hennai, Shobha R.Jain-julgaon, Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Smt.Pista Gulecha-Jaipur, Ratan Karnawat-

Jaipur, Sunita Singhvi-Chennai, Meena Chuoradiya-Chennai, Kusum Jain-Chennai, Deepmala Singhvi-Pali, Suresh Chand Jain-Alwer, Sarita Manoj Babel-Ichalkaranji, Smt.Kamalesh Gelda-Ajmer, Paras Mal Daulat Rajji Baghmar-Barmer (Raj), Dilkhushraj Jain-Vadodara, Shabnam Khan-Jaipur, V.Vasanta Bai-Hospet (K'tka), Sudha Daga-Bikaner, Bhagwan Raj Singhvi-Pali, Nirmala H.Surana-Bikaner, Smt.Shiromani Jain-Shajapur (M.P), Munnalal Bhandari-Jodhpur, Babulal Jain-Bharatpur.

23.5 या उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Kamala Singhvi-Jaipur, Neetu jain-Bhilwara, Lalita Ajit Bafna-Nagpur, Hemalata Jain-Beawar, Jagadish Prasad Jain-kota, Milap P.Lunawat-Ahmedabad, Shah Javer .N.-Belgaum, Neelam Jain-Gurgaon, Sunita Dusaaj-Jaipur, Meena Bai Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Jaya Bhandari-Beawar, Pramila Vinod Kumar Bohra-Pali, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Kiran Kothari-Jaipur, Renumal jain-Jodhpur, Khimji R.Shah-Mumbai, Usha Bauinji Baradia-Dhule, Sangeeta Baid-Chennai, Vimla.N.Mehta-Jodhpur, Smt.Vidya Singhvi-Badnawar, Sushila Bhandari-Bangalore, Babulal Jain-Jaipur, Sunita Dosi-Beawar, Nilima Yogeshji Chopra-Ichalkaranji, Shobha Nandalalji Gugale-Ichalkaranji, Priyanka Mukesh Chopra-Ichalkaranji, Shashikala P.Lunawat-Nasik, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Jeetesh Kumar-Barmer (Raj), Smt.Harsha Jain-Pali, Upma Chwodhary-Ajmer, Prasan Kothari-Jodhpur, Natmal kothari-Balod, Rajkumar Banthiya-Pali, Susheela E.Ranka-julgaon, Suraj Sha Kankariya-julgaon, Smt.Sabar Jain-Kankroli, Meena Vijay Bora-Mumbai, Shakuntala Bai Khushl Chandji-julgaon, Gunmala Jain-Chithorgarh, Sunanda Subhashchandji Jain-Dhulia, Anita Atulji Munot-Ichalkaranji, Chandrakala Dilipji Ranka-julgaon, Smt.Lad Devi Hirawat-Jaipur, Ugama Devi Dugar-Bangalore, Pramila Mehta-Ajmer, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Prasann Gang-Mumbai, Leela Bai Prakashchandji Munot-Ichalkaranji, Lalita Ganeshchandji Surana-Solapur, Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia, Subash Chand Nahar-Secundrabad, Uagam Dosi-Secundrabad, Neetu Gulecha-Secundrabad.

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (29) का परिणाम

जिनवाणी अगस्त, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 160 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- कन्हैयालाल जैन-भीलवाड़ा (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- कल्पना धाकड़-गुड़गांव (हरियाणा)

तृतीय पुरस्कार- नूतन अजीत जी भण्डारी-इचलकरंजी (महा.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. सुवर्णा नितीन जी बोरा-इचलकरंजी (महा.)
2. कविता जैन-मुम्बई (महा.)
3. मीनू जैन (मेहता)-जयपुर (राज.)
4. कुसुम जैन-चेन्नई (तमिलनाडू)
5. आर.आर. कोठारी-धुलिया (महा.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Kusum Pareshji Ponamia-Ichalkaranji, Anil Kumar Jain-Kota, Shilpa Surana-Ajmer, Hema Kothari-Jaipur, Jugan Chand Chajjed-jodhpur, Rajkumari Lodha-Jaipur, Nathmal Kothari-Balod, Shakuntala Bai Khushalchandji-Jalgaon, Manjula Vasant Kumar Jain-Mumbai, Reena Kothari-Balod, Pramila Mehta-Ajmer, Rekha Kothari-

Ajmer, Shanta Chamanji Pitaliya-Amravati, Vidhya Singhvi-Badnawer, Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia, Ratan Chand Mehta-jodhpur, Shantaji Bafna-Nasik, R.R.Kothari-Dhulia, Kanchan Lodha-Nasik, Pramila Mehta-Jaipur, Rajkumar Balia-Pali, Sunita Navlakha-Kota, Neelam Chipen-Jaipur, Pavan B.Jain-Belgaum, Kamala Singhvi-Jaipur, Kavita Jain-Mumbai, Hema Kishore Bagmar-Secundrabad, Bhagwanraj Singhvi-Pali, Padam Chand Jain-Bharatpur, Rajkumarji Jain-Delhi, Madanlal Sancheti-Hyderabad, Prabha Gulecha-Bangalore, Sujata Hirawat-Mumbai, Prakash Bai Premchandji-Bhandara, Indu Kamaleshji Jain-Mumbai, Leela Bai Prakashchandji Monot-Ichalkaranji, Meena Bai Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Suresh Chand Jain-Alwer, Smita Rajeshji Runwal-Bijapur, Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Neelam Dineshji Munot-Pune, Madhuji Pipada-Bhilwara, Priyanka Mukesh Chopral-Ichalkaranji, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Rohit Oswal-Jaipur, Kusum Singhvi-jodhpur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Sangeetha Baid-Chennai, Balwant Singh Choradia-Jhalawar, Laad Mehta-Bhilwara, Prem Lata Lodha-Jaipur, Kusum Jain-Chennai, Shanu Jain-Sawai Madhopur, Sonal Rajesh Alijaad-Nasik, Rikhab Raj Bohra-Delhi, Babu Lal Jain-Jaipur, Meenu Jain (Mehta)-Jaipur, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Suvarna Nitin Bora-Ichalkaranji, Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Shobha N.Gugale-Ichalkaranji, Nilima Yogesh Chopra-Ichalkaranji, Nirmala vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Sarita Manoj Babel-Ichalkaranji, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Rajendra Tejmal Chajjed-Bhusawal, Lad Devi Hirawat-Jaipur, Manju Dilip Jain-Mumbai, Sunita Oswal-Jaipur, Saroj Nahar-Delhi, Ratan Kamawet-Jaipur, Priti Gugalia-Bhilwara, Dal Chand Jain-Jaipur, Chetana B.Bothra-Mumbai, Pramila Vinod Kumar Bohra-Pali, DilKushraj Iain-Vadodara, Hemalata Jain-Beawer, K.Kothari-Jaipur, Sudha Daga-Bikaner, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Sunita Doshi-Beawer, Manila Parakh-Jaipur, Vandana D/o.Anil Khicha-Surat, Renu Mal Jain-jodhpur, Gunmala Jain-Chittorgarh, Chandrakala Mehta-Bangalore, Aruna Jain-Hoshiarpur, Hem Raj Surana-Jaipur, Chandra Munot-Mumbai, Sudha Bansali-jodhpur, Prem Jain-Alwer, Ghewar Chand Chhajed-Bellary, Kamala Surana-jodhpur, Deepmala Singhvi-Pali, Vandana Punamia-Pali, Suresh Kumar Sand-Pali, Dharmesh Punamia-Pali, Premlata Saand-Pali, Sunita Singhvi-Chennai, Vasantha Bai-Hospet, Milap .P. Lunawat-Ahmedabad, Maya Alijar-Secundrabad, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Ugama Dosi-Secundrabad, Neelam Jain-Gurgaon, Susheela I.Ranka-Jalgaon, Usha Praveenji Baradia-Dhulia, Prasan Gang-Mumbai, Chandrakala Dilipji Ranka-Jalgaon, Pushpa - Hastimal Golecha-Beawer, Pramila Kailash kothari-jodhpur, Babu Lal Jain-Bharatpur, Neetu Gulecha-Secundrabad, Shobha Nahar-Secundrabad, Pushpa Jain-Jaipur, Hansa Jaroli-Udaipur, Navrathan Mal Ostwal-jodhpur, Kanak Badmer-Delhi, Meena Vijay Bora-Mumbai, Prasan kothari-jodhpur, Paras Jain-Bellary, Vijaya Devi Rikabchand Bagmar-Gajendragarh, Reema Jain-Ludhiana, Lalitha Gaeliya-Hyderabad, Pushpa devi Bardia-Jaipur, Seema Dhing-Chennai, Jitesh Kumar-Barmer, Dr.Padam Chand Munot-Jaipur, Prasan kothri-Jaipur, Upma Choudhary-Ajmer, Harsha Jain-pali, Dharam Chandra Dhammani-Ahmedabad, Nirmala Lunawat-Poona, Javer N.Shah-Belgaum, Kamalesh Gelda-Ajmer, Sugan Chand chjjed-jodhpur, Anjana Rajendre Katkani-Dewas, Mohan Bai Prakashmal Lodha-Ajmer, Bhopal Chand Sethiya-jodhpur.

24.5 या उससे कम अंक प्राप्तकर्ता – Jyoti Bhansal-Bangalore, Jagadish Prasad Jain-Kota, Vijaya Laxmi Monot-Ajmer, Sushi Tater-Bhilwara, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Suvarna Nitin Bora-Ichalkaranji, R.T.Jain-Bhusawal, Khimji R.Shah-Mumbai, Sushila Begani-Bikaner, Pooja A.Jain-Chennai, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Shiromani Jain-Shajapur, Ugama Devi Dugar-Bangalore, Leean M.jain-Chiplun, Vinod Jain-Shimoga, Bhavika M. Shah-Belgaum, Meenakshi Lodha-Gurgaon, Kamala Modi-jodhpur, Devendra Nath Modi-jodhpur, Prem Jain-Sawai Madhopur.

कविता

संभावना

डॉ. दिलीप धींग

अम्बर से अंगारे बरसे,
किसी ने उछाले होंगे।
धूल में खिले हैं फूल,
किसी ने बीज डाले होंगे।

आतंक मचा है शान्त-सागर में,
किसी ने जाल डाले होंगे।
भेड़-बकरियाँ निर्भय हैं वन में,
आसपास कहीं ग्वाले होंगे।

आती भयावह आवाजें हवा में,
कहीं पिशाच कराल-काले होंगे।
घंटियाँ बजीं, हुआ शंखनाद,
निकट ही देवाले-शिवाले होंगे।

विषाक्त बना समूचा वातावरण,
किसी ने साँप पाले होंगे।
स्थिति तनावपूर्ण, पर है नियंत्रण में,
कोई इसे अवश्य संभाले होंगे।

-उमराव सदन, 53, डोरेन्नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

आत्मा ही सामायिक

डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन

1. भगवती सूत्र में वर्णन आया है कि 'आया सामाइए' अर्थात् आत्मा ही सामायिक है। जब हम सामायिक करते हैं, तब अपनी आत्मा में स्थिर रहते हैं। सामायिक में हम अहिंसा धर्म की साधना करते हैं। सामायिक में हम छः काया के जीवों की यतना कर रहे होते हैं।
2. सामायिक में अभयदान की साधना होती है। अनन्त जीवों की रक्षा होती रहती है। अनुकम्पा भाव की साधना होती है। हम अपनी आत्मा से ही अपनी आत्मा को जान सकते हैं। यह तभी संभव है जब हम समस्त आत्माओं के प्रति मैत्री भाव रखते हैं।

-छोटी कसरावद (म.प्र.)

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 420 स्वाध्यायियों द्वारा 163 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 65 वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1200 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावाहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल.एल.बी., पी-एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व दिनाँक 14 से 21 अगस्त 2012 तक मनाए गए। पर्वाराधन में उत्तरप्रदेश पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़-मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े, दूर व निकट के 157 क्षेत्रों में लगभग 400 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की।

सभी स्थानों पर सामायिक, दया-संवर, उपवास-पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ बहुतायत संख्या में सम्पन्न हुई। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञानवृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई।

विदेश

01	बैंकाक	-	श्री पी. शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई
			श्री सुमतिचन्द जी मेहता-पीपाड़ सिटी
02	हांगकांग	-	डॉ. प्रियदर्शना जी जैन-चेन्नई

महाराष्ट्र क्षेत्र

03	निफाड़	-	श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव
			श्री अजय जी राखेचा-जलगांव
			सुश्री पूजा जी तालेरा-फत्तेपुर

			सुश्री शीतल जी तालेरा-फत्तेपुर
04	मुम्बई	-	श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा
			श्रीमती लीला जी सालेचा-जलगांव
			श्री दिलीप जी जैन-जयपुर
			श्रीमती विमला जी सिंघी-धुलिया
05	पहुर	-	श्री कस्तुरचन्द जी बाफना-जलगांव
			डॉ. वर्द्धमान जी लोढ़ा-मालेगांव
06	सातारा	-	श्री कंवरलाल जी संघवी-जलगांव
			श्री अनिल जी कोठारी-जलगांव
			श्री योगेश जी जैन-जयपुर
07	पश्चिम नागपुर	-	श्री पारस जी बांठिया-घोड़नदी
			सौ. अनिता जी बांठिया-घोड़नदी
			सुश्री प्रियंका जी छाजेड़-बांबरूड
08	शेन्दुर्णी	-	श्री मनोज जी संचेती-जलगांव
			सुश्री सुजाता जी तालेरा-फत्तेपुर
			सुश्री पूनम जी संचेती-जलगांव
09	शिरूड	-	श्री हीरालाल जी मण्डलेचा-जलगांव
			सुश्री राखी जी कर्णावट-सौंदाणा
			सुश्री रीना जी कर्णावट-सौंदाणा
10	चिखली	-	श्री नेमीचन्द जी देसर्डा-जलगांव
			श्री चैनकरण जी कटारिया-जलगांव
11	महाड	-	श्री मुकेश जी बुरड-शिरपुर
			श्री राकेश जी संकलेचा-शिरपुर
12	बुरहानपुर	-	श्री विजय जी ओस्तवाल-धुलिया
			श्री पुष्पक जी ओस्तवाल-धुलिया
			सौ. पारूल जी ओस्तवाल-धुलिया
13	पांढरकवाडा	-	श्री सुभाष जी कोठारी-माजलगांव
			श्री चन्द्रकान्त जी हीरण-कजगांव
			श्री विनय जी लुंकड़-कजगांव
14	नागद	-	श्री मुकेश जी चोरडिया-शिरपुर
			डॉ. निलेश जी चोरडिया-पारोला
			श्री कल्याणमल जी धाडीवाल-कजगांव
15	चारूवां	-	श्री महावीर जी धोका-बीड़
			सौ. मंगला जी ललवाणी-शिरूड

			सौ. मनीषा जी भंडारी-शिरूड
16	पारसिवनी	-	श्री सुभाष जी सुराणा-वाशिम
			सुश्री विनया जी छाजेड़-बांबरूड
			सुश्री आयुषी जी कांकरिया-जलगांव
17	चांदुर रेलवे	-	श्री रितेश जी सुराणा-जलगांव
			श्री नरेश जी हुण्डीवाल-जलगांव
18	देऊर बुद्रक	-	श्री महावीर जी गोलेच्छा-वाकोद
			श्री खुशाल जी संकलेचा-पूना
19	विदिशा	-	श्री अलंकार जी मुणोत-कटंगी
			श्री सोनू जी जैन-जयपुर
20	खलणा	-	श्री अभिषेक जी नाहर-बैतुल
			श्री विमल जी पोरवाल-इन्दौर
			श्री वितराग जी नाहर-इन्दौर
21	शेलवड़	-	श्री दिलरूपचन्द जी भंडारी-जोधपुर
			श्रीमती चंचल जी भंडारी-जोधपुर
22	चिंचाला	-	श्री विकास जी जैन-जयपुर
			श्री चेतन जी दर्डा-चिंचाला
23	बोरकुण्ड	-	श्री गजेन्द्र जी जैन-जयपुर
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
24	शोरापुर	-	श्री विलास जी कोचर-फत्तेपुर
			श्री धर्मेन्द्र जी मुणोत-अमरावती
25	कजगांव	-	सौ. ताराबाई जी डाकलिया-जलगांव
			श्रीमती गीताबाई जी पगारिया-जलगांव
			सुश्री मनीषा जी कोचर-फत्तेपुर
26	पारोला	-	श्रीमती रतनदेवी जी नाहर-बेगूं
			श्री धीरज जी जैन-जयपुर
			श्री हेमन्त जी जैन-जयपुर
27	बेटावद	-	सौ. विमला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी नवलखा-जलगांव
			श्रीमती लीला जी आंचलिया-जलगांव
28	वाघली	-	सौ. शकुन्तला जी कटारिया-जलगांव
			सौ. निर्मला जी डोसी-जलगांव
			सौ. उषा जी कटारिया-जलगांव

29	मुक्ताईनगर	–	सौ. विजया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. छाया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी सांखला-जलगांव
30	फत्तेपुर	–	सौ. रसिला जी बरडिया-जलगांव
			सौ. विमला जी चोरडिया-जलगांव
			सौ. लता जी बोथरा-जलगांव
31	डोम्बीवली	–	सौ. अनिता जी लुंकड-जलगांव
			सौ. कुसुम जी लुंकड़-जलगांव
			सौ. सुनीता जी बरडिया-जलगांव
32	जायखेड़ा	–	श्रीमती कांता जी लुंकड़-जलगांव
			सौ. कांता जी भंसाली-जलगांव
			सौ. सुनन्दा जी रांका-जलगांव
33	तोंडापुर	–	सौ. कंचन जी चौपड़ा-जलगांव
			सौ. सरला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. मेघा जी संचेती-जलगांव
34	भड़गांव	–	सौ. किरणबाई जी कोठारी-बोदवड़
			सौ. रत्ना जी धोका-बोदवड़
			सौ. कांता जी जैन-जलगांव
35	सौंदाणा	–	सौ. पुष्पा जी बनवट-जलगांव
			सौ. कंचन जी भंसाली-जलगांव
36	विटनेर	–	सौ. निर्मला जी छोरिया-जलगांव
			श्रीमती लीला जी तोडरवाल-जलगांव
			श्रीमती पारसबाई जी बोरा-जलगांव
37	भराड़ी	–	श्रीमती उषा जी कोठारी-जलगांव
			सौ. मंगला जी राखेचा-जलगांव
			सुश्री शीतल जी छाजेड़-बांबरूड
38	दुसरबीड़	–	सौ. ललिता जी कटारिया-जलगांव
			सौ. तारा जी जैन-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी कांकरिया-जलगांव
39	कासमपुरा	–	श्रीमती सरला जी मेहर-जलगांव
			सौ. सुशीला जी ललवाणी-जलगांव
			सुश्री खुशबू जी संचेती-जलगांव
40	चिपलुण	–	सौ. हेमलता जी सांखला-मुम्बई
			श्रीमती प्रसन्ना जी गांग-मुम्बई

41	मांडल	-	सौ. सुशीला जी समदड़िया-जलगांव
			सौ. तारा जी खिंवसरा-सिन्नर
			श्री शुभम जी खिंवसरा-सिन्नर
42	वरखेड़ी	-	सौ. चन्द्रकला जी कांकरिया-जलगांव
			श्रीमती दर्शना जी अजमेरा-जलगांव
			सुश्री मोना जी लुंकड़-जलगांव
43	फागणा	-	सौ. सरला जी बंब-भड़गांव
			सौ. सरला जी वैदमुथा-नागद
			सुश्री पायल जी बंब-भड़गांव
44	मुकटी	-	सौ. शोभा जी लुणावत-भड़गांव
			सुश्री प्रियंका जी गादिया-भुसावल
			सुश्री नूतन जी कोटेचा-देवलगांव मही
45	वाकोद	-	सौ. माया जी श्रीश्रीमाल-भड़गांव
			सौ. मंजुला जी लुणावत-भड़गांव
			सौ. मंगला जी पारख-कासारे
46	लोहारा	-	श्रीमती उषा जी चोरडिया-भड़गांव
			सुश्री योगिता जी बुरड-धुलिया
			सुश्री प्रतिमा जी वैदमुथा-वाकड़ी
47	धरणगांव	-	सौ. सुरेखा जी चोरडिया-पाचोरा
			सौ. शोभा जी पगारिया-जलगांव
48	वाकड़ी	-	सौ. सरोज जी बाफना-जलगांव
			सौ. देवबाला जी जैन-ठाणे
			सौ. सुशीला जी धाडीवाल-जलगांव
49	मांगलादेवी	-	सौ. बसन्ता जी संकलेचा-नरडाणा
			सुश्री रिना जी सुराणा-लोहारा
			सुश्री भारती जी छाजेड़-मुकटी
50	रालेगांव	-	श्रीमती कमला जी पगारिया-धरणगांव
			सुश्री स्नेहा जी छाजेड़-बांबरूड
			सुश्री आरती जी छाजेड़-बांबरूड
51	कासारे	-	श्रीमती लीला जी बागरेचा-मुक्ताईनगर
			सुश्री पूजा जी भंडारी-शिरूड
			सुश्री स्नेहा जी बरडिया-जामनेर
52	नशिराबाद	-	श्रीमती निर्मला जी दुधेडिया-जलगांव
			सौ. भारती जी चोरडिया-जलगांब

			सुश्री राखी जी संकलेचा-नरडाणा
53	हीरापुर	-	सौ. आशा जी कोठारी-जामनेर
			सुश्री पूनम जी पोरवाल-जामनेर
			सुश्री प्रियंका जी संचेती-हीरापुर
54	पलासखेड़ा	-	सौ. कंचनबाई जी सांड-जलगांव
			श्रीमती संतोषबाई जी सिसोदिया-चिखली
55	गंगाखेड़	-	श्रीमती मंजू जी जैन-उमरी
56	लासुर स्टेशन	-	श्री सचिन जी जैन-जयपुर (प्रतिक्रमण सेवा)

दक्षिण क्षेत्र

57	चिन्तादरीपेठ	-	श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर
			श्री धर्मचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री सुनील जी जैन-हैदराबाद
58	कोयम्बतुर	-	श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर
	(सांईबाबा कॉलानी)		श्री तरूण जी बोहरा-चेन्नई
			श्रीमती सुनीता जी सुराणा-चेन्नई
			विरक्ता सुश्री खुशबू जी जैन-चेन्नई
59	आरकाट	-	श्रीमती सुशीला जी गोलेच्छा-जोधपुर
			श्री विनीत जी जैन-चेन्नई
			सुश्री शिल्पा जी गांधी-जोधपुर
			सुश्री प्रियंका जी गांधी-जोधपुर
60	श्रीकालाहस्ती	-	श्री लल्लुलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री अमन जी जैन-सवाईमाधोपुर
61	चेटपेट	-	श्री मुन्नालाल जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री जगदीशमल जी कुम्भट-जोधपुर
62	होसुर	-	श्री सौभागमल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री दिनेश जी जैन-सवाईमाधोपुर
63	कदम्बातुर	-	श्रीमती कृष्णा जी भंडारी-जोधपुर
			श्रीमती पुष्पा जी चतुर-चेन्नई
64	कलाकुरची	-	श्री धर्मेन्द्र जी जैन-चेन्नई
			श्री मनीष जी जैन-चेन्नई
65	मेटुपालयम्	-	श्री आशीष जी सुराणा-चेन्नई
			विरक्ता सुश्री शिल्पा जी सुराणा-चेन्नई

			सुश्री मैत्री जी लोढ़ा-चेन्नई
66	पल्लीपट्ट	-	श्री विनयचन्द जी जैन-आलनपुर
			श्री महावीर जी तातेड़-चेन्नई
67	पटाभिराम	-	श्रीमती कंचन जी रांका-जोधपुर
			श्रीमती शोभा जी कवाड़-चेन्नई
			श्रीमती राजकंवर जी बोहरा-चेन्नई
68	पेरंगलतुर	-	श्री लीलम जी बाघमार-चेन्नई
			श्री महावीर जी बाघमार-चेन्नई
69	पॉन्डिचेरी	-	श्री रमेश जी जांगड़ा-चेन्नई
			श्री निर्मल जी बोहरा-चेन्नई
			श्री भंवरलाल जी लोढ़ा-चेन्नई
70	पुन्नमल्लै	-	श्री सागरमल जी सर्राफ-उदयपुर
			सुश्री रिंकी जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री समता जी जैन-सवाईमाधोपुर
71	पुतुर	-	श्रीमती उषा जी बोहरा-जोधपुर
			श्रीमती सरिता जी गांग-जोधपुर
			श्रीमती शांतिबाई जी मेहता-जोधपुर
72	सेलम	-	श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई
			श्री राकेश जी समदड़िया-चिखली
			विरक्ता सुश्री दिव्या जी डागा-चेन्नई
			श्री आदर्श जी जैन-चेन्नई
73	सुलुरपेटा	-	श्री दिनेश जी नाहटा-नगरी
			श्री अनिल जी ढेलड़िया-नगरी
74	तिरूकोइलुर	-	श्री लुणकरण जी सेठिया-चेन्नई
			श्री राकेश जी जैन-जयपुर
			श्री अशोक जी बाफना-चेन्नई
75	उल्लुन्दरपेठ	-	श्री जितेश जी जैन-जयपुर
			श्री रिखबचन्द जी बाघमार-चेन्नई
76	चेंगलपेठ	-	श्री राजेन्द्र जी पटवा-जयपुर
			श्री विरेन्द्र जी कांकरिया-चेन्नई
			श्री रविन्द्र जी बोथरा-चेन्नई
77	चेटपेट-चेन्नई	-	श्रीमती कनकमाला जी कुम्भट-चेन्नई
78	कालाडीपेठ	-	श्रीमती कंचन जी मुथा-भोपालगढ़
			सुश्री पूर्णिमा जी हुण्डीवाल-चेन्नई

			सुश्री प्रिति जी नाहर-बेगूं
79	नुगम्बाकम	-	श्री अतुल जी मुणोत-चेन्नई
			श्री कुलदीप जी सुराणा-चेन्नई
			श्री मनोज जी सेठिया-चेन्नई
80	पेरम्बाकम	-	श्री शांतिलाल जी चौपड़ा-जोधपुर
			श्री मानमल जी सुराणा-चेन्नई
81	सेल्युर	-	श्रीमती मोहिनीदेवी जी कच्छवाहा-जोधपुर
			श्रीमती सज्जनकंवर जी मेहता-जोधपुर
			श्री पारसमल जी जैन-नैनवा
			श्री रामपाल जी जैन-देई
82	शेनाय नगर	-	श्री राजेन्द्र जी बाघमार-चेन्नई
83	तिरूवनामियुर	-	श्रीमती सूर्यकला जी बाघमार-चेन्नई
84	कावेरिपाक्कम	-	श्री अभयराज जी हींगड़-जयपुर
			श्री राजेश जी बोहरा-चेन्नई

मध्यप्रदेश क्षेत्र

85	जबलपुर	-	श्री जम्बूकुमार जी जैन-जयपुर
			श्री अशोक जी जैन 'हरसाना'-जयपुर
			सौ. निर्मला जी बांठिया-पाचोरा
			सुश्री भाग्यश्री जी लुंकड़-जलगांव
86	संजीत	-	श्री रमेश जी भंसाली-फत्तेपुर
			श्री विजय जी रांका-फत्तेपुर
87	बड़वानी	-	श्री राजमल जी संचेती-अमलनेर
			श्री पुखराज जी कोठारी-लासुर
88	इच्छापुर	-	सौ. छाया जी भंडारी-जलगांव
			सौ. सीमा जी पारख-जलगांव
			सुश्री चेतना जी लुंकड़-जलगांव
89	कालुखेड़ा	-	श्रीमती मोहिनीबाई जी जैन-आलनपुर
			सुश्री चित्रा जी जैन-आलनपुर
			सुश्री यशु जी जैन-आलनपुर
90	उन्हैल	-	श्री उम्मेदचन्द जी जैन-जरखोदा
			श्री शिवकुमार जी जैन-जरखोदा
91	सिद्धिकगंज मगरदा	-	श्रीमती कांतीबाई जी जैन-आलनपुर
			सुश्री ज्योति जी जैन-आलनपुर

			सुश्री हीना जी जैन-आलनपुर
92	सिवनीमालवा	-	श्रीमती सुजाता जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
			श्रीमती शीला जी जैन-कुश्तला
			सुश्री कविता जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
93	बागोद	-	श्री बाबुलाल जी जैन-बजरिया
			श्री कमलेश जी जैन-देई
94	अकोदियामण्डी	-	श्री महेन्द्रकुमार जी जैन सचिव-सवाईमाधोपुर
			श्री पियूष जी जैन-सवाईमाधोपुर
			सुश्री किरण जी जैन- अलीगढ़
95	श्योपुरकलां	-	श्री जगदीशप्रसाद जी जैन-कोटा
			श्री उत्तमचन्द जी जैन-कोटा
96	बागली	-	श्री रामप्रसाद जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
			श्री नन्दलाल जी जैन-उनियारा
97	हातोद	-	श्री हरकचन्द जी जैन-बजरिया
			श्री नीरज जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
98	पिपल्या बुजुर्ग	-	श्री हितेष कुमार जी जैन-कुश्तला
			श्री अमित जी जैन-कुश्तला
99	बेरछा मण्डी	-	श्री लविश जी जैन-जयपुर
			श्री अनुभव जी जैन-जयपुर
100	अंजड़	-	श्री अरिहन्त जी जैन-जयपुर
			श्री नमोकार जी जैन-जयपुर
			श्री अनन्त जी जैन-जयपुर
101	गरोठ	-	श्री संजय जी देशलहरा-इन्दौर
			श्री अखिलेश जी नाहर-इन्दौर
102	रायपुर	-	श्री शिखरचन्द जी छाजेड़-करही
			श्री विमल जी तातेड़-इन्दौर
103	बैतुल	-	श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा-इन्दौर
			श्री पंकज जी पोरवाल-इन्दौर
			श्रीमती पदमा जी जैन-धार
104	नयापुरा, उज्जैन-	-	श्री शालिभद्र जी चपलोद-उज्जैन
105	कसरावद	-	श्री राजेन्द्र जी जैन-कसरावद
			श्री सुशील जी संघवी-कसरावद
			श्रीमती प्रेमलता जी कवाड़-कसरावद

मेवाड़ क्षेत्र

106	मोरवन बांध	-	श्री गौतमचन्द जी जैन 'डीएसओ'-जयपुर
			श्री अशोक जी जैन-जयपुर
			श्री राजकुमार जी जैन-जयपुर
107	नवाणिया	-	श्री धर्मचन्द जी जैन 'करेला वाले'-सवाईमाधोपुर
			श्री मोहनलाल जी सर्राफ-सवाईमाधोपुर
			श्री मनोज जी जैन 'करेला वाले'-सवाईमाधोपुर
108	सुरपुर	-	श्री महावीरप्रसाद जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
			श्री ज्योतिप्रकाश जी जैन-चोरू
			श्री नरेश जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
109	सहाड़ा	-	श्री सुरेश जी हींगड़-भीलवाड़ा
			श्री इन्द्रचन्द जी कोठारी-भीलवाड़ा
			श्रीमती संगीता जी नागौरी-भीलवाड़ा
110	छोटा भटवाड़ा	-	श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन-सवाईमाधोपुर
			सुश्री प्रिया जी जैन-सवाईमाधोपुर
			सुश्री निहारिका जी जैन-सवाईमाधोपुर
111	कपासन	-	श्री राकेश जी जैन-सुमेरगंजमण्डी
			श्री पदमचन्द जी जैन 'गोटेवाले'-सवाईमाधोपुर
			श्री अंकित जी जैन-सवाईमाधोपुर
112	आदित्यपुरम शंभूपूरा	-	श्री पारसमल जी जैन-इन्द्रगढ़
			श्री महावीरप्रसाद जी जैन-कोटा
113	दरीबा माईन्स	-	श्री पदमचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री पदमचन्द जी जैन 'सूरवाल'-सवाईमाधोपुर
			श्री कनिष्क जी जैन-सवाईमाधोपुर
114	पारसोली	-	श्री अशोक जी नलवाया-मन्दसौर
			श्री भागचन्द जी जैन-गंगापुर सिटी
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
			श्री आशीष जी जैन-जयपुर
			श्री पियूष जी जैन-जयपुर
115	चान्दरस	-	श्री मानमल जी लसोड़-प्रतापगढ़
			श्री अम्बालाल जी चण्डालिया-प्रतापगढ़
116	मण्डपिया	-	श्रीमती चंचललता जी सुराणा-बेगूं
			श्रीमती कौशल्या जी भंडारी-ब्यावर

117	आजादनगर, भीलवाड़ा-		श्री पंकज जी जैन-भीलवाड़ा

गुजरात क्षेत्र

118	हालोल	-	श्री नवरतन जी डागा-जोधपुर
			श्री गोपाल जी अबानी-जोधपुर
			श्री रतन जी सुराणा-जोधपुर
119	चलथान	-	श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर
			श्री ओमप्रकाश जी जैन 'ओशो'-जयपुर
			सुश्री पायल जी चौपड़ा-गोटन
			सुश्री कोमल जी ओस्तवाल-गोटन
120	बुहारी	-	श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा-जोधपुर
			श्री निर्मल जी मुथा-पीपाड़ सिटी
			श्री अजय जी हीरावत-मुम्बई

मारवाड़ क्षेत्र

121	भोपालगढ़	-	डॉ. चंचलमल जी चोरडिया-जोधपुर
			श्रीमती रतनबाई जी चोरडिया-जोधपुर
			श्री सुनील जी चौपड़ा-जोधपुर
122	आगोलाई	-	श्री अरूण जी मेहता-जोधपुर
			श्रीमती सुनीता जी मेहता-जोधपुर
123	थांवला	-	श्रीमती अकलकंवर जी मोदी-जोधपुर
			श्रीमती प्रसन्नकंवर जी अबानी-जोधपुर
			श्रीमती ललिता जी लोढ़ा-जोधपुर
124	बाडमेर	-	श्री शांतिलाल जी गांधी-सिंगोली
			श्री संतोष जी गांधी-सिंगोली

उत्तरप्रदेश क्षेत्र

126	वाराणसी	-	श्री मानसिंह जी खारीवाल-सहाड़ा
			श्री दिलीप जी जैन-भीलवाड़ा
127	कानपुर	-	श्री चम्पालाल जी बोथरा-चेन्नई
			श्री ललित जी जैन-जयपुर
128	बलरामपुर	-	श्री पवन जी जैन-अलीगढ़
			श्री चेतन जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री पूजा जी जैन-अलीगढ़

पंजाब/हरियाणा क्षेत्र

125	नारनौल	-	श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत-जयपुर
			श्रीमती पुष्पा जी जैन-जयपुर
			श्री सौरभ जी जैन-जयपुर
			श्री गौरव जी जैन-जयपुर

अन्य क्षेत्र

129	दूदू	-	श्रीमती शांता जी मोदी-जयपुर
			श्री रितेश जी जैन-जयपुर
			श्री कविश जी जैन-जयपुर
130	चाकसू	-	श्रीमती प्रेमकंवर जी भंडारी-जोधपुर
			श्रीमती धर्मवती जी मुणोत-जयपुर
			सुश्री विनिता जी मेहता-जोधपुर
131	हैदराबाद	-	श्री प्रकाशजी कोठारी-इन्दौर
			श्रीमती उर्मिला जी कोठारी-इन्दौर

पोरवाल क्षेत्र

132	देवली	-	श्री महावीरप्रसाद जी जैन-बजरिया
			श्री रतनलाल जी लोहिया-बजरिया
133	देई	-	श्री बाबूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री धर्मचन्द जी जैन-खेरली
134	गंगापुर सिटी	-	श्री धर्मेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री प्रेमबाबू जी जैन-बजरिया
135	नसिया कॉलोनी	-	श्रीमती आशा जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्रीमती रूपारानी जी जैन-सवाईमाधोपुर
136	सुमेरगंजमण्डी	-	श्रीमती शकुन्तला जी तातेड़-बैतुल
			श्रीमती कमला जी गोठी-बैतुल
137	उनियारा	-	श्री माणकचन्द जी जैन-देई
			श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-उनियारा
138	पचाला	-	श्री रतनलाल जी जैन कुश्तला
			सुश्री श्वेता जी जैन-पचाला
139	फलोदीक्वारी	-	श्रीमती विमला जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्रीमती राजेशबाई जी जैन-सवाईमाधोपुर

140	चोरू	-	श्री श्यामसुन्दर जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री अनिल जी पोखरणा-नवाणिया
141	कुशतला	-	श्री शिवचरण जी जैन-गंगापुर सिटी (अब स्वर्गस्थ)
			श्री प्रसून जी जैन-खौह
142	चौथ का बरवाड़ा	-	श्री विरेन्द्र जी झामड़-जयपुर
			श्री आशीष जी जैन-जयपुर
			श्री विक्रम जी जैन-जयपुर
143	इन्द्रगढ़	-	श्रीमती रतनदेवी जी कर्णावट-जयपुर
			श्रीमती इन्द्रा जी पारख-जयपुर
			श्री आतिश जी जैन-जयपुर
144	दूणी	-	श्री पदमचन्द जी मुणोत-जयपुर
			श्री रूपेश जी जैन-जयपुर
			श्री विकास जी जैन-जयपुर
145	कुण्डेरा	-	श्रीमती विमला जी चौपड़ा-जोधपुर
			श्रीमती सुशीला जी गांग-जोधपुर
			सुश्री मोनाली जी जैन-जोधपुर
146	जरखोदा	-	श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन-छोटी कसरावद
			श्री विमल जी खिंवसरा-खरगौन

पल्लीवाल क्षेत्र

147	गोपालगढ-भरतपुर	-	श्री कुशलचन्द जी जैन 'गोटेवाले'-सवाईमाधोपुर
			श्री मुकेश जी जैन-सवाईमाधोपुर
			सुश्री जयमाला जी जैन-सवाइमाधोपुर
148	भरतपुर	-	श्री सौभागमल जी जैन-कुशतला
			श्री रामदयाल जी जैन 'सर्राफ'-सवाईमाधोपुर
149	करौली	-	श्री सुरेश जी जैन-खेरली
			सुश्री खुशबू जी जैन-करौली
150	बरगमा	-	श्री संजयकुमार जी जैन-नसिया गंगापुर
			श्री विनयकुमार जी जैन-बरगमा
			श्री विवेक कुमार जी जैन-बरगमा
151	हरसाना	-	श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी
			श्री शिवदयाल जी जैन-हरसाना
			श्री धीरज जी जैन-हिण्डौन सिटी
152	खौह	-	श्री हुकमचन्द जी जैन-हिण्डौन सिटी

			श्री मगनचन्द जी जैन-फाजिलाबाद
153	नदबई	-	डॉ. विमलचन्द जी जैन-हिण्डौन सिटी
			श्रीमती विमला जी जैन-खेरली
			सुश्री खुशबू जी जैन-हिण्डौन सिटी
154	पहरसर	-	श्री त्रिलोक जी जैन-गंगापुर सिटी
			श्री राजेश जी जैन-हिण्डौन सिटी
155	मलपुरा (आगरा)	-	श्री ज्ञानचन्द जी जैन-नदबई
			श्रीमती सुशीला जी जैन-नदबई
156	मण्डावर	-	श्री प्रेमचन्द जी जैन-जयपुर
			श्रीमती कांता जी जैन-जयपुर
			श्री राहुल जी जैन-जयपुर
			श्री अखिल जी जैन-जयपुर
157	लक्ष्मणगढ़	-	श्रीमती लाडदेवी जी खारेड़-जयपुर
			श्रीमती युगराज जी जी मेहता-जयपुर
			श्री अक्षय जी जैन-जयपुर
158	खेरली	-	श्री विनोद कुमार जी जैन-चेन्नई
			श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड़ सिटी
			सुश्री दीपिका जी जैन-जयपुर
159	खौह	-	श्री हुकमचन्द जी जैन-हिण्डौन सिटी
			श्री मगनचन्द जी जैन-फाजिलाबाद
160	वर्द्धमान नगर, हिण्डौन	-	श्री कृष्णमोहन जी जैन-हिण्डौन (प्रतिक्रमण सेवा)

द्वितीय पर्युषण पर्व

(दिनांक 13 से 20 सितम्बर 2012)

161	ताहराबाद	-	श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री राजेश जी भंडारी-जोधपुर
			श्री अमन जी जैन-सवाईमाधोपुर
162	कडम्बातुर	-	श्री रमेश जी जांगड़ा-चेन्नई
			श्री विनित जी जैन-चेन्नई
163	विजयवाड़ा	-	श्री पारस जी बांठिया-घोड़नदी
			सौ. अनिता जी बांठिया-घोड़नदी

नवरतन डागा
संयोजक

राजेश भण्डारी
सचिव

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 22 जुलाई 2012 को आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए। कुछ केन्द्रों पर नकल की सम्भावना होने के कारण वहाँ पर पुनः परीक्षा आयोजित की जा रही है। अतः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय कक्षाओं की वरीयता सूची बाद में प्रकाशित की जाएगी।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना-पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 10 नवम्बर 2012 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

अस्थायी वरीयता सूची

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम		केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
79055	आशा जी संघवी	जलगांव	99.75	प्रथम	
85548	बीना जी मेहता		इन्दौर	99.50	द्वितीय
65665	नीलिमा जी कोठारी		बेलापुर	99.00	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

58588	सलोनी जी जैन		जम्मू	99.75	प्रथम
64615	खुशी जी कटारिया		पीपाड़ सिटी	99.50	द्वितीय
79065	बबीता जी बाफना		जलगांव	99.25	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

63474	नीलू जी डागा		बीकानेर	99.50	प्रथम
58593	सरिता जी जैन		जम्मू	99.00	द्वितीय
61726	पिंकी जी कोठारी		रोयापुरम	98.50	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

70323	सुनीता जी सिंघवी		हिंगनघाट	99.00	प्रथम
65420	प्रकाश बाई जी कोठारी		वडपल्लनी	97.50	द्वितीय
57080	राजश्री जी कोठारी		बोदवड	96.00	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

58915	दीपिका जी जैन	अलीगढ़	99.00	प्रथम
69097	मीनाक्षी जी मेहता	मदनगंज	98.25	द्वितीय
69094	धनवन्ती जी राखेचा	ऊटी	96.50	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (नवमीं कक्षा)

63503	मंजुला जी सोलंकी	पुणे	94.50	प्रथम
57902	नितल जी नाहर	मालेगांव केम्प	94.00	द्वितीय
66253	कान्ता जी कोठारी	दिल्ली	93.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

75052	अनीता जी गोलेछा	अम्बातुर	92.00	प्रथम
81571	चैताली जी बाफना	न्यू सिड़को (नाशिक)	91.00	द्वितीय
74882	भारती जी डोसी	ब्यावर	90.50	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर (ग्यारहवीं कक्षा)

72247	मनीषा जी शाह	नागपुर	92.25	प्रथम
59854	ललिता जी नाहर	वेस्ट सेदापेठ	91.50	द्वितीय
61798	प्रीति जी नाहर	बेगूं	91.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री (बारहवीं कक्षा)

72245	अरुणा जी सिंघी	नागपुर	97.50	प्रथम
61721	नमीता जी संचेती	रोयापुरम	96.00	द्वितीय
65816	प्रेम जी संचेती	काला कुआ(अलवर)	95.50	तृतीय

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

57201, 57421, 57476, 57692, 57704, 57770, 57995, 57996, 58324, 58326, 58330, 58542, 58831, 58850, 58887, 60083, 60089, 60091, 60093, 60146, 60253, 60575, 60970, 61592, 61826, 62109, 62110, 62395, 62450, 62459, 62999, 63353, 64156, 64224, 64279, 64559, 64638, 64721, 65019, 65290, 65586, 65592, 65953, 66097, 66570, 66647, 66884, 66921, 66931, 67272, 67823, 67982, 68081, 68131, 68143, 68292, 68294, 68296, 68300, 68304, 68532, 68721, 68785, 69231, 69873, 69993, 70146, 70257, 70573, 70614, 70684, 71338, 71502, 72012, 72015, 72046, 72049, 72050, 72258, 72268, 72460, 72569, 72597, 72803, 73120, 73134, 73189, 73421, 73494, 73560, 73926, 73928, 73938, 73974, 74284, 74287, 74440, 74853, 74990, 75162, 75288, 75521, 75886, 76027, 76074, 76192, 76194, 76196, 76767, 76771, 76925, 77037, 77121, 77247, 77402, 77403, 77459, 77460, 77948, 77951, 78283, 78315, 78329, 78330, 78335, 78342, 78343, 78344, 78351, 78359, 78434, 78460, 78476, 78483, 78566, 78577, 78591, 78633, 78649, 78687, 78721, 78784, 78997, 78999, 79002, 79082, 79144, 79175, 79178, 79190, 79213, 79224, 79232, 79237, 79243, 79296, 79341, 79381, 79441, 79544, 79546, 79616, 79665, 79675, 79692, 79693, 79695, 79697, 79705, 79745, 79767, 79814, 79877, 79883, 79889, 79938, 79942, 79973, 80055, 80056, 80058, 80076, 80197, 80275, 80314, 80451, 80551, 80556, 80642, 80670, 80680, 80685, 80799, 80836, 80847, 81082, 81100, 81101, 81102, 81110, 81142, 81299, 81351, 81402, 81515, 81589, 81592, 81621, 81623, 81668, 81683, 81869, 81898, 81916, 82179, 82180, 82187, 82248, 82381, 82382, 82388, 82390, 82402, 82407, 82408, 82409, 82415, 82423, 82424, 82425, 82427, 82428, 82429, 82430, 82433, 82451, 82453, 82455, 82456, 82463, 82464, 82465, 82468, 82469, 82470, 82472, 82473, 82474, 82477, 82484, 82485, 82487, 82490, 82491, 82504, 82505, 82508, 82511, 82512, 82527, 82528, 82529, 82532, 82533, 82534, 82535, 82589, 82590, 82592, 82594, 82595, 82596, 82597, 82602, 82603, 82605, 82606, 82612, 82613, 82615, 82620, 82624, 82626, 82627, 82628, 82629, 82638, 82639, 82641, 82642, 82647, 82649, 82650, 82651, 82652, 82653, 82654, 82655, 82670, 82673, 82677, 82678, 82681, 82682, 82683, 82684, 82685, 82689, 82699, 82701, 82702, 82708, 82712, 82715, 82716, 82734, 82736, 82737, 82741, 82742,

82743, 82746, 82755, 82756, 82757, 82765, 82769, 82771, 82774, 82775, 82778, 82783, 82784, 82785, 82786, 82787, 82790, 82795, 82797, 82798, 82799, 82800, 82803, 82826, 82827, 82832, 82836, 82840, 82845, 82850, 82856, 82882, 82889, 82896, 82900, 82904, 82905, 82907, 82909, 82910, 82911, 82913, 82932, 82941, 82944, 82953, 82956, 82961, 82974, 82975, 82976, 82980, 82983, 82988, 82991, 83005, 83010, 83015, 83017, 83018, 83019, 83020, 83023, 83025, 83028, 83029, 83030, 83032, 83034, 83035, 83036, 83047, 83051, 83052, 83061, 83062, 83063, 83064, 83065, 83066, 83067, 83068, 83069, 83070, 83071, 83072, 83073, 83074, 83081, 83082, 83087, 83088, 83089, 83090, 83094, 83097, 83101, 83102, 83103, 83104, 83105, 83107, 83114, 83116, 83119, 83121, 83123, 83124, 83125, 83140, 83146, 83153, 83156, 83159, 83161, 83162, 83173, 83189, 83191, 83193, 83196, 83215, 83216, 83224, 83226, 83227, 83228, 83231, 83232, 83234, 83235, 83240, 83242, 83247, 83250, 83251, 83252, 83259, 83261, 83262, 83263, 83264, 83265, 83266, 83267, 83268, 83275, 83283, 83299, 83329, 83345, 83349, 83351, 83352, 83355, 83357, 83358, 83359, 83360, 83361, 83362, 83363, 83366, 83367, 83368, 83369, 83370, 83371, 83372, 83373, 83374, 83375, 83376, 83379, 83380, 83381, 83382, 83384, 83385, 83386, 83387, 83388, 83392, 83394, 83395, 83396, 83448, 83450, 83464, 83466, 83467, 83471, 83472, 83473, 83474, 83475, 83476, 83490, 83491, 83492, 83494, 83495, 83496, 83498, 83500, 83501, 83503, 83506, 83513, 83514, 83515, 83516, 83517, 83518, 83519, 83528, 83532, 83533, 83534, 83535, 83538, 83544, 83549, 83550, 83551, 83553, 83554, 83555, 83557, 83561, 83563, 83564, 83568, 83572, 83573, 83574, 83575, 83580, 83581, 83590, 83595, 83600, 83601, 83603, 83604, 83635, 83636, 83639, 83653, 83654, 83655, 83657, 83659, 83660, 83663, 83664, 83665, 83678, 83681, 83682, 83685, 83693, 83695, 83719, 83721, 83722, 83724, 83736, 83749, 83760, 83764, 83768, 83769, 83770, 83771, 83772, 83774, 83783, 83784, 83786, 83787, 83788, 83791, 83793, 83794, 83805, 83812, 83819, 83820, 83821, 83822, 83824, 83825, 83826, 83827, 83828, 83829, 83830, 83831, 83832, 83834, 83837, 83838, 83839, 83840, 83846, 83849, 83858, 83863, 83866, 83869, 83872, 83873, 83881, 83884, 83892, 83893, 83901, 83903, 83904, 83906, 83907, 83915, 83920, 83931, 83932, 83937, 83954, 83955, 83956, 83957, 83958, 83959, 83963, 83964, 83965, 83966, 83975, 83977, 83985, 83986, 83994, 84011, 84014, 84030, 84042, 84046, 84047, 84049, 84054, 84056, 84059, 84060, 84062, 84063, 84065, 84072, 84099, 84100, 84102, 84103, 84105, 84107, 84108, 84109, 84110, 84112, 84113, 84119, 84127, 84128, 84129, 84130, 84131, 84132, 84135, 84137, 84138, 84145, 84146, 84148, 84151, 84152, 84154, 84189, 84200, 84202, 84203, 84204, 84205, 84206, 84207, 84209, 84210, 84211, 84213, 84217, 84218, 84222, 84230, 84236, 84237, 84238, 84239, 84240, 84241, 84242, 84248, 84249, 84250, 84251, 84252, 84253, 84254, 84255, 84256, 84257, 84260, 84263, 84264, 84265, 84266, 84268, 84269, 84270, 84271, 84273, 84277, 84278, 84279, 84282, 84284, 84288, 84289, 84290, 84301, 84308, 84315, 84316, 84318, 84320, 84328, 84330, 84331, 84332, 84339, 84342, 84345, 84346, 84347, 84348, 84349, 84351, 84353, 84379, 84380, 84381, 84382, 84383, 84384, 84385, 84386, 84387, 84388, 84389, 84390, 84391, 84393, 84397, 84399, 84415, 84417, 84423, 84427, 84429, 84430, 84431, 84434, 84442, 84452, 84456, 84458, 84461, 84462, 84463, 84466, 84482, 84487, 84489, 84491, 84492, 84502, 84503, 84506, 84529, 84533, 84536, 84537, 84544, 84556, 84558, 84568, 84571, 84572, 84577, 84578, 84580, 84581, 84583, 84589, 84590, 84594, 84599, 84601, 84603, 84604, 84606, 84607, 84609, 84610, 84612, 84615, 84616, 84619, 84620, 84621, 84623, 84624, 84625, 84628, 84630, 84631, 84641, 84642, 84643, 84665, 84673, 84675, 84687, 84693, 84695, 84697, 84699, 84706, 84709, 84721, 84724, 84725, 84730, 84731, 84735, 84740, 84749, 84767, 84769, 84770, 84791, 84800, 84802, 84812, 84821, 84838, 84861, 84864, 84867, 84901, 84904, 84909, 84913, 84914, 84915, 84916, 84919, 84922, 84924, 84927, 84930, 84932, 84933, 84938, 84940, 84943, 84948, 84954, 84955, 84967, 84974, 84976, 84977, 84978, 84985, 84987, 84989, 84990, 84991, 85003, 85005, 85008, 85011, 85013, 85056, 85063, 85064, 85065, 85067, 85068, 85071, 85072, 85073, 85077, 85079, 85080, 85082, 85085, 85089, 85090, 85092, 85099, 85105, 85107, 85112, 85114, 85118, 85120, 85129, 85130, 85131, 85136, 85137, 85142, 85143, 85144, 85145, 85150, 85151, 85153, 85155, 85158, 85160, 85161, 85177, 85182, 85187, 85188, 85191, 85192, 85197, 85200, 85201, 85202, 85208, 85209, 85210, 85211, 85213, 85232, 85236, 85240, 85246, 85247, 85254, 85256, 85261, 85264, 85265, 85266, 85267, 85268, 85269, 85271, 85274, 85282, 85283, 85288, 85296, 85298, 85300, 85303, 85305, 85321, 85326, 85327, 85328, 85331, 85334, 85337, 85338, 85339, 85343, 85344, 85345, 85346, 85355, 85356, 85357, 85366, 85387, 85388, 85389, 85390, 85393, 85399, 85400, 85401, 85402, 85403, 85404, 85406, 85407, 85409, 85413, 85414, 85418, 85421, 85423, 85425, 85436, 85457, 85464, 85469, 85475, 85477, 85502, 85503, 85504, 85505, 85507, 85508, 85510, 85513, 85514, 85515, 85516, 85517, 85530, 85531, 85533, 85537, 85538, 85539, 85542, 85553, 85558, 85563, 85564, 85576, 85578, 85579, 85581, 85582, 85584, 85588, 85590, 85594, 85597, 85603, 85609, 85610, 85629, 85634, 85635, 85636, 85639, 85647, 85656, 85659, 85660, 85665, 85667, 85668, 85670, 85672, 85674, 85676, 85677, 85682, 85683, 85684, 85687, 85691, 85697, 85700, 85701, 85706, 85716, 85722, 85729, 85730, 85733, 85734, 85736, 85737, 85742, 85743, 85744, 85749, 85753, 85754, 85756, 85757, 85761, 85764, 85768, 85769, 85773, 85776, 85781, 85782, 85785, 85792, 85794, 85798, 85799, 85800, 85812, 85814, 85821, 85827, 85834, 85840, 85846, 85848, 85849, 85850, 85852, 85853, 85855, 85857, 85860, 85861, 85862, 85863, 85864, 85865, 85866, 85867, 85868, 85879, 85881, 85882, 85883, 85884, 85885, 85900, 85904, 85905, 85907, 85908, 85909, 85910, 85911, 85912, 85913, 85914, 85915, 85916, 85917, 85919, 85920, 85922, 85923, 85924, 85925, 85926, 85927, 85928, 85929, 85930, 85931, 85934, 85937, 85939, 85948, 85951, 85956, 85958, 85959, 85960, 85969, 85971, 85974, 85975, 85977, 85988, 85989, 85991, 85997, 85999, 86000, 86010, 86013, 86028, 86029, 86031, 86037, 86039, 86040, 86041, 86042, 86045, 86047, 86056, 86063, 86064, 86071, 86073, 86074, 86083, 86085, 86087, 86088, 86092, 86093, 86094, 86095, 86098, 86099, 86101, 86102, 86103, 86104, 86105, 86106, 86108, 86109, 86110, 86112, 86113, 86114, 86115, 86116, 86124, 86125, 86126, 86127, 86128, 86129, 86130, 86131, 86132, 86135, 86140, 86144, 86145,

86147, 86154, 86155, 86156, 86158, 86159, 86160, 86166, 86167, 86169, 86170, 86171, 86172, 86173, 86174, 86179, 86183, 86184, 86187, 86188, 86189, 86190, 86191, 86192, 86193, 86197, 86198, 86203, 86205, 86208, 86209, 86210, 86221, 86226, 86228, 86230, 86234, 86240, 86245, 86246, 86247, 86248, 86249, 86250, 86253, 86255, 86257, 86258, 86259, 86262, 86263, 86264, 86265, 86266, 86272, 86275, 86277, 86278, 86279, 86280, 86283, 86284, 86288, 86289, 86290, 86293, 86294, 86295, 86296, 86299, 86302, 86305, 86308, 86317, 86318, 86322, 86328 (Total Student Count:1341)

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

57041, 57066, 57106, 57271, 57393, 57395, 57473, 57658, 57792, 57957, 57961, 58085, 58276, 58282, 58551, 58877, 58894, 58944, 59006, 59494, 59707, 59737, 59922, 60134, 60636, 60638, 60880, 60953, 60968, 61220, 61396, 61622, 61762, 62044, 62120, 62437, 62689, 62705, 62990, 62991, 63047, 63067, 63705, 63965, 64560, 64594, 64695, 64719, 64729, 64753, 64790, 65025, 65072, 65092, 65112, 65136, 65507, 65729, 65744, 65814, 65825, 65839, 65975, 66096, 66124, 66257, 66267, 66366, 66388, 66522, 66680, 67122, 67465, 67648, 67820, 67822, 67851, 67912, 67984, 68267, 68355, 68423, 68435, 68437, 68754, 68763, 68818, 68925, 68943, 68962, 69089, 69090, 69128, 69254, 69492, 69699, 69776, 69777, 69826, 69916, 69917, 69939, 69940, 69990, 69991, 70055, 70084, 70153, 70154, 70207, 70215, 70246, 70311, 70371, 70615, 70643, 70717, 70953, 71110, 71152, 71508, 71542, 71670, 71671, 71672, 71674, 71675, 71753, 71771, 71856, 71875, 71929, 71948, 71959, 71992, 72052, 72086, 72213, 72270, 72271, 72300, 72301, 72383, 72497, 72530, 72562, 72570, 72572, 72598, 72793, 72801, 72823, 72869, 72937, 73039, 73046, 73088, 73137, 73192, 73204, 73243, 73276, 73484, 73644, 73680, 73792, 73807, 73818, 73822, 73888, 73890, 73893, 73911, 73912, 73914, 73976, 74001, 74017, 74172, 74174, 74176, 74202, 74260, 74272, 74286, 74293, 74296, 74300, 74301, 74455, 74478, 74668, 74688, 74847, 74851, 74852, 74866, 74880, 75013, 75014, 75070, 75089, 75165, 75308, 75674, 75678, 75684, 75690, 75728, 75741, 75901, 75904, 75913, 75920, 75939, 75953, 76003, 76022, 76251, 76268, 76271, 76284, 76344, 76397, 76492, 76511, 76614, 76646, 76648, 76649, 76654, 76683, 76684, 76832, 76846, 76877, 76900, 76911, 76929, 76950, 76971, 77003, 77038, 77043, 77073, 77082, 77096, 77151, 77159, 77188, 77233, 77239, 77285, 77346, 77362, 77373, 77374, 77404, 77511, 77517, 77566, 77573, 77610, 77620, 77652, 77654, 77664, 77714, 77786, 77836, 77837, 77838, 77895, 77898, 77915, 77919, 78058, 78166, 78168, 78266, 78301, 78304, 78314, 78345, 78346, 78347, 78352, 78358, 78366, 78368, 78370, 78374, 78376, 78380, 78382, 78383, 78384, 78392, 78394, 78395, 78409, 78410, 78411, 78412, 78413, 78415, 78433, 78436, 78461, 78479, 78497, 78501, 78502, 78507, 78523, 78526, 78528, 78533, 78555, 78573, 78574, 78604, 78605, 78624, 78631, 78646, 78647, 78655, 78656, 78660, 78662, 78664, 78665, 78692, 78696, 78716, 78722, 78726, 78765, 78766, 78786, 78856, 78867, 78888, 78891, 78921, 78988, 78989, 78991, 78992, 78995, 79003, 79005, 79006, 79056, 79084, 79094, 79099, 79111, 79119, 79130, 79131, 79138, 79142, 79158, 79174, 79181, 79195, 79203, 79230, 79242, 79245, 79276, 79307, 79309, 79311, 79317, 79318, 79319, 79320, 79344, 79345, 79347, 79350, 79401, 79425, 79442, 79445, 79448, 79449, 79450, 79451, 79453, 79457, 79464, 79466, 79467, 79469, 79494, 79496, 79503, 79504, 79518, 79520, 79523, 79552, 79557, 79562, 79575, 79579, 79586, 79600, 79611, 79625, 79640, 79643, 79650, 79651, 79653, 79658, 79659, 79689, 79691, 79694, 79696, 79713, 79715, 79717, 79718, 79724, 79785, 79874, 79886, 79916, 79926, 79940, 79941, 79953, 79974, 79980, 79982, 79990, 79998, 80046, 80135, 80178, 80182, 80186, 80190, 80191, 80218, 80230, 80247, 80251, 80276, 80280, 80336, 80337, 80348, 80378, 80473, 80477, 80481, 80483, 80484, 80485, 80488, 80492, 80513, 80518, 80523, 80532, 80561, 80562, 80570, 80572, 80575, 80581, 80601, 80604, 80605, 80606, 80607, 80608, 80609, 80614, 80615, 80616, 80617, 80619, 80621, 80627, 80630, 80631, 80638, 80639, 80640, 80646, 80648, 80649, 80655, 80656, 80657, 80658, 80659, 80660, 80661, 80662, 80666, 80669, 80671, 80672, 80674, 80679, 80682, 80683, 80686, 80689, 80691, 80693, 80698, 80714, 80718, 80728, 80785, 80787, 80789, 80795, 80804, 80812, 80813, 80824, 80829, 80830, 80842, 80850, 80852, 80856, 80857, 80858, 80860, 80862, 80863, 80864, 80865, 80868, 80885, 80893, 80895, 80961, 80966, 80971, 80975, 80982, 80997, 81012, 81013, 81030, 81031, 81040, 81046, 81071, 81080, 81081, 81083, 81084, 81085, 81086, 81087, 81092, 81093, 81118, 81119, 81130, 81171, 81202, 81227, 81278, 81281, 81282, 81321, 81327, 81329, 81330, 81332, 81333, 81340, 81342, 81344, 81346, 81347, 81350, 81460, 81497, 81520, 81522, 81529, 81536, 81537, 81591, 81594, 81595, 81599, 81610, 81611, 81647, 81659, 81677, 81678, 81724, 81725, 81729, 81736, 81740, 81750, 81751, 81754, 81755, 81756, 81761, 81762, 81763, 81764, 81765, 81769, 81770, 81777, 81782, 81819, 81846, 81861, 81903, 81911, 81913, 81934, 81935, 81938, 81962, 81963, 81965, 81981, 81982, 82010, 82011, 82015, 82016, 82018, 82019, 82020, 82022, 82025, 82030, 82031, 82035, 82037, 82045, 82059, 82061, 82062, 82063, 82088, 82097, 82114, 82116, 82117, 82121, 82123, 82124, 82132, 82150, 82164, 82174, 82176, 82177, 82178, 82185, 82221, 82223, 82228, 82249, 82251, 82272, 82278, 82286, 82292, 82295, 82296, 82304, 82305, 82318, 82321, 82339, 82383, 82391, 82396, 82398, 82445, 82450, 82461, 82526, 82621, 82645, 82759, 82767, 82780, 82782, 82789, 82804, 82846, 82847, 82982, 83003, 83080, 83085, 83181, 83199, 83248, 83249, 83377, 83397, 83447, 83460, 83480, 83521, 83522, 83545, 83614, 83667, 83668, 83674, 83697, 83711, 83737, 83738, 83740, 83741, 83850, 83886, 83909, 83946, 84000, 84002, 84024, 84031, 84093, 84095, 84096, 84098, 84117, 84121, 84155, 84156, 84157, 84160, 84163, 84164, 84435, 84436, 84437, 84438, 84444, 84542, 84576, 84634, 84714, 84855, 84958, 84983, 85010, 85016, 85017, 85021, 85030, 85031, 85054, 85061, 85134, 85141, 85148, 85205, 85206, 85279, 85291, 85304,

85323, 85335, 85336, 85397, 85439, 85440, 85518, 85521, 85559, 85560, 85561, 85630, 85646, 85663, 85693, 85694, 85695, 85696, 85698, 85699, 85702, 85704, 85725, 85727, 85732, 85762, 85786, 85816, 85817, 85818, 85833, 85835, 85839, 85842, 85843, 85887, 85906, 85932, 85946, 85961, 86009, 86062, 86079, 86080, 86081, 86082, 86097, 86111, 86161, 86175, 86176, 86177, 86217, 86244, 86267, 86268, 86286, 86304, 86323, 86324, 86325 (Total Student Count:845)

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

49627, 53986, 53990, 53993, 53998, 56555, 56981, 56992, 57045, 57093, 57216, 57281, 57286, 57397, 57405, 57415, 57446, 57532, 57538, 57660, 57661, 57720, 57731, 57797, 57799, 57915, 57964, 58050, 58087, 58119, 58280, 58307, 58356, 58384, 58550, 58566, 58655, 58738, 58883, 59091, 59426, 59553, 59654, 59837, 60018, 60086, 60170, 60249, 60330, 60672, 60760, 60913, 61156, 61173, 61206, 61283, 61329, 61349, 61527, 61763, 62081, 62530, 62619, 62676, 62696, 62731, 62839, 62848, 62880, 63015, 63037, 63050, 63052, 63403, 63411, 63427, 63495, 63549, 63761, 63767, 63770, 63779, 63923, 63971, 64051, 64064, 64195, 64255, 64348, 64487, 64506, 64561, 64720, 64788, 64797, 64805, 64933, 64965, 64967, 65115, 65122, 65133, 65184, 65229, 65435, 65456, 65459, 65462, 65464, 65468, 65469, 65587, 65591, 65622, 65670, 65734, 65847, 65895, 66025, 66161, 66178, 66182, 66204, 66227, 66308, 66499, 66523, 66615, 66634, 66707, 66844, 66944, 66960, 66993, 66998, 67050, 67134, 67162, 67306, 67397, 67515, 67536, 67558, 67617, 67619, 67674, 67750, 67807, 67813, 67818, 67867, 67868, 67909, 67975, 68025, 68035, 68038, 68146, 68158, 68235, 68239, 68240, 68244, 68246, 68365, 68439, 68441, 68451, 68528, 68620, 68623, 68873, 68924, 68958, 68967, 68973, 69020, 69102, 69118, 69155, 69181, 69186, 69194, 69205, 69210, 69226, 69241, 69253, 69263, 69312, 69382, 69431, 69442, 69458, 69521, 69671, 69677, 69679, 69700, 69718, 69743, 69775, 69778, 69801, 69837, 69838, 69913, 70076, 70102, 70117, 70142, 70150, 70196, 70208, 70317, 70642, 70647, 70652, 70661, 70662, 70664, 70674, 70677, 70681, 70697, 70716, 70952, 70955, 71108, 71168, 71187, 71302, 71312, 71498, 71499, 71509, 71510, 71516, 71527, 71528, 71531, 71537, 71561, 71579, 71600, 71601, 71607, 71632, 71633, 71636, 71643, 71650, 71686, 71688, 71690, 71693, 71694, 71695, 71696, 71697, 71698, 71701, 71702, 71705, 71706, 71710, 71884, 71885, 71916, 71995, 71996, 71997, 72001, 72021, 72022, 72024, 72055, 72078, 72094, 72096, 72101, 72131, 72132, 72149, 72187, 72190, 72207, 72216, 72221, 72242, 72269, 72276, 72277, 72280, 72374, 72398, 72403, 72405, 72483, 72542, 72545, 72549, 72557, 72560, 72565, 72577, 72579, 72582, 72584, 72585, 72588, 72596, 72612, 72619, 72626, 72627, 72628, 72651, 72653, 72658, 72663, 72714, 72726, 72756, 72789, 72790, 72794, 72800, 72815, 72866, 72871, 72872, 72906, 72933, 72942, 72975, 73017, 73018, 73019, 73045, 73121, 73143, 73175, 73182, 73184, 73235, 73268, 73270, 73272, 73283, 73284, 73301, 73306, 73336, 73343, 73358, 73360, 73409, 73410, 73416, 73462, 73475, 73478, 73492, 73534, 73535, 73562, 73570, 73576, 73585, 73632, 73641, 73648, 73726, 73739, 73742, 73761, 73875, 73915, 73927, 73937, 73939, 73940, 73941, 73943, 73953, 73967, 73972, 74020, 74021, 74059, 74077, 74083, 74086, 74095, 74117, 74118, 74132, 74134, 74262, 74271, 74285, 74348, 74420, 74501, 74504, 74510, 74512, 74612, 74620, 74665, 74690, 74751, 74771, 74775, 74833, 74834, 74848, 74948, 74953, 74996, 74997, 75005, 75090, 75121, 75126, 75236, 75237, 75265, 75270, 75285, 75445, 75482, 75517, 75561, 75609, 75623, 75626, 75627, 75628, 75629, 75689, 75693, 75696, 75704, 75707, 75715, 75718, 75737, 75765, 75768, 75771, 75793, 75827, 75840, 75876, 75877, 75879, 75903, 75907, 75910, 75911, 75916, 75918, 75924, 75927, 75928, 75952, 75982, 75983, 75994, 76005, 76009, 76010, 76020, 76051, 76154, 76177, 76217, 76242, 76252, 76273, 76275, 76317, 76319, 76403, 76447, 76449, 76455, 76576, 76577, 76617, 76632, 76634, 76644, 76645, 76651, 76668, 76673, 76674, 76678, 76744, 76753, 76812, 76827, 76830, 76831, 76833, 76834, 76835, 76836, 76837, 76839, 76843, 76850, 76871, 76881, 76888, 76889, 76901, 76909, 76912, 76913, 76914, 76916, 76919, 76920, 76927, 76930, 76931, 76933, 76934, 76935, 76941, 76951, 76974, 76984, 77017, 77023, 77028, 77029, 77030, 77032, 77074, 77091, 77106, 77110, 77162, 77192, 77204, 77206, 77244, 77248, 77250, 77252, 77260, 77263, 77270, 77271, 77291, 77298, 77301, 77315, 77324, 77326, 77388, 77425, 77464, 77484, 77494, 77506, 77530, 77543, 77562, 77563, 77570, 77571, 77613, 77615, 77621, 77623, 77625, 77626, 77627, 77657, 77661, 77662, 77666, 77668, 77670, 77674, 77675, 77677, 77687, 77739, 77740, 77746, 77766, 77784, 77830, 77885, 77900, 77901, 77906, 77909, 77911, 77929, 77930, 78034, 78067, 78071, 78082, 78097, 78098, 78102, 78131, 78132, 78151, 78161, 78162, 78174, 78196, 78317, 78362, 78379, 78491, 78492, 78493, 78494, 78495, 78568, 78571, 78627, 78715, 78831, 78835, 78858, 79032, 79033, 79037, 79054, 79176, 79177, 79332, 79363, 79367, 79403, 79506, 79507, 79510, 79511, 79537, 79576, 79595, 79596, 79602, 79680, 79712, 79766, 79777, 79894, 80014, 80146, 80326, 80419, 80510, 80527, 80528, 80538, 80540, 80545, 80548, 80549, 80651, 80652, 80653, 80665, 80701, 80886, 80902, 80909, 80969, 80972, 81010, 81076, 81144, 81256, 81503, 81541, 81614, 81672, 81695, 81971, 82171, 82215, 82216, 82218, 82261, 82293, 82294, 82347, 82399, 82632, 82805, 82806, 83001, 83056, 83108, 83338, 83339, 83340, 83378, 83398, 83446, 83462, 83484, 83485, 83524, 83525, 83624, 83625, 83675, 83690, 83698, 83699, 83700, 83701, 83742, 83743, 83871, 83936, 83940, 84005, 84040, 84041, 84122, 84325, 84326, 84440, 84445, 84448, 84471, 84510, 84593, 84627, 84637, 84841, 84863, 84960, 85069, 85070, 85102, 85103, 85108, 85204, 85230, 85280, 85286, 85299, 85306, 85341, 85398, 85441, 85442, 85443, 85525, 85534, 85547, 85568, 85605, 85606, 85613, 85652, 85653, 85675, 85771, 85777, 85779, 85801, 86030, 86033, 86091, 86133, 86162, 86225, 86231, 86285, 86331 (Total Student Count:788))

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

(I) 79055 (II) 85548 (III) 65665

49619, 49805, 49824, 49886, 49894, 50278, 52488, 52510, 52604, 54056, 54303, 55378, 56993, 57008, 57024, 57125, 57128, 57228, 57279, 57283, 57284, 57287, 57289, 57290, 57294, 57414, 57495, 57522, 57698, 57710, 57758, 57843, 58169, 58350, 58523, 58525, 58543, 58776, 58796, 58823, 58900, 59094, 59096, 59098, 59521, 59740, 59857, 59893, 59910, 59975, 59979, 60195, 60234, 60692, 60822, 60887, 60897, 60898, 60900, 60904, 60942, 60944, 60945, 61027, 61087, 61147, 61161, 61247, 61305, 61348, 61388, 61393, 61530, 61570, 61615, 61705, 61758, 61796, 61824, 61827, 61837, 61872, 61942, 62277, 62299, 62303, 62448, 62504, 62655, 62766, 62909, 62986, 63006, 63036, 63041, 63103, 63106, 63266, 63348, 63358, 63420, 63421, 63546, 63556, 63557, 63558, 63603, 63605, 63610, 63613, 63614, 63616, 63618, 63620, 63621, 63622, 63645, 63766, 63772, 64063, 64113, 64115, 64153, 64221, 64265, 64440, 64483, 64567, 64674, 64700, 64803, 64809, 64810, 64929, 65039, 65131, 65185, 65186, 65208, 65287, 65431, 65458, 65529, 65545, 65598, 65665, 65682, 65691, 65710, 65835, 65842, 65844, 65853, 66035, 66091, 66123, 66136, 66146, 66153, 66163, 66169, 66335, 66336, 66357, 66359, 66361, 66404, 66410, 66546, 66608, 66907, 67072, 67261, 67326, 67332, 67347, 67455, 67611, 67613, 67688, 67809, 67815, 67866, 67916, 67917, 67974, 68029, 68031, 68033, 68036, 68042, 68221, 68223, 68226, 68231, 68241, 68242, 68269, 68280, 68281, 68306, 68389, 68442, 68480, 68557, 68617, 68678, 68722, 68779, 68795, 68930, 68944, 68945, 68998, 69004, 69117, 69145, 69202, 69209, 69220, 69228, 69284, 69287, 69288, 69384, 69446, 69485, 69612, 69657, 69697, 69710, 69746, 69864, 69865, 69868, 69956, 69957, 70114, 70209, 70220, 70244, 70258, 70259, 70286, 70319, 70322, 70454, 70659, 70879, 71165, 71189, 71190, 71191, 71525, 71583, 71609, 71655, 71658, 72014, 72130, 72139, 72148, 72153, 72201, 72382, 72465, 72466, 72467, 72468, 72469, 72470, 72471, 72472, 72474, 72482, 72485, 72486, 72525, 72540, 72541, 72547, 72641, 72642, 72671, 72678, 72733, 72758, 72811, 72812, 72829, 72849, 72910, 72911, 73038, 73217, 73300, 73324, 73326, 73407, 73493, 73496, 73588, 73710, 73969, 74048, 74104, 74110, 74187, 74355, 74428, 74785, 74786, 74787, 74788, 74789, 74893, 74913, 74915, 74916, 74959, 75116, 75141, 75393, 75451, 75519, 75551, 75649, 75833, 75963, 76158, 76225, 76286, 76287, 76316, 76352, 76474, 76575, 76590, 76860, 76998, 77000, 77007, 77016, 77041, 77059, 77104, 77210, 77553, 77564, 77903, 77927, 77946, 77949, 78490, 78509, 78737, 78923, 79018, 79045, 79047, 79050, 79051, 79055, 79161, 79335, 79514, 79515, 79615, 79746, 79749, 79828, 80256, 80257, 80260, 80262, 80319, 80424, 80476, 80915, 80970, 81111, 81112, 81263, 81415, 81446, 81696, 81697, 81732, 81783, 82082, 82083, 82086, 82125, 82256, 82316, 82342, 82479, 82501, 82543, 82692, 82735, 82747, 83129, 83202, 83213, 83239, 83276, 83277, 83526, 83626, 83744, 83745, 83746, 83891, 83898, 83899, 84008, 84115, 84170, 84172, 84198, 84443, 84450, 84473, 84498, 84504, 84526, 84573, 84622, 84684, 84692, 84705, 84719, 84764, 84862, 84961, 85074, 85166, 85168, 85170, 85242, 85243, 85295, 85548, 85550, 85593, 85620, 85662, 85719, 85802, 85815, 86034, 86050, 86089, 86200, 86204, 86270, 86271 (Total Student Count:458)

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं)

(I) 58588 (II) 64615 (III) 79065

49804, 50111, 51798, 52085, 52781, 54064, 55902, 56594, 56994, 56995, 57018, 57026, 57034, 57096, 57115, 57236, 57370, 57480, 57491, 57521, 57559, 57571, 57627, 57685, 57753, 57860, 58097, 58298, 58362, 58373, 58531, 58588, 58754, 58896, 58901, 59017, 59113, 59114, 59396, 59398, 59421, 59624, 59880, 59889, 60065, 60332, 60335, 60505, 60530, 60595, 60683, 60694, 60886, 60899, 60907, 60947, 60958, 60974, 61151, 61172, 61395, 61420, 61556, 61611, 61851, 61864, 61987, 61994, 61996, 62017, 62019, 62022, 62027, 62127, 62263, 62265, 62266, 62274, 62281, 62290, 62297, 62398, 62401, 62519, 62587, 62656, 62658, 62891, 62911, 62921, 62924, 62929, 62989, 63021, 63072, 63107, 63114, 63200, 63414, 63453, 63454, 63455, 63458, 63460, 63462, 63463, 63469, 63554, 63660, 63669, 63796, 64052, 64085, 64346, 64359, 64368, 64369, 64377, 64414, 64420, 64424, 64431, 64510, 64562, 64565, 64615, 64673, 64811, 64878, 64974, 65046, 65050, 65073, 65267, 65294, 65296, 65381, 65444, 65455, 65728, 65826, 65830, 65852, 65951, 66022, 66115, 66180, 66232, 66411, 66413, 66528, 66580, 66626, 66709, 66711, 66786, 66845, 67026, 67298, 67415, 67623, 67872, 67876, 68044, 68433, 68481, 68913, 69119, 69129, 69152, 69542, 69656, 69711, 69798, 69843, 69846, 69885, 69909, 69997, 70007, 70548, 70723, 71021, 71138, 71192, 71424, 71505, 71569, 71623, 71860, 71911, 72105, 72106, 72107, 72189, 72524, 72736, 72757, 73273, 73384, 73713, 73716, 73717, 73718, 73743, 73982, 74468, 74617, 74686, 74706, 74840, 74874, 75025, 75154, 75156, 75710, 75713, 75854, 76293, 76430, 77331, 77505, 77706, 78072, 78156, 78320, 78321, 79062, 79065, 79374, 79383, 79387, 79479, 79786, 79931, 81258, 81418, 81574, 81746, 82290, 82400, 82404, 82631, 82762, 82855, 83022, 83024, 83201, 83487, 83529, 83531, 83627, 83628, 83833, 83942, 84174, 84313, 84329, 84701, 84720, 84860, 85165, 85199, 85444, 85448, 85527, 85528, 85573, 85796, 85844, 85895, 86163 (Total Student Count:272)

जैन धर्म विशारद (छठी)

(I) 63474 (II) 58593 (III) 61726

49823, 49866, 49892, 50282, 50283, 50285, 50579, 52593, 52594, 52597, 52598, 55862, 56107, 56618, 57099, 57490,

57558, 57634, 57717, 57808, 57809, 57919, 57968, 57969, 58177, 58312, 58393, 58546, 58555, 58556, 58593, 58599, 58616, 58780, 58902, 58956, 58960, 59338, 59449, 59466, 59836, 59943, 60066, 60106, 60339, 60367, 60602, 60777, 60833, 60844, 60891, 60894, 60895, 61165, 61377, 61405, 61419, 61555, 61588, 61726, 61813, 61865, 61921, 62030, 62031, 62032, 62033, 62866, 62867, 62893, 62933, 63201, 63203, 63260, 63361, 63413, 63474, 63492, 63502, 63559, 63562, 63659, 63773, 63792, 63794, 64185, 64187, 64362, 64376, 64416, 64423, 64428, 64430, 64446, 64451, 64454, 64457, 64509, 64513, 64514, 64515, 64518, 64527, 64628, 64651, 64671, 64847, 64979, 65031, 65203, 65204, 65283, 65383, 65638, 65652, 65875, 66116, 66135, 66241, 66304, 66312, 66345, 66583, 66585, 66685, 66712, 66945, 66967, 67374, 67421, 67493, 67501, 67819, 67860, 68046, 68049, 68233, 68236, 68237, 68309, 68378, 68902, 68997, 69183, 69772, 70243, 70678, 70902, 70944, 72035, 72039, 72281, 72476, 72735, 72759, 73431, 73719, 74141, 74569, 74701, 74790, 74794, 75033, 75111, 75112, 75835, 76602, 76750, 76752, 76908, 76910, 76944, 77365, 77473, 77580, 77606, 77989, 78127, 78580, 78682, 78738, 78837, 78871, 79068, 79074, 79369, 80159, 80425, 80426, 80479, 80908, 80923, 81107, 81108, 81449, 81850, 82807, 82852, 83542, 83587, 83638, 83702, 84953, 85173, 85535, 85592 (Total Student Count:206)

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

(I) 70323 (II) 65420 (III) 57080

52151, 53803, 57028, 57048, 57053, 57057, 57080, 57211, 57238, 57500, 57846, 58092, 58175, 58554, 58557, 58558, 58559, 58560, 58562, 58594, 58912, 59592, 59594, 59702, 59763, 59896, 59945, 60365, 60599, 60622, 60628, 60630, 60827, 60860, 60893, 60957, 60961, 61058, 61059, 61169, 61954, 62421, 62754, 62785, 62849, 62851, 62935, 63074, 63075, 63078, 63079, 63204, 63472, 63473, 63501, 63821, 63830, 63833, 63976, 64118, 64119, 64179, 64599, 64605, 64684, 64755, 64815, 64842, 64982, 64984, 64988, 65420, 65523, 65531, 65539, 65554, 65613, 65726, 66118, 66119, 66121, 66347, 67287, 67301, 67337, 67338, 68050, 68824, 68981, 69144, 69773, 70252, 70323, 70725, 70903, 71723, 72116, 72202, 72248, 72786, 72788, 73445, 73480, 73971, 74754, 74799, 74994, 75639, 76295, 76327, 76436, 77848, 78569, 78789, 78790, 79071, 79072, 79073, 79077, 80174, 80703, 82135, 82810, 83543, 84513, 84734, 85174, 85574, 86196 (Total Student Count:129)

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

(I) 58915 (II) 69097 (III) 69094

54097, 54972, 55367, 55368, 57116, 57240, 57298, 57591, 57593, 57745, 57923, 57975, 58098, 58185, 58910, 58915, 58916, 60377, 61102, 61610, 61858, 62038, 62248, 62416, 62423, 62486, 62701, 62703, 62707, 62996, 63062, 63076, 63081, 63205, 63206, 63406, 63408, 63409, 63506, 63805, 64120, 64388, 64816, 64930, 65044, 65096, 65262, 65641, 66013, 66187, 67406, 67495, 68799, 69015, 69094, 69097, 70093, 70217, 72491, 74015, 74432, 74670, 74958, 75842, 76292, 76693, 77572, 78073, 79337, 80456, 80925, 81713, 81852, 82646, 82811, 82812, 83214, 83217, 83752 (Total Student Count:79)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध (नवमी)

(I) 63503 (II) 57902 (III) 66253

53128, 54048, 57385, 57741, 57902, 58057, 58183, 58374, 58389, 58624, 59754, 59773, 60382, 61056, 62220, 62221, 62783, 62825, 63503, 63504, 63505, 64445, 64542, 64657, 64869, 65337, 65362, 65541, 65724, 66253, 66254, 66387, 66416, 67459, 67464, 67665, 70010, 70103, 71331, 72026, 72110, 72492, 73310, 73388, 73474, 74480, 75513, 75966, 76150, 76477, 76863, 78280, 78572, 81967, 82853, 83209, 83896, 83970, 84588, 85115, 85219, 85220, 85245, 85308, 85976 (Total Student Count:65)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध (दसवीं)

(I) 75052 (II) 81571 (III) 74882

53131, 56978, 57587, 57935, 57948, 58100, 59888, 59900, 60536, 60962, 61060, 61153, 62058, 62873, 62946, 63087, 63527, 64405, 64546, 64548, 64550, 64663, 64760, 64763, 65067, 67645, 69150, 70342, 71624, 72000, 72111, 72339, 73657, 74029, 74197, 74872, 74882, 74957, 75051, 75052, 75661, 76257, 77092, 77495, 77824, 78275, 78791, 79968, 80246, 80554, 80644, 81571, 84343, 85029, 85297 (Total Student Count:55)

जैन सिद्धान्त रत्नाकर (ग्यारहवीं)

(I) 72247 (II) 59854 (III) 61798

57579, 57747, 57952, 58528, 58532, 58533, 58535, 58628, 59854, 59999, 61798, 61948, 62051, 62112, 63027, 63099, 63410, 64551, 64553, 64556, 64557, 64820, 65558, 65563, 65642, 65672, 68052, 72027, 72247, 72284, 73987, 78853, 80699, 82630 (Total Student Count:34)

जैन सिद्धान्त शास्त्री (बारहवीं)

(I) 72245 (II) 61721 (III) 65816

57086, 57813, 57941, 59143, 60868, 61721, 62057, 62073, 62879, 63849, 64849, 65286, 65677, 65816, 70941, 72028, 72029, 72245, 78239, 78534, 81451 (Total Student Count:21)

परिणाम रोका गया

57319, 57520, 57775, 58383, 58757, 60699, 60823, 60966, 61081, 61083, 61175, 61531, 61538, 61540, 61840, 62125, 62233, 62872, 63859, 63892, 63982, 63992, 64054, 64734, 64931, 65705, 66350, 66358, 66364, 66905, 66914, 66939, 66940, 66996, 67002, 67007, 67029, 67911, 67976, 68030, 68422, 68527, 69204, 69426, 69429, 69529, 70063, 70066, 70070, 70101, 70158, 70169, 70214, 70235, 70720, 71521, 71526, 71533, 71736, 72217, 72575, 72874, 72904, 73216, 73237, 73476, 73593, 73723, 73831, 74689, 75057, 75249, 76297, 77705, 77740, 77871, 77892, 77905, 78326, 78536, 79278, 79564, 79565, 79756, 80015, 80321, 81115, 81631, 81882, 81906, 82217, 82338. **केन्द्र कोड (544) डीग, (585) बहज (भरतपुर), (711) मावली जंक्शन, (718) मलपुरा (आगरा)-नकल की संभावना होने के कारण इन केन्द्रों पर पुनः परीक्षा दिनाँक 30 सितम्बर, 2012 को आयोजित हुई। जिनका परिणाम आगामी अंक में दिया जायेगा।**

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
9455	6084	4293	70.56%

बोर्ड की आगामी परीक्षा 06 जनवरी, 2013 को

जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा)

सुशीला बोहरा	धर्मचन्द जैन	शिक्षण बोर्ड
संयोजक	रजिस्ट्रार	कार्यालय
9414133879	9351589694	0291-2630490

विज्ञापन

जैन छात्रों के लिए चेन्नई में आवास-व्यवस्था

जो प्रतिभाशाली जैन छात्र चेन्नई में रहकर अपना अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए चेन्नई महानगर में आवास-व्यवस्था की गई है। कमजोर वित्तीय स्थिति वाले उन धर्मनिष्ठ मेधावी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है जो अपने जीवन में पढ़-लिखकर संघ-समाज, देश व जिनशासन की सेवा के साथ अपने जीवन को संवारना चाहते हैं। चयन में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा अन्य धार्मिक जानकारी एवं योग्यता रखने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। पारिवारिक, शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और अन्य आवश्यक तथ्यों के साथ पूर्ण विवरण सहित निम्नांकित पते पर आवेदन करें। आधे-अधूरे आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

Surana & Surana International Attorneys
61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004
Phone: 044-28120000/28120002

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर के जयपुर चातुर्मास में तपाराधन, ज्ञानाराधन एवं धर्माराधना की निरन्तरता

शताधिक अठाई, 23 मासखमण आदि अनेक तप तथा शीलव्रत-आराधन

महासती श्री सुयशप्रभाजी के मासखमण का पूर सम्पन्न

लगभग 100 भिक्षुदया का आराधन

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 12 के पावन वर्षावास का सुयोग पाकर गुलाबी नगरी वासी गुरुभक्त उल्लसित मन से एवं प्रमुदित भावों से धर्माराधना, ज्ञानाराधना और तपाराधना में विशेष पुरुषार्थ कर चातुर्मास को अविस्मरणीय बना रहे हैं। गुरुभक्त श्रावक-श्राविकाओं का निकट एवं दूरवर्ती स्थानों से आवागमन भी निरन्तर बना हुआ है। धर्माराधन का क्रम नियमित चल रहा है। प्रातःकाल श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी प्रार्थना कराते हैं, श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी एवं उनके पश्चात् तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. प्रवचन फरमाते हैं। पूज्य आचार्यप्रवर प्रतिदिन प्रवचन सभा में पधारकर प्रत्याख्यान एवं संक्षिप्त उद्बोधन के साथ मांगलिक प्रदान करते हैं। पर्व-तिथियों के दिन, रविवार एवं जब भी बाहर से संघ आया होता है उस दिन अमृतमयी वाणी से लाभान्वित करते हैं। अपराह्न 2 बजे आचार्यप्रवर की सन्निधि में महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आचारांग सूत्र की वाचनी विवेचन के साथ फरमा रहे हैं। शास्त्र-श्रवण के समय जिज्ञासु भाई-बहिनों की उपस्थिति का दृश्य मन को आकर्षित करता है। संवर की आराधना का क्रम निरन्तर चल रहा है। सामान्य दिनों में 50 से 100 की संख्या में संवर-आराधना होती है। उभयकाल प्रतिक्रमण भी हो रहा है।

श्राविका मण्डल के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय स्तर पर 'अध्यात्म-चेतना शिविर' 31 अगस्त से 2 सितम्बर तक आयोजित हुआ तथा देश के विभिन्न स्थानों से लगभग 450 श्राविकाओं ने शिविर में भाग लिया। अ.भा. श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मधु जी सुराणा-चेन्नई, डॉ. श्रीमती मंजुला जी बम्ब, स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती

उर्मिला जी बोथरा, श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा आदि ने शिविर एवं सम्मेलन के आयोजन को सफल बनाने में पूरा योगदान दिया।

तपस्या का क्रम निरन्तर चल रहा है। महासती श्री देवांगना जी के मासखमण के पश्चात् महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा. ने दुर्बल काया में भी असीम पुरुषार्थ का प्रयोग कर 31 दिवसीय तप की आराधना की। 10 सितम्बर को तप की अनुमोदना का कार्यक्रम सामूहिक एकासन की साधना के साथ सम्पन्न हुआ। इस दिन तप की अनुमोदना में विशाल परिसर खचाखच भरा हुआ था। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी ने इस अवसर पर अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि जिसके भीतर में धृति होती है वही तपस्या कर सकता है। तन के दो ही सार हैं-सेवा और तप। तप पवित्र होने का सुन्दर तरीका है। श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि तप का अनुमोदन धर्म का तीसरा आलम्बन है, यह कर्म निर्जरा में सहायक है। भीतर के अहोभावों के साथ अनुमोदना करें तथा आगम की आँख से, दर्शन के दर्पण से चारित्र मार्ग पर चलते हुए तप तलवार से कर्मों को काटते रहें। महासती श्री मुदित प्रभा जी ने कहा कि महासती श्री सुयशप्रभा जी ने गुरु-चरणों में भक्ति समर्पण के साथ कृशकाया में भी उग्र तपस्या कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया है। तपस्विनी महासती की गुरुणी व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति में फरमाया कि परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त जो ज्ञानी-ध्यानी, त्यागी-तपस्वी हैं, उनके ही चरणों में, उनके ही प्रकाश से, उनकी महती अनुकम्पा से मासक्षपण तप सम्पन्न हुआ है। जब आपकी कृपा हो तो कमजोर तन वाले भी मासक्षपण तप जैसी उग्र तपस्या स्वास्थ्य-समाधि के साथ कर पाने में समर्थ, सफल हो पाते हैं। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधना के मार्ग में आगे बढ़ने वाले जो साधक ज्ञान के आलोक में तन के परायेपन की अनुभूति करते हैं, वे ही साधक मासक्षपण तप कर पाते हैं। मोह को घटाते हुए समकित के साथ पाँचवे-छठे गुणस्थान में मासक्षपण तप महत्त्वशाली होता है। क्षेत्र, काल की अपेक्षा लघु तपस्या भी गुरु हो जाती है। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने कहा कि साधक के तप का गुणगान निर्जरा कराने वाला है। तप शक्ति का क्षरण नहीं, तप देह का क्षरण नहीं, अपितु देहातीत बनने का क्षरण है। तप शरीर का शोषण नहीं, आत्मा का पोषण है। तप शक्ति से नहीं श्रद्धा-भक्ति की अभिव्यक्ति से होता है।

पूज्य आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर फरमाया कि इन्द्रियों के विषयों को दमन करने का एकमात्र उपाय तप है। ऐसे क्षेत्र भी देखने को मिले जहाँ 15 दिन की तपस्या के पारणे के दिन भी एकासन तप हुआ है। ऐसे तप संस्कारी घरों में होते हैं, दुलार वाले घरों में नहीं। जब तक इच्छा का निरोध नहीं होता तब तक तप नहीं होता। पहला तप ब्रह्मचर्य का

है, दूसरा तप अनशन तप है। पहले हजारों अठाइयाँ होती थीं, अब हजारों मासखमण तप सुन रहे हैं। 15 साल का बालक आयम्बिल तप कर रहा है। अनुमोदना में कौन कितना पराक्रम कर रहे हैं, मैं कह नहीं सकता, परन्तु मेरा पराक्रम जगे, मैं करूँगा तो दूसरों को कह सकूँगा। शक्ति के अनुसार मैं भी तप करने का प्रयास करूं, और आप भी अपने तप करने की शक्ति को जगायें। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने इस कथन को 11 एवं 12 सितम्बर को बेले की तपस्या कर मूर्त रूप प्रदान किया। 13 सितम्बर को उन्होंने तीन पोरसी उपरान्त पारणे का दस्तूर मात्र किया। तप अनुमोदना के दिन अच्छी संख्या में एकासन हुए। उपवास, बेला, तेला, दया, आयम्बिल, नींवी की आराधना भी हुई।

तपाराधना के क्रम में साधक आत्माओं में महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री मोहनमुनि जी म.सा. के बेले-बेले की तपस्या चल रही है। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. तथा श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. ने नौ की तपस्या की है। महासती श्री तितिक्षा श्री जी म.सा. के अठाई तप का पारणक सुख-शांतिपूर्वक हो गया है।

आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अब तक 23 मासक्षपण की साधना हो चुकी है। श्रीमती उच्छबदेवी धर्मपत्नी श्री अमरचन्द जी नाहर तथा श्रीमती किरणबाई धर्मपत्नी श्री लाभचन्द जी कोठारी ने सिद्धि तप की आराधना की है। सितम्बर माह में 11, 9 एवं आठ की कई तपस्याएँ बराबर चली तथा यह क्रम निरन्तर बना हुआ है।

प्रत्येक रविवार को तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् ध्यान-साधना करवाते हैं, जिसमें अच्छी उपस्थिति रहती है। छोटे बालक-बालिकाओं का शिविर भी प्रत्येक रविवार को चल रहा है।

21 एवं 22 सितम्बर को वीर परिवारजनों का सम्मान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत एवं शासनसेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना 20 सितम्बर को ही गुरु-चरणों में पधार गये थे। (विस्तृत रिपोर्ट पृथक् से दी गई है)

चातुर्मास एवं शेषकाल में फरसने की विनति लेकर अनेक संघों का आगमन भी बराबर बना रहा। जिनमें सूरत, बजरिया, सवाईमाधोपुर, जबलपुर, लासुर, निफाड़, हैदराबाद, मुम्बई, देई, बीजापुर, नासिक, मैसूर, धुलिया, जलगाँव आदि संघ प्रमुख हैं। कोटा से 450 भाई-बहिनों का सकल जैन समाज संगठित होकर आगामी चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ।

जयपुर के रत्न युवक परिषद् के सदस्यों को 16 सितम्बर के दिन पूज्य आचार्य भगवन्त ने दोपहर की सभा में प्रेरक उद्बोधन देते हुए फरमाया कि हर युवक संवर की करणी कर अपने जीवन को संयम युक्त बनाये तथा संघ की दीप्ति में वर्धापन लाए। स्वाध्याय को अपने जीवन का अंग बनाए। जो सेवा करने की भावना रखते हैं वे संकल्प के साथ आगे आएं, जो स्वाध्याय कर सकते हैं वे अपना ज्ञानवर्द्धन करें। कम से कम 100 युवक बारह व्रती बनें तथा समयदान की भावना के साथ संघ की गतिविधियों से जुड़ें। चातुर्मास का पूर्वार्द्ध काल व्यतीत हो चुका है अब उत्तरार्द्ध आ गया है, आप सभी चार सद्प्रवृत्तियों को अपनाकर दृढ़ता के साथ आगे चरण बढ़ायें।

30 सितम्बर को लगभग 100 श्रावकों ने भिक्षुदया का आराधन किया। दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है। लोढ़ा परिवार एवं जयपुर संघ आतिथ्य सेवा में पूर्णतः तत्पर है।

मेड़ता चातुर्मास में ज्ञानाराधन एवं तप-त्याग का उल्लास

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 का वीर भवन में मेड़ता निवासियों को चातुर्मास क्या मिला, हर सदस्य पुलकित है, प्रमुदित है, उल्लसित है। चातुर्मास का पूर्वार्द्धकाल बीत गया, मगर किसी को भी यह अहसास नहीं होता कि आधा समय बीत गया। अभी भी ऐसा अनुभव होता है कि गुरु भगवन्त आज ही पधारे हैं। यही कारण है कि चातक पक्षी की भांति पिपासु और जिज्ञासु बनकर लोग धार्मिक गतिविधियों में उमंगित होकर भाग ले रहे हैं। अभी तो गुरु भगवन्त के सान्निध्य में प्रवचन आदि कार्यक्रम को देखकर ऐसा अनुभव होता है कि जैसे पर्युषण चल ही रहे हैं। उपाध्यायप्रवर की शान्त, सौम्य, मधुर मुस्कान भरी संयममय छवि पर हर कोई मुग्ध है। उनके श्रीमुख से वन्दनकर्ता को सुख साता पूछने पर 'आनन्द है' प्रत्युत्तर सुन कर श्रद्धासिक्त बन जाता है। उनकी सन्निधि में जब कोई कुछ पलों के लिये बैठता है तो उसका मौन संवाद भी अन्तरहृदय में आह्लादकारी सुमनों की बहार से महक जाता है। उपाध्यायप्रवर प्रवचन सभा में लगभग नियमित पधारते हैं, जिससे जनमानस में एक अनिवर्चनीय प्रसन्नता की अनुभूति होती है और जब अपने नपे-तुले अल्प, लेकिन सारगर्भित शब्दों में प्रेरणा देते हैं तो हर कोई अपने आपको धन्य-धन्य महसूस करता है।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. अपने श्रीमुख से जब आगमयुक्त

मार्मिक प्रवचनों की रूपक, दृष्टान्त और तत्त्व शैली से प्रवचन फरमाते हैं तो हर किसी का मन प्रवचन के साथ एकाकार हो जाता है। श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. सुखविपाक सूत्र पर प्रवचन फरमाते हैं। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. पच्चीस बोल पर विवेचन कर रहे हैं। आगम के रहस्यों को सरल भाषा में प्रस्तुत कर सभी को धर्म-साधना में आगे बढ़ने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। यदा-कदा श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. भी जिनवाणी के आधार से प्रवचन फरमाकर श्रोताओं के जन मानस को जाग्रत करते हैं। प्रवचन में जैन मन्दिर मार्गी, तेरहपंथी एवं जैनेतर समाज, माहेश्वरी, अग्रवाल, जाट, कुम्हार आदि नियमित रूप से आ रहे हैं। प्रवचन से प्रेरित होकर नियमित संकल्प भी कर रहे हैं।

रविवारीय धार्मिक प्रशिक्षण शिविर जिस रूप में गतिशील है और प्रत्येक शिविरार्थी जिस उत्साही मन से ज्ञानार्जन में समर्पित है, को देखकर लगता है, आने वाला समय समाज के लिये उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक होगा। छोटे बच्चों को जब तुतलाती भाषा में पाठों को पढ़ते, सुनते देखते हैं तो हर कोई संस्कार की इस प्रयोगशाला के लिये लाख-लाख बधाई देता है।

तपस्या का क्रम आज भी बदस्तूर जारी है। पर्युषण के बाद भी यदा कदा जब आठ, नौ, ग्यारह के पच्चक्खाण होते हैं तो लोगों की प्रतिक्रियाएँ होती हैं कि क्या यहाँ पर पर्युषण के बाद भी तपस्या का दौर जारी है क्या? कोई चन्द्रकला तप, कोई दस पच्चक्खाण आदि विविध तपोनुष्ठान में श्रद्धा से जुड़कर कर्म-निर्जरा कर रहे हैं। आठ से पन्द्रह की तपस्या के पच्चक्खाण लगभग 90 हो गये हैं, शतक ही ओर आगे बढ़ रहे हैं।

दर्शनार्थियों का आवागमन बराबर बना हुआ है। मेड़ता निवासी पलक पावड़े बिछाकर दिलोजान से अपनी मधुर वाणी व अपनत्व भरे व्यवहार से हर दर्शनार्थी का दिल जीत रहे हैं। दर्शनार्थी यहाँ के आवास-निवास एवं आतिथ्य सत्कार से प्रभावित हैं।

संघ मंत्री हस्तीमल जी डोसी प्रवचन सभा का सुन्दर संचालन कर श्रोताओं के मन को सन्तुष्ट कर संघ की शोभा में श्री वृद्धि कर रहे हैं।

महासती-मण्डलों के चातुर्मास में धर्माराधन

बांदनवाड़ा- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में पर्युषण पर्वाराधन पूर्ण उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया। 31 दिवसीय, 16 दिवसीय तप के साथ 3 पन्द्रह दिवसीय, 3 नौ दिवसीय, 4 आठ दिवसीय, 5 पचोले, 5 चोले, 50 तेले, 25 बेले, 200 एकासन, 70 आयम्बिल एवं 300 उपवास की तपस्या छोटे से क्षेत्र में

सम्पन्न हुई। धर्मचक्र, पचरंगी आदि की आराधना भी सम्पन्न हुई है। 30 बालक-बालिकाएँ सामायिक सूत्र सीख चुके हैं। प्रतिक्रमण, 25 बोल, भक्तामर, वीरत्थुई आदि सीख रहे हैं। आयम्बिल, एकासन एवं उपवास की लड़ी चल रही है।

धनोप- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में पर्युषण के पश्चात् भी छोटी-छोटी तपस्याएँ चल रही हैं। पालडेचा परिवार में अभी दो अठाई एवं दो तेले के पारणे हुए हैं। रविवार को सामूहिक 55 एकासन हुए। एक रविवार को 15-20 भिक्षूदया हुई। कविता जी पालडेचा के सिद्धि तप चल रहा है। श्री प्रकाश जी संकलेचा-जयपुर तथा श्री ज्ञानचन्द जी जैन ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है।

कोयम्बतुर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में चातुर्मास के प्रारम्भ से ही अपूर्व उत्साह बना हुआ है। धर्माराधना के प्रति सभी तत्पर हैं। 3 जुलाई से 27 जुलाई तक 24 तीर्थंकर की आराधना व 20 बोलों की साधना के अन्तर्गत 56 बहिनों ने भाग लिया। इसके समापन समारोह के अवसर पर संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, श्रावकरत्न श्री ज्ञानराज जी मेहता-बैंगलोर, श्री बालचन्द जी बोथरा-कोयम्बतुर ने साधना करने वाली बहिनों का अभिनन्दन किया। 20 जुलाई को आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की 113वीं जयन्ती एकासन के पचोले से मनाई गई। 1 अगस्त को मरुधरकेसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. का 122वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। 9 से 11 अगस्त तक आयोजित शिविर में 130 महिलाओं ने ज्ञानार्जन किया। साध्वीश्री ने महिलाओं को बारह व्रत, लोक के स्वरूप तथा 25 क्रियाओं के विषय में विस्तार से जानकारी दी। 10 अगस्त को सुश्राविका चांदबाई जी खिंवसरा ने 31 उपवास के प्रत्याख्यान किए, जिनकी अनुमोदना में जयपुर, चेन्नई आदि अनेक स्थानों से महानुभाव उपस्थित हुए। 22 अगस्त को सामूहिक क्षमापना दिवस मनाया गया। सभा का संचालन संघ सचिव श्री भंवरलाल जी कोठारी ने किया। 9 सितम्बर को संस्कार-दीक्षा का आयोजन रखा गया, जिसमें लगभग 350 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इसमें साध्वी भाग्यप्रभा जी ने बालकों को सप्त कुव्यसन का त्याग, नवकार मंत्र से जीवन मंगल, जैनत्व के संस्कारों के प्रति निष्ठा के सम्बन्ध में विस्तार से प्रकाश डाला। बालक-बालिकाओं ने कुव्यसन नहीं अपनाने का संकल्प लिया। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही रविवार को दया एवं एकाशन की साधना होती है, जिसमें 100 से 150 की उपस्थिति बनी हुई है। चातुर्मास का सबसे बड़ा आकर्षण युवा वर्ग को है। युवावर्ग के लिए प्रातः 8 से 9 बजे तक 'एक कदम धर्म की ओर'

की कक्षा चलती है, जिसमें महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. सरल शब्दों में अनेक प्रकार के दृष्टान्तों से विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालते हैं। युवक-युवतियाँ सभी कार्यों को छोड़कर इस कार्यक्रम में विशेष लगन से आते हैं एवं जीवन में धर्म का महत्त्व समझ रहे हैं। दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। स्थानीय संघ आतिथ्य सत्कार हेतु तत्पर रहता है।

तिरुवन्नामल्लै- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही धर्माराधन एवं तपाराधन का ठाट लगा हुआ है। यहाँ पर दो मासखमण, एक आयम्बिल मासखमण, 10 एकासन मासखमण तथा दो बियासना मासखमण सम्पन्न हुए हैं। 9 नौ की तपस्या, 25 अठाई, 50 तेले, 5 पाँच की तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। 15, 11, 7, 6 एवं चार की तपस्याएँ भी पूर्ण हुई हैं। चातुर्मास प्रारम्भ से तेले एवं आयम्बिल की लड़ी गतिमान है। नवकार मंत्र का अखण्ड जाप पर्युषण पर्व पर सम्पन्न हुआ। पचरंगी एवं नवरंगी की तपस्याएँ भी सम्पन्न हुई हैं।

लासुर स्टेशन- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 की सन्निधि में चातुर्मास प्रवेश से ही तेले एवं आयम्बिल की लड़ी चल रही है तथा जाप का कार्यक्रम भी निरन्तर जारी है। एकासन के 17 मासखमण सम्पन्न हुए हैं। 31 सामूहिक तेले, 7 नौ उपवास, 2 अठाई, 3 ग्यारह उपवास, 1 सत्ताईस उपवास, पचोला तथा एकान्तर की साधनाएँ चल रही हैं। पाँच पचरंगी तथा 1 नवरंगी का आराधन हुआ है। पर्युषण में प्रतिदिन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, 4 दिनों तक बालकों का शिविर लगाया गया। प्रत्येक रविवार को शिविर का आयोजन होता है। पर्युषण बड़े उत्साह से मनाया गया। यहाँ पर ज्ञानाराधन का अच्छा वातावरण बना हुआ है। सुखविपाक, उत्तराध्ययन, नन्दी सूत्र, प्रतिक्रमण, नमिपवज्जा, वीरत्थुई आदि सीखने वालों की बहुत अच्छी संख्या बनी हुई है। दोपहर में महासती जी के सान्निध्य में सभी श्रावक-श्राविका लाभ उठा रहे हैं। ग्राम में महासती जी की प्रेरणा से संगठन का अच्छा रूप निखरा है, जिससे सभी प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

विज्ञान नगर, कोटा- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पर्युषण के पश्चात् 50 तेले, 2 पचोले, 7 अठाई, 2 नौ, 3 ग्यारह और एकासन की 26 अठाई सम्पन्न हुई है। श्रीमती मुन्नीदेवी धर्मसहायिका श्री नेमीचन्द जी जैन बाबई वाले के 31 दिवसीय मासखमण की तपस्या सम्पन्न हुई है। पूर के दिन कई लोगों ने 31 दिन रात्रि-भोजन का त्याग किया, किसी ने 31 दिन ब्रह्मचर्य पालन, किसी ने 31 दिन टीवी न देखने तथा किसी ने 31 दिन संवर करने के साथ ही 31 दिवसीय कई नियम ग्रहण किए। 13 सितम्बर को श्राविकाओं का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 50 श्राविकाओं ने भाग

लिया। 23 सितम्बर को भक्तामर स्तोत्र का जाप हुआ, जिसमें 400 लोगों ने भाग लिया। एक नवरंगी हुई।

जयपुर में रत्नसंघीय वीर परिवार सम्मान-समारोह का आयोजन सम्पन्न

98 परिवारों के 213 सदस्य सम्मानित

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा की अर्द्धशती वर्ष के पावन प्रसंग से गाँव-गाँव और नगर-नगर में स्व-प्रेरित भावना से त्याग-तप के आयोजन उत्साह पूर्वक चल रहे है। आचार्यश्री हीरा के जयपुर चातुर्मास में रत्नसंघ ने **22-23 सितम्बर, 2012** को वीर परिवार सम्मान-समारोह का दो-दिवसीय कार्यक्रम रखा, जिसमें देशभर के वीर परिवार सम्मिलित हुए।

वीर परिवार सम्मान-समारोह कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम दिवस **22 सितम्बर, 2012** को महावीर नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन की प्रवचन सभा में वीर परिवारजनों सहित पधारे हुए दर्शनार्थी बन्धुओं ने **जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल** के मुखारविन्द से पावन प्रेरणादायी प्रवचन श्रवण किया। सम्मान समारोह कार्यक्रम के संयोजक श्री आनन्दजी चौपड़ा ने वीर परिवारजनों एवं संघ सदस्यों का स्वागत करते हुए दो-दिवसीय वीर परिवार सम्मान-समारोह कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रवचन के पश्चात् युवक परिषद् जयपुर के उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने वीर परिवारजनों का पंजीकरण करने के साथ ही उन्हें बैज प्रदान किये। भोजन के पश्चात् संघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने अलग-अलग समूहों में वीर परिवारजनों से व्यक्तिगत विचार-विमर्श किया। प्रथम समूह में संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्री मोफतराजजी मुणोत एवं श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जयपुर के मंत्री श्री विमलचन्दजी डागा, द्वितीय समूह में शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी, तृतीय समूह में संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा एवं कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल तथा चतुर्थ समूह में कार्यक्रम के संयोजक श्री आनन्दजी चौपड़ा एवं युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा ने वीर परिवारजनों से व्यक्तिगत परिचय करते हुए संघहित में अमूल्य सुझाव प्राप्त किये।

अपराह्न अल्पाहार के पश्चात् प्रवचन हॉल में ही परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल के पावन सान्निध्य में वीर परिवारजनों का परिचय-सत्र रखा गया,

जिसमें सभी वीर परिवारजनों का परिचय प्राप्त हुआ। परिचय-सत्र के पश्चात् गुरुदेव का प्रेरणादायी उद्बोधन हुआ। गुरुदेव ने उद्बोधन देते हुए फरमाया कि साधना करने वाले सौभागी हैं एवं साधना में सहयोग करने वाले बड़भागी हैं। परिवार वाले पारिवारिक सदस्य को साधना मार्ग में आगे बढ़ने हेतु सहयोग करावें न कि उसमें रुकावट बनें। गुजरात के छोटे से बोरी गाँव में एक घर से तेरह दीक्षा हुई। "दादाजी गुड़ गये" मात्र इस एक वाक्य ने साधक का जीवन परिवर्तित कर दिया। यदि हम वीर बनकर स्वयं दीक्षा लें तो अति-उत्तम अन्यथा किसी को तैयार करते हैं तो भी दीक्षा की अनुमोदना का लाभ हमें प्राप्त हो सकता है। साधना-मार्ग में साधक को आगे बढ़ाने के लिये प्रयास करें एवं रोने की बजाय हँसते-हँसते आज्ञा प्रदान करें। आपने अभी परिचय-सत्र में देखा माँ स्वयं अपनी 6 साल की बच्ची व 10 साल के बच्चे को दशवैकालिकसूत्र सिखा रही है। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। ऐसे उदाहरण देखकर हमारा मन साधना के लिए तत्पर क्यों नहीं होता, चिन्तन का विषय है ?

23 सितम्बर, 2012 को प्रात: 9 बजे अणु विभा केन्द्र, गौरव टॉवर के सामने, मालवीय नगर, जयपुर में वीर परिवार सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित हुआ।

सम्मान समारोह में संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलालजी बाफना, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराजजी चौधरी, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराणा, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के जयपुर सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री सुरेशचन्दजी कोठारी, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी तथा आचार्यश्री के सांसारिक लघुभ्राता श्री प्रेमचन्दजी गाँधी, उपाध्यायश्री के सांसारिक बड़े भ्राता श्री भोपालचन्दजी सेठिया व सम्मान समारोह कार्यक्रम के संयोजक श्री आनन्दजी चौपड़ा ने मंच को सुशोभित किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ निशाजी मेहता, रितुजी लोढ़ा एवं सुमनजी ढड्ढा के मंगलाचरण से हुआ एवं श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना द्वारा संकल्प करवाया गया।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर की श्राविकाओं ने "मनड़ो फूल्यो नहीं समावे अब ये गीत खुशी रा गावे, अतिथि आया मारे आंगणे" स्वागत-गीत प्रस्तुत किया।

दीक्षा-समिति के संयोजक श्री कांतिलालजी चौधरी ने सम्मान-समारोह में

पधारे वीर परिवारजनों एवं संघ सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि मैं वीर परिवारजनों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपनी संतति को आज्ञा प्रदान कर रत्नसंघ में दीक्षित किया। संत-सतीवृन्द ने शुद्ध संयम पालन करते हुए संघ की गौरव-गरिमा को बढ़ाया है, उसमें आप वीर परिवारजनों का महनीय योगदान रहा है।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने सम्मान-समारोह आयोजन की भूमिका स्पष्ट करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम में पधारे वीर परिवारजनों के प्रति मैं नतमस्तक हूँ। आपने अपने पारिवारिकजनों को रत्नसंघ में संत-सती के रूप में समर्पित कर संघ का गौरव बढ़ाया। चतुर्विध संघ के संचालन में वीर माता-पिता की महती भूमिका रहती है। आचार्य हीरा एवं उपाध्याय मान की दीक्षा अर्द्धशती के अवसर पर रत्नसंघ ने वीर परिवार सम्मान-समारोह का आयोजन रखा। आप जैसे वीर परिवारों को पाकर संघ गौरवान्वित है। हम सबमें स्नेह एवं सौहार्द का भाव जगे तथा संघ की गौरव-गरिमा अभिवृद्धि हेतु हम-सब कृतसंकल्प रहें। सम्मान-समारोह की सफलता के लिए मैं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर, कार्यक्रम के संयोजक श्री आनन्दजी चौपड़ा एवं उनके सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम से यह सम्मान-समारोह सफल रहा। संघाध्यक्ष महोदय ने संघ द्वारा आयोजित आमसभा एवं बृहद् अधिवेशन की सूचना देते हुए संघ सदस्यों को दोनों कार्यक्रमों में पधारने हेतु आत्मीय निवेदन किया।

वीर परिवार सम्मान-समारोह के अवसर पर परम्परा के मूलपुरुष पूज्य श्री कुशलचन्दजी म.सा. से लेकर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. तक के शासनकालीन सन्त-सतीवृन्द के परिचय एवं पारिवारिक सम्पर्क सूत्रों सहित श्री राजेन्द्रजी जैन 'राजा' द्वारा सम्पादित **'अणगार' नामक पुस्तक का प्रकाशन संघ द्वारा किया गया।** माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत के कर-कमलों द्वारा अणगार पुस्तक का विमोचन किया गया।

सम्मान-समारोह में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर की ओर से 98 परिवारों के 121 पुरुष सदस्यों का माल्यार्पण से स्वागत एवं शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया। 92 महिला सदस्यों का चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान किया गया। प्रत्येक परिवार को अभिनन्दन-पत्र एवं स्मृति चिह्न सम्मान स्वरूप प्रदान किये गये।

पूर्व न्यायाधिपति माननीय श्री जसराजजी चौपड़ा ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं अभिभूत हूँ वीर पारिवारिकजनों के दर्शन करके। भगवान महावीर ने आचारांगसूत्र में कहा- **खणं जाणाहि पंडिए** अर्थात् जो क्षण को जानता है वह पण्डित

होता है। जिन्होंने क्षण को समझा है वे दीक्षित हो गये। मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ने वाली आत्माओं को दीक्षा की आज्ञा प्रदान कर आपने अपनी संतति को जिनशासन में समर्पित किया है जिसके लिए संघ आपका सदैव आभारी है। इसी क्रम में सुश्री सेहल जैन ने "संयम मुक्ति देता है" नामक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् आचार्यश्री के सांसारिक लघु वीरभ्राता श्री प्रेमचन्दजी गाँधी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्यप्रवर के जयपुर चातुर्मास में आप-हम-सभी दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लेते हुए आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर की दीक्षा अर्द्ध शताब्दी के पावन प्रसंग से त्याग-तप की आराधना कर रहे हैं। आप-हम-सब रत्नसंघ द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों में सकारात्मक सहयोग प्रदान करते हुए संघ के विकास में सहयोगी बनें। गाँधी साहब ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल जयपुर द्वारा की गई आवास-निवास-भोजन तथा यातायात सम्बन्धी सुन्दर व्यवस्था हेतु हार्दिक आभार व्यक्त किया।

उपाध्यायश्री के लघु वीरभ्राता श्री धनपतचन्दजी सेठिया ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि संघ ने आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के दीक्षा अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर वीर परिवार सम्मान-समारोह आयोजित कर हम-सब वीर परिवारजनों को आत्मीयता एवं अपनत्व प्रदान किया जिसमें लिए हम संघ के आभारी हैं। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एक दशक से राजस्थान के बाहर प्रवास कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न कर राजस्थान पधारे हैं। पाली, जोधपुर के सफल चातुर्मास के अनन्तर जयपुर का वर्षावास आनन्द पूर्वक चल रहा है। 04 मई, 2012 को परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का नागौर में दीक्षा का 50 वां वर्ष प्रारम्भ हुआ। उस समय हमने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा के साथ उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में त्याग-तप के संकल्प लिए हैं। वैसे ही परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 50 वां दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, दिनांक 19 नवम्बर, 2012 को उपस्थित हो रहा है। दोनों महापुरुषों की दीक्षा अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप की आराधना करते हुए संघहित में सेवा, संस्कार और संगठन में भूमिका व भागीदारी निभायें।

शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना ने अपने उद्गार व्यक्त करते कहा कि संयम रूपी वैभव की तुलना और किसी से नहीं की जा सकती। ज्ञानियों ने भी कहा है- **संयमः खलु जीवनम्** निश्चय में संयम ही जीवन है। संसार में दुःख ही दुःख है। सुखी होने के लिए आप और हम सभी संयम मार्ग अपनाएं।

संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत ने अपने उद्बोधन में कहा कि आप वीर परिवारजन सम्मान-समारोह में पधारे, उसके लिए संघ

आपका आभारी है। सम्मान समारोह वृहद स्तर पर पहली बार आयोजित किया गया है, जिसका मुझे प्रमोद है। कुछ वीर परिवारों से हम सम्पर्क न कर पाये, परन्तु भविष्य में सम्पर्क करने का हम प्रयास करेंगे। वैराग्य मार्ग में आगे बढ़ने हेतु कोई भी निमित्त काम आ सकता है। मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। उनसे यही शिक्षा पाई कि संयम संतों तक सीमित ना रहे, बल्कि श्रावकवर्ग भी संयम पालन में तत्पर रहे। अपने जीवन व्यवहार में भी संयम की झलक आनी चाहिये। आप वीर परिवारजनों का संघ के प्रति सहयोग एवं समर्पण अनुकरणीय रहा है।

माननीय मुणोत साहब ने निवेदन किया कि वीर परिवारजनों में से कोई गजेन्द्रनिधि का ट्रस्टी बनना चाहे तो संघ को खुशी होगी। उसी समय वीरपिता श्री अमरचन्दजी लोढ़ा-जोधपुर ने संघ को गजेन्द्रनिधि का ट्रस्टी बनने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी ने सुदूरवर्ती-समीपवर्ती क्षेत्रों से पधारे हुए सभी वीर परिवारों एवं संघ सदस्यों का जयपुर पधारने एवं कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप लोगों की व्यवस्था में किसी प्रकार की कमी रही हो तो जयपुर संघ उसके लिए क्षमाप्रार्थी है।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर द्वारा आवास-निवास, भोजन एवं यातायात आदि की आत्मीयतापूर्वक सुन्दर व्यवस्था रही।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर तथा श्री सुमतिचन्दजी मेहता-पीपाड़शहर द्वारा किया गया। आवश्यक सूचनाओं के प्रसारण के साथ हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ सम्मान-समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ।

वीर परिवार सम्मान-समारोह में परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के संसारपक्षीय भ्राता श्री प्रेमचन्द जी गांधी द्वारा अभिव्यक्त विचार

पंच परमेष्ठि देव को वन्दन!

शासनेश प्रभु महावीर को वन्दन!

प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के अनन्त गुणों का भावपूर्ण स्मरण कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं श्रद्धेय मुनि पुंगवों व महासती वृन्द के पावन श्री चरणों में सश्रद्धा-सभक्ति वन्दन, नमन, अभिनन्दन!

संघ संरक्षकगण, शासन सेवा समिति के सम्मानित सदस्यगण, संघाध्यक्ष महोदय,

संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारीगण!

जयपुर संघ के सुज्ञ श्रावकों, सुशील माताओं-बहिनों, युवारत्न साथियों एवं देश के कोने-कोने से पधारे वीर परिवारों के सदस्यगण!!

यह हमारा सौभाग्य है कि गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा का प्रदेश की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर का चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग, साधना-आराधना एवं व्रत-प्रत्याख्यानों के साथ संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के सक्रिय, सक्षम व स्वावलम्बी बनाने की दिशा में आचार्य श्री का चातुर्मास सफल चातुर्मास के रूप में गतिशील है।

चातुर्मास में संघनायक से ही नहीं, संत-सती वृन्द से प्रेरक व प्रभावी प्रवचनामृत का पान हम कर रहे हैं। आचार्य श्री का प्रदेश की राजधानी का यह वर्षावास समूचे प्रदेश में जन-जन के मन को प्रेरित कर रहा है।

वि.स. 2069 हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह वर्ष आचार्य श्री-उपाध्याय श्री दोनों महापुरुषों की दीक्षा का 50 वां वर्ष है। दीक्षा की अर्द्ध-शती के फलस्वरूप संघ - समाज में आबाल-वृद्ध सबमें त्याग-तप की भावना का संचरण होना सहज-स्वाभाविक परिणति है। गाँव-गाँव, नगर-नगर में और महानगरों में हमारे बन्धु स्व-प्रेरित आत्म उत्थान में आगे बढ़ रहे हैं। संघ के पदाधिकारीगण संघ सदस्यों में स्वस्थ स्पर्धा जगाने में सक्रिय हुए हैं।

हम संघ को संगठित करने में अपनी शक्ति का सदुपयोग करें, यह समय का तकाजा है, हमारी जरूरत है। संघ में राष्ट्रीय स्तर, क्षेत्रीय व स्थानीय स्तर पर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि के लिए विभिन्न प्रवृत्तियों और गतिविधियों का संचालन व्यवस्थित रूप से किया जाता है, वहीं श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के तत्त्वावधान में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो स्तुत्य हैं। इनमें आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा ज्ञानार्जन हेतु परीक्षाओं का आयोजन, स्वाध्याय संघ द्वारा स्वाध्यायी सेवा, युवक परिषद् द्वारा शिविरों का आयोजन, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा जिनवाणी पत्रिका एवं सत्साहित्य का प्रकाशन, विद्वत्परिषद् की पुनः सक्रियता, मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति आदि विशेषतः उल्लेखनीय हैं। धर्माराधन, तपाराधन एवं व्रताराधन के कार्यक्रम निरन्तर प्रगति की ओर हैं।

स्थानकवासी समाज संत-सतीवृन्द पर सदा से आश्रित रहा है। आज भी संघ-समाज में हम हमारे धर्माचार्य-धर्मगुरुओं से प्रेरणा लेते हैं। हम जब भी गुरु-चरण- सान्निध्य में जाते हैं। दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सेवा-भक्ति के लाभ के साथ व्रत-प्रत्याख्यान लेकर अपने जीवन को पावन-प्रशस्त करते हैं।

वीर परिवार सम्मान समारोह पहली बार 2001 में जोधपुर में आयोजित हुआ, तब से

मैं इस ऊहापोह में रहा कि क्या मैं इस सम्मान का पात्र हूँ और आज मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मैं इस योग्य नहीं हूँ। यह सम्मान अगर पूज्य पिताजी श्री मोतीलालजी गांधी जिन्होंने अपने सुपुत्र को जिनशासन सेवा में सहर्ष समर्पित किया एवं मेरी पूज्या माताजी श्रीमती मोहनी देवी को दिया जाता, जिनके अद्वितीय गुण आचार्य हीरा में परिलक्षित होते हैं तो श्रेष्ठ था, पर वे अब सशरीर इस दुनिया में नहीं हैं। मैंने अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री शांतिलालजी को निवेदन किया, पर प्रथमतया स्वीकारोक्ति करते हुए भी उस धीर गंभीर मितभाषी मान-अपमान में एकरूपता रखने वाले को यह स्वीकार नहीं हुआ कि वे इस समारोह में सम्मिलित हों। मैं अपने भावों की अभिव्यक्ति करने के लिये इस मंच पर खड़ा हूँ, जिसके लिये मैं आप सबसे क्षमाप्रार्थी हूँ।

सम्मेलन मिलने का सशक्त माध्यम है। हम सब वीर परिवारजन ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में आगे बढ़ें, संघ-सेवा, संत-सेवा, श्रुत-सेवा में उतरोत्तर गति-प्रगति करें और हम हमारे परिवारजनों में से जिनकी भावना संयम की ओर यत्किंचित हो रही है, उस भावना को सम्बल देकर बढ़ायें।

मैं संघ संरक्षक-मण्डल के चेयरपर्सन संघ-सेवा शिरोमणि माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलाल जी बाफना, संघाध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा का आभारी हूँ, साथ ही जयपुर श्री संघ के पदाधिकारियों, सेवाभावी एवं उत्साही कार्यकर्ताओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हमारे आवास-भोजन एवं परिवहन जैसी सभी सुविधाएँ तो उपलब्ध कराई ही, हमें अपनत्व देकर हमारा मन जीता है, इसका हम सबको प्रमोद है।

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के संसारपक्षीय भ्राता श्री धनपतजी सेठिया द्वारा अभिव्यक्त विचार

(प्रारम्भिक सम्बोधन के अंश पूर्ववत्)

बन्धुओं!

मैं अपनी बात आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के अंतिम चातुर्मास पाली से प्रारम्भ करता हूँ। आचार्य भगवन्त कहा करते थे कि- "मेरी ये दोनों भुजाएँ मजबूत हैं।" आचार्य भगवन्त ने अपनी शासन व्यवस्था में संघनायकत्व का दायित्व पं. रत्न श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को प्रदान किया, वहीं रत्नसंघ में पहली बार उपाध्याय पद सृजित कर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का मनोनयन करके संघ-व्यवस्था में दोनों महापुरुषों को महत्त्व दिया, वह उस दिव्य-दिवाकर की दूरदृष्टि कहें तो उसमें कोई अतिशयोक्ति जैसी

बात नहीं है।

बन्धुओं! आज रत्नसंघ में वीर परिवार सम्मान-समारोह का आयोजन है। इसके पहले भी जोधपुर में 9 सितम्बर 2001 को वीर परिवार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। हमारे संघ में वीर परिवारजनों के लिए संघ के शीर्ष पदाधिकारियों की सकारात्मक सोच है उसी की यह शुभ परिणति है कि जयपुर में संघ के बृहद् अधिवेशन के पूर्व वीर परिवार सम्मान समारोह का अलग से आयोजन रखा गया। मैं संघ के शीर्षजनों की सोच के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

हम संघ-स्तर पर जो भी समारोह करते हैं वह संघ को ऊँचाइयों पर ले जाता है। हर अधिवेशन या सम्मेलन महज जन समुदाय को एकत्रित करने के लिए नहीं किया जाता।

वीर परिवार सम्मान-समारोह से हम अधिकतर परिवार एक स्थान पर एक साथ हैं इससे हमारा प्रेम तो बढ़ता ही है, परस्पर एक दूसरे को एक दूसरे की निकटता का अनुभव भी होता है।

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एक दशक राजस्थान के बाहर प्रवास कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न कर राजस्थान पधारे हैं। पाली-जोधपुर के सफल चातुर्मास के अनन्तर जयपुर का वर्षावास आनन्दपूर्वक चल रहा है। इस वर्ष हम आचार्य श्री, उपाध्यायश्री की दीक्षा-अर्द्धशती मना रहे हैं।

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को हुई और इस वर्ष 4 मई 2012 को नागौर में दीक्षा का 50 वां वर्ष प्रारम्भ हुआ, हमने दर्शन-वन्दन, प्रवचनश्रवण, सत्संग-सेवा के साथ उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में त्याग-तप के प्रति संकल्प लिए हैं, ले रहे हैं, ऐसे ही परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 19 नवम्बर, 2012 को उपस्थित हो रहा है।

आचार्य श्री एवं उपाध्याय श्री हमारे गुरु हैं। हम गुरु-चरण-सन्निधि में रहकर जीवन-निर्माण की कला सीखते हैं। हम गुरु से ज्ञान अर्जित करें, लेकिन ज्ञान के साथ सेवा, संस्कार और संगठन में भूमिका व भागीदारी निभाने के लिए भी तैयार रहें।

बन्धुओं! आचार्य श्री एवं संत-सतीवृन्द प्रवचन के माध्यम से हमारा पथ-प्रदर्शन तो करेंगे ही, मैं वीर परिवार के सम्मानित सदस्यगणों से विनम्र अनुरोध करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि हमारे परिवार से जैसे श्रमण-श्रमणी प्रव्रजित हुए, हम वैसा कर सकें वह तो सर्वश्रेष्ठ हैं, पर यदि हम दीक्षित न हो सकें तो संघ-सेवा, संत सेवा, श्रुत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में अपने पुरुषार्थ को प्रकट करें। हम संवर-साधना, ज्ञानाराधना, तपश्चर्या में

अधिक से अधिक सक्रिय बनाएँ। संघ को संगठित बनाए रखने में हम हमारी शक्ति जगायें। हमारे जो भी भाई हमसे कुछ अपेक्षा रखें हम पूरी करें, पूरी करवाने में सहयोग करें।

संघ हमारा सम्मान करता है। हम सम्मान पाकर संघ के प्रति और अधिक सक्रियता से जुड़ें। स्वयं से जितना बन सके, करें। परिवार में, इष्ट-मित्रों में, सगे-सम्बन्धियों में, आस-पड़ौस में, गांव-नगर में, संघ-दीप्ति में कोई कसर नहीं रखें, तभी हम आबाद-वृद्ध सबका प्रेम पा सकेंगे।

बन्धुओं! मैं जयपुर संघ के साथ व्यवस्था में सहयोग प्रदान करने वाले गुरु भ्राताओं का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ कि आपने हमें यहाँ बुलाया आचार्यश्री एवं संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति का अवसर प्रदान किया।

मैं अंत में सभी वीर परिवारजनों से विनम्र निवेदन करना चाहूँगा कि आप-हम संघ के अभिन्न अंग हैं, हम संघ की जाहोजलाली के लिए तन-मन-धन से और समर्पित भाव से आगे आयें, इसी मंगलमय भावना के साथ स्थान ग्रहण करता हूँ।

संघ की साधारण सभा का आयोजन 21 अक्टूबर 2012 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा रविवार, दिनांक 21 अक्टूबर, 2012 को दोपहर 1 बजे सुबोध कॉलेज, रामबाग सर्किल, जयपुर में रखी गई है, जिसमें सभी संघ सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक साधारण सभा की सूचना अपने गुरुभ्राताओं को पहुँचाने के साथ उनसे निवेदन भी करें कि वार्षिक आमसभा में भाग लेकर संघहित में अपना सकारात्मक सहयोग व रचनात्मक योगदान प्रदान करें। वार्षिक साधारण सभा में आगामी तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए संघाध्यक्ष, मण्डल अध्यक्ष, श्राविका मण्डल अध्यक्ष एवं युवक परिषद् अध्यक्ष का मनोनयन/ चुनाव किया जाना प्रस्तावित है।

साधारण सभा में भाग लेने पर परम श्रद्धेय परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 तथा व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 12 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा का लाभ प्राप्त होगा। -*पूरणराज अखानी, महामंत्री*

रत्नवंशीय परिवारों का बृहद् अधिवेशन 17-18 नवम्बर को

रत्नवंशीय परिवारों का बृहद अधिवेशन शनिवार-रविवार 17-18 नवम्बर, 2012 को सुबोध महिला कॉलेज, बुद्धसिंहपुरा, सांगानेर एयरपोर्ट के पास, जयपुर में रखा गया है। इसी अवसर पर गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह भी आयोजित होगा। दो-दिवसीय कार्यक्रम में समस्त रत्नसंघीय परिवार पहुँचें, एतदर्थ अभी से आप संघ के श्रावक-श्राविकाओं एवं युवकों को बृहद् अधिवेशन की जानकारी प्रदान तो करें ही, अधिक-से-अधिक परिवारजन अधिवेशन में पधारकर उसे सफल बनाने में अपनी सार्थक भागीदारी प्रदर्शित करें। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का 50 वां दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, सोमवार, 19 नवम्बर, 2012 को समुपस्थित हो रहा है। हम आचार्यप्रवर की दीक्षा की अर्द्धशती के शुभारम्भ पर त्याग-तप के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित कर गुरुभक्ति का परिचय दें, एतदर्थ आप संघ के आबाल-वृद्ध सभी सदस्यों को बृहद् अधिवेशन में भाग लेने व व्रत-नियम की श्रद्धा अर्पित करने की प्रेरणा करें।

आपके ग्राम-नगर-महानगर से कितने सदस्यों के बृहद् अधिवेशन में भाग लेने की संभावना है, समाचार जयपुर के सम्पर्क-सूत्र के पते पर देने की कृपा करें।

सम्पर्क सूत्रः-

चातुर्मास स्थलः- *सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, सेन्ट्रल बैंक की गली, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.) फोनः-1. पूछताछ कार्यालय-0141-3101991, 2. श्री विनयचन्द जी डागा- 93145-06509, 3. श्री आनन्द जी चौपड़ा-75686-20000, 4. श्री नरपतचन्द जी सिंघवी- 0141-2553416/98297-93416*

जयपुर में अध्यात्म चेतना शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 31 अगस्त से 2 सितम्बर, 2012 को त्रिदिवसीय अध्यात्म-चेतना शिविर का आयोजन सामायिक स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में किया गया, जिसमें राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि प्रदेश के ग्राम-नगरों से 450 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस शिविर में प्रबुद्ध अध्यापकों द्वारा ज्ञानार्जन करवाया गया।

शिविर में आचार्यप्रवर एवं सन्तों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। श्री दिनेश जी एवं सीमा जी भंसाली-बैंगलोर, तरूण जी बोहरा-चेन्नई, श्री पदमचन्द जी गांधी, डॉ. सुषमा जी सिंघवी, श्री आनन्द जी चौपड़ा, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, श्री दिलीप जी जैन, श्री जितेश

जी जैन एवं श्री राकेश जी जैन आदि की सेवाएँ प्राप्त हुईं।

शिविर का समापन 2 सितम्बर, 2012 को प्रातः 11 बजे रखा गया। शिविर के समापन-समारोह में श्रीमती लाडकंवर जी चौधरी, अध्यक्ष राज्य महिला आयोग, मुख्य अतिथि थी। विशिष्ट अतिथि चातुर्मास समिति के संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत थे। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती मधु जी सुराणा, अध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने की। श्रीमती मंजुलाजी बम्ब, निदेशक-अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, कार्याध्यक्ष श्रीमती मंजू जी भण्डारी, श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा, महासचिव श्रीमती शशि जी टाटिया, कोषाध्यक्ष श्रीमती कमला जी सुराणा, श्रीमती उर्मिला जी बोथरा, अध्यक्ष श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का शिविर में पूरा सहकार रहा। समापन समारोह में श्री अनन्तजी सेठ, अध्यक्ष श्री जैन रत्न युवक परिषद्, संभागीय प्रधान श्री सुरेशचन्द जी कोठारी आदि भी उपस्थित थे।

समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती लाडकंवर जी चौधरी ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अध्यात्म शिविर में जो आपने ज्ञानार्जन किया है वह अपने बच्चों को बांटना चाहिये। श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने अपने उद्‌बोधन में कहा सर्वप्रथम हमें अपने गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित होना चाहिए। हमारी युवा पीढ़ी व्यसन मुक्त रहे, इसका भी प्रयास करना चाहिये। प्रतिवर्ष 5-6 महिला ऐसी तैयार हों जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्वाध्यायी बनकर पर्युषण में सेवाएँ प्रदान करें।

श्रीमती मधु जी सुराणा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज हमारे बच्चे व्यसन और फैशन की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। यदि हम बहिनें अपने बच्चों की ओर ध्यान देंगी तो अच्छा रहेगा। हमने इस शिविर में जो भी नियम ग्रहण किये हैं और सीखा है, आगामी शिविर में उससे आगे बढ़ना है। श्रीमती मंजू जी भण्डारी व श्रीमती शशि जी टाटिया ने शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों, अध्यापकों को तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर को आवास-निवास-भोजन व यातायात व्यवस्था हेतु हार्दिक आभार व्यक्त किया। युवक परिषद् अध्यक्ष श्री अनन्त जी सेठ ने सुदूरवर्ती-समीपवर्ती क्षेत्र से पधारे शिविरार्थियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप लोगों की व्यवस्था में किसी प्रकार की कमी रही हो तो जयपुर संघ उसके लिए क्षमाप्रार्थी है। समापन समारोह कार्यक्रम का संचालन शिविर संचालिका श्रीमती मोहनकौर जी जैन ने किया।

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

'स्वप्निका' पुस्तक का विशेष प्रकाशन एवं प्रतियोगिता

आत्म बंधुओं !

जिनशाासन जयवन्त है। जिनशासन में आराधना करने के अनेक आयाम हैं। आराधना के क्षेत्र में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप के अनुष्ठान हैं, तो दान, शील, संघ-सेवा, त्याग-वैराग्य, भक्ति-भाव का भी प्रभाव है।

गुरु भक्ति को जागृत करने का सुनहरा अवसर हमें उपलब्ध हुआ है। इस उपलब्ध हुए अवसर पर चौदहवें गुणस्थान की पूर्णता को पूर्ण कर सिद्धि-प्राप्त करने वाले, चौदह रज्जु लोक के अग्रभाग पर स्थित होने वाले तीर्थंकर भगवन्तों की माताएँ चौदह स्वप्नों को देखकर स्वयं में धन्यता का अनुभव करती हैं।

उन्हीं तीर्थंकर भगवन्तों के शासन को जयवन्त रखने वाले, शासन नायक, पंचाचार पालक, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं आत्मार्थी, शान्त-दान्त गंभीर, पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के **दीक्षा अर्द्धशताब्दी के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी, श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, स्वप्निका** नामक पुस्तक प्रस्तुत कर रहा है।

इसमें ज्ञान का गुंजन, दर्शन का अंजन, चारित्र का चन्दन, तप का आत्म-रंजन है, तो दान की दिव्यता, शील की पवित्रता, सेवा की सौरभ, भावों की भव्यता, भक्त की विनम्रता, नियमों की नियमितता भी प्रस्फुटित हो रही है। प्रस्तुत पुस्तक में आबाल वृद्ध सभी भाग लेकर -

- चौदह स्वप्नों का अर्थ व फल जानें
- चौदह नये नियम पालन की ओर अग्रसर हों
- नियमों के निमित्त से निज में निमग्न बनें
- साधना के माध्यम से साध्य साधें

और इस वर्ष को त्याग-तप एवं साधना-आराधना से मनायें इसी मंगल मनीषा से ..

स्वप्निका पुस्तक में पथ है, पाथेय है, प्रेरणा है, प्रोत्साहन है, पुरस्कार है।
जरूरत है पुरुषार्थ करके,पूर्णता की ओर अग्रसर होने की।

अनमोल-अद्वितीय-आह्लादकारी पुस्तिका विषयक ज्ञातव्य तथ्य :-

वितरण तिथि	-	19 नवम्बर 2012
परीक्षा तिथि	-	10 नवम्बर 2013
पुस्तिका मूल्य	-	20/-

प्रथम पुरस्कार-अविस्मरणीय पुरस्कार, **द्वितीय पुरस्कार**-अद्वितीय पुरस्कार, **तृतीय पुरस्कार**-अलौकिक पुरस्कार, **चतुर्थ पुरस्कार**-अचंभित पुरस्कार(11 प्रतिभागियों को), **पुरस्कारों की घोषणा उचित समय पर।**

पुस्तक प्राप्ति स्थान-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान न. 182 के उपर, बापू बाजार, जयपुर (राज.), फोन -0141-2575997,2570753

प्रतियोगिता समिति-श्री नमन मेहता (संयोजक)-9414116766, डॉ. मंजुला बम्ब-9314292229, श्रीमती उर्मिला बोथरा-9314501856, श्रीमती पूर्णिमा लोढा-9829019396, श्रीमती मीना गोलेछा-9314466039

बीकानेर में सुराणा स्वाध्याय भवन का उद्घाटन

2 सितम्बर 2012, रविवार को बीकानेर में धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री इन्द्रमल जी सुराणा (सी.ए.) के परिवार द्वारा निर्मित 'सुराणा स्वाध्याय भवन' का उद्घाटन अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने किया। इस स्वाध्याय भवन (स्थानक) के लिए इन्द्रमल जी सुराणा परिवार द्वारा ही जमीन खरीदी गई और इसी परिवार ने पूर्णतया अपने निजी व्यय से भव्य स्थानक भवन निर्माण करवाया। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के बीकानेर क्षेत्र में विचरण के दौरान धर्म-ध्यान, त्याग-तपस्या और व्रत-प्रत्याख्यान का ठाट लग गया था। शेखेकाल में भी मासखमण, अठाई आदि तपस्याओं की लड़ी लग गई थी तथा पर्युषण जैसा माहौल बन गया था।

'मोक्षमार्ग प्रवचन' पर पुरस्कार प्रतियोगिता 2012

आगमज्ञाता तपस्वीरत्न श्री उदयमुनि जी महाराज द्वारा रचित 'मोक्षमार्ग प्रवचन' द्वितीय संस्करण 2008 पर प्रश्नावली प्रकाशित की गई है। प्रवचन ग्रन्थ एवं प्रश्नावली स्वाध्याय के लक्ष्य से निःशुल्क उपलब्ध करायी जा रही है। उत्तर-पत्रक (OMR Sheet) जमा कराने की अन्तिम तिथि 5 नवम्बर, 2012 (सायं 5 बजे तक) है। पुरस्कार 20 नवम्बर तक घोषित कर दिए जायेंगे तथा 25 नवम्बर को समारोह में प्रदान किए जायेंगे। पुरस्कार राशि इस प्रकार है- (1) प्रथम पुरस्कार- 50 हजार रुपये, (2) द्वितीय पुरस्कार- 25 हजार रुपये, (3) तृतीय पुरस्कार- 10 हजार रुपये, (4) चतुर्थ पुरस्कार (तीन को)-

प्रत्येक 5000 हजार रुपये, (5) प्रोत्साहन पुरस्कार (पचास को) प्रत्येक 1 हजार रुपये, (7) सांत्वना पुरस्कार (सौ को) प्रत्येक 500 रुपये। कुल पुरस्कार 156 एवं पुरस्कार राशि 2 लाख रुपये। ग्रन्थ प्राप्ति स्थान- भारत जारोली, जारोली भवन, नीमच (म.प्र.) फोनः 93010-38314, फैक्स- 07423-224966, ईमेल- bharat_jaroli@rediffmail.com

दिल्ली, भीलवाड़ा, जयपुर एवं जम्मू से भी पुस्तक एवं प्रश्नावली प्राप्त की जा सकती है।

संक्षिप्त-समाचार

चेन्नई- सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटोर्नीज, चेन्नई को 'इण्टरनेशनल फाइनेन्सियल लॉ रिव्यू 2011 की रिपोर्ट के अनुसार 'लॉ फर्म ऑफ दि ईयर' घोषित किया गया है। एशिया चैम्बर्स, एशिया पेसिफिक लीगल 500 आदि ने इसे भारत की लॉ फर्मों में उच्च स्थान पर रखा है।

सूरत- उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 34 वां जैन करियर काउंसलिंग कार्यक्रम 24 अगस्त 2012 को सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग 400-500 छात्रों ने भाग लेकर दिशा बोध प्राप्त किया।

पीपाड़- श्री ओसवाल लोहड़े साजन संघ की ओर से प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें कक्षा अष्टम से प्रोफेशनल सी.ए. तक के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया।

न्यूयार्क- पर्युषण पर्व पर सभी सम्प्रदायों ने सन्त श्री रूपचन्द जी के सान्निध्य में सौहार्दपूर्ण वातावरण में धर्माराधन कर एक आदर्श प्रस्तुत किया। श्री विजय जी बैद ने ग्यारह, श्रीमती पीयू अंकुरजी जैन ने अठाई और श्रीमती सोनल जी बरडिया ने तपस्या की। सांवत्सरिक प्रतिक्रमण श्रीमती मनीषा जी बैद और डिम्पल जी जैन द्वारा करवाया गया। समस्त धार्मिक गतिविधियों के संचालन में श्री अन्नूभाई हीरावत, श्री अमित जी बिरानी, श्री सुनील जी डागा, श्री मुन्ना जी कर्नावट और श्रीमती रश्मिजी कर्नावट का विशेष योगदान रहा। स्थानक में हर माह के द्वितीय रविवार को सामूहिक सामायिक की जाती है, जिसमें सभी सम्प्रदाय के लोग बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। इसका श्रेय श्री शरद जी सिंघवी एवं श्रीमती श्वेता जी अतुल जी कोठारी को जाता है। संवत्सरी प्रतिक्रमण में लगभग 225 व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कई लोगों ने संवत्सरी पर मौन उपवास एवं अन्य धार्मिक आराधना की।

-मुन्नाजी कर्णावट

बधाई/चुनाव

नागपुर- प्रोफेसर डॉ. भागचन्द्र जैन 'भास्कर' को पालि-प्राकृत-जैनधर्म-बौद्धधर्म के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के उपलक्ष्य में 'महामहोपाध्याय' विरुद से कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 11 अगस्त, 2012 को सम्मानित किया गया। डॉ. जैन को श्रीफल, शाल, सम्मान-पत्र तथा 51001/- रुपये की राशि भेंटकर सम्मानित किया गया। इसके पूर्व डॉ. जैन को जैन वर्ल्ड. कॉम की ओर से सम्मानपत्र और 31000/- की राशि प्रदान कर 'जैन रत्न' उपाधि से विभूषित किया गया। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. जैन वर्तमान में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में जैन-दर्शनपीठ के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।

जयपुर- प्रो. संजीव भानावत, अध्यक्ष, जन संचार केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के जैन अनुशीलन केन्द्र का मानद् निदेशक नियुक्त किया गया है। गत तीन दशकों से मीडिया शिक्षण से जुड़े प्रो. भानावत ने देश-विदेश में अनेक राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में सहभागिता की है। वे 13 वर्षों से 'मीडिया त्रैमासिकी'' कम्यूनिकेशन टुडे का संपादन कर रहे हैं।

उदयपुर- युवा कवयित्री रेनू सिरोया को बैतूल स्थित मध्यप्रदेश लेखक संघ की ओर से ''साहित्य सरिता सम्मान'' प्रदान किया गया।

दातिया,अलवर- आशीमा जैन सुपुत्री श्री सुरेशचन्द्र-कुमुद जी जैन, जयपुर ने NIRMA UNIVERSITY AHMEDABAD से B.Com L.L.B. (Hons.) द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त कर गोल्ड मैडल प्राप्त किया है। आपने 19-25 मार्च, 2012 को HongKong (SAR) में आयोजित नवें Willem C. Vis (East) International Commercial Arbitration Moot प्रतियोगिता में निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद का प्रतिनिधित्व किया।

जोधपुर- श्री धीरज डोसी सुपुत्र श्री नेमीचन्द जी डोसी ने जैन सोशियल सोसायटी, चेन्नई द्वारा आयोजित ''आज के समाज में युवाओं का योगदान एवं उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों का महत्त्व'' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनको पुरस्कार के रूप में 21000 रुपये की राशि दी गई।

जयपुर- चि. सिद्धार्थ सुपुत्र ममता-रवीन्द्र पोखरना एवं सुपौत्र श्री शान्तिलाल पारस पोखरना ने मेन्टल अरियमेटिक एबेक्स प्रतियोगिता में राज्य में प्रथम स्थान तथा अखिल

भारतीय स्तर पर दसवां स्थान प्राप्त किया।

सी.ए. उत्तीर्ण

सवाईमाधोपुर–श्री अंकित कुमार जैन सुपुत्र श्री अनोखचन्द जी जैन (पचाला वाले) ने सी.ए. (फाइनल) की परीक्षा प्रथम श्रेणि में उत्तीर्ण की।

श्रद्धाञ्जलि

बालोतरा- श्री भूपतराज जी सालेचा सुपुत्र स्व. श्री राणमल जी सालेचा का स्वर्गवास 15 सितम्बर, 2012 को 62 वर्ष की उम्र में हो गया। आपने 2009 में आचार्य श्री के बालोतरा प्रवास पर सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया था। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति श्रद्धावनत है।

जयपुर- धर्मप्रिय सुश्रावक श्री भोपाल सिंह जी बरड़िया सुपुत्र स्व. श्री उमराव सिंह जी

बरड़िया (रूपनगढ़ वाले) का 70 वर्ष की आयु में 14 अगस्त 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप सहज, सरल, सहृदय, धर्म-परायण एवं नेकदिल इन्सान थे। आप धर्म-क्षेत्र में भी अग्रणी थे। आप नियमित दो सामायिक करते थे। आपके रात्रि-भोजन का भी त्याग था। आपकी नेत्रदान की हार्दिक इच्छा थी, जिसका सम्मान कर परिवार जनों ने नेत्रदान करवाया। आप अपने पीछे धर्म सहायिका जनतदेवी एवं तीन सुपुत्रों आदि का संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- धर्माराधिका सुश्राविका श्रीमती विमला जी लोढ़ा (अन्तरबाईसा) धर्मपत्नी स्व.

श्री गोविन्दमल जी लोढ़ा का स्वर्गगमन 15 सितम्बर 2012 को हो गया। आपका जीवन धर्म से अनुप्राणित एवं त्यागमय था। आप श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं समस्त सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। नियमित सामायिक के साथ प्रतिदिन 100 माला फेरती थीं।

हीरादेसर- अनन्य गुरु भक्त सुश्रावक श्री लालचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री नथमल जी बोथरा का अकस्मात् स्वर्गवास 71 वर्ष की आयु में 24 जुलाई, 2012 को हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा भक्ति थी। हीरादेसर में कई वर्षों से आपका घर ही जैनों के घरों में खुला रहता था। साधु-संतों की सेवा में आप आगे रहते थे। आप मिलनसार स्वभाव के थे। प्रतिदिन सामायिक करने का नियम था एवं कई वर्षों से ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे थे। आप अपने पीछे चेन्नई में सुपुत्र श्री पारसमल जी, लीलमचन्द जी बोथरा सहित

भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सुरेश जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री शिवनारायण जी भण्डारी

का देहावसान 3 अगस्त 2012 को हो गया। आपका जीवन सरलता, सादगी एवं श्रद्धा भक्ति से ओतप्रोत था। आप मिलनसार, भजनप्रिय एवं निष्कपट प्रवृत्ति के श्रावक थे। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

बालोतरा- श्रीमती बिदामीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री दौलतराज जी बागमार का प्रयाण 29

अगस्त, 2012 को 70 वर्ष की आयु में हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक, त्याग-प्रत्याख्यान करती थीं। आपकी संसार पक्षीय पुत्री विवेक श्री जी म.सा. (साध्वी श्री) आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. के संघ में दीक्षित हैं। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के बालोतरा चातुर्मास में पूरे परिवार ने सेवा का लाभ लिया एवं आचार्य भगवन्त के बालोतरा शेषकाल में पधारने पर भी सेवा-भक्ति की।

मदनगंज-किशनगढ़- श्री हेमराज जी संचेती पुत्र स्व. श्री माणकचन्द जी संचेती

(गूलरवाले) का 75 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। आप देव, गुरु और धर्म के प्रति आस्थावान सुज्ञ श्रावकरत्न थे। आप प्रतिदिन सामायिक व स्वाध्याय करते थे। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा सन्त-सती मण्डल के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी धर्मसहायिका श्रीमान् प्रसन्नमलजी लोढ़ा का

स्वर्गवास 4 सितम्बर, 2012 को हो गया। आप नित्य सामायिक करती थीं। आप व्यवहार में शांत, शालीन, गुणानुरागी एवं प्रसन्नचित्त श्राविकारत्न थीं। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। आपके पति श्री प्रसन्नमल जी लोढ़ा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्यालय-प्रभारी रहे। श्राविका के मरणोपरान्त नेत्र दान किए गए।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती सुन्दरदेवी जी श्रीमाल का 3 सितम्बर 2012 को देवलोकगमन हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त श्राविका का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आप नियमित समायिक-स्वाध्याय की साधना करती थीं। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-

भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहती थीं। श्रीमाल परिवार संघ-सेवा, स्वधर्मी-वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में सदैव अग्रणी रहता है। आप अपने पीछे पुत्र श्री नेमीचन्द जी, पुखराज जी, गौतमचन्द जी श्रीमाल का परिवार छोड़कर गई हैं।

अजमेर- सेवा कार्यों में समर्पित सुश्रावक श्री उदयलाल जी कोठारी का 18 अगस्त 2012 को 92 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे दृढ़प्रतिज्ञ व्रतधारी श्रावक थे। प्रतिदिन 8-10 सामायिक करते थे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् रोगियों की सेवा, असहाय व गरीबों की सहायता को उन्होंने अपना प्रमुख कार्य बना लिया था। वे 80 वर्ष की अवस्था तक पर्युषण पर्वाराधना में अठाई तप करते रहे थे। उनका नैतिक जीवन गांधी जी के आदर्शों पर आधारित था। सत्य, अहिंसा को उन्होंने जीवन में जिया। उनके दोनों सुपुत्र सुभाषचन्द जी एवं जवाहरलाल जी कोठारी भी उन्हीं का अनुकरण करते हुए सामाजिक कार्यों में अपना समय दे रहे हैं।

सवाईमाधोपुर- सुश्रावक श्री नरेन्द्र मोहन जी जैन का 85 वर्ष की आयु में 29 जुलाई 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप मधुर व्यवहारी एवं दृढ़निश्चयी श्रावक थे। आप नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति समर्पित श्रावकरत्न का जीवन श्रद्धानिष्ठ रहा।

जयपुर- सुश्रावक श्री घीसीलाल जी सुपुत्र स्व. श्री इन्दरचंद जी सुखलेचा 28 सितम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. व आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आप सभी सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप अन्तिम दिन तक भी नियमित रूप से स्थानक जाकर सतीवृन्दों के प्रवचन का श्रवण करते रहते थे।

अजमेर- धर्मानुरागी सुश्रावक श्री धर्मीचन्द जी सुराणा का 14 अगस्त, 2012 को पुरानी मण्डी स्थित (मसूदा हवेली) जैन स्थानक के अकस्मात् ढह जाने से पौषधव्रत में समाधिमरण हो गया। आप सरल प्रकृति वाले एवं तप-आराधना में रुचि रखने वाले श्रावक थे। आपका प्रतिदिन सामायिक स्वाध्याय कर साधु-संतों की सेवा का लक्ष्य रहता था। आपकी रत्नसंघ के प्रति निष्ठा थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

744 श्री नरेन्द्रजी पीतलिया, विदिशा (मध्यप्रदेश)
745 श्री धनरूपचंदजी मेहता, बेंगलोर (कर्नाटक)
746 श्री पंकजजी गाँधी, कल्याण (पश्चिम), ठाणे (महाराष्ट्र)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

14002 श्री सुनील कुमारजी बम्ब, मूँदी, खण्डवा (मध्यप्रदेश)
14005 श्री हेमन्त कुमारजी बम्ब, बुहारी, तहसील-वालोड़, जिला-वापी (गुजरात)
14006 श्री कमलेश कुमारजी बाफणा, बुहारी, तहसील-वालोड़, जिला-वापी (गुजरात)
14007 श्री हिरेन कुमारजी रातड़िया, गोरधा, तहसील-वालोड़, जिला-वापी (गुजरात)
14008 श्री विवेकजी भंसाली, रेलवे अस्पताल के पास, जोधपुर (राजस्थान)
14009 श्री आदेशजी बाफणा, दाणा बाजार, पोस्ट-जालना (महाराष्ट्र)
14019 श्री किशोरजी गुन्देचा, लालो कॉलेज रोड़, एरण्डवने, पुणे (महाराष्ट्र)
14025 श्रीमती आभाजी दलाल (एडोवकेट), वल्लभ नगर, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
14026 श्री अशोकजी सिंघी, आर.वी. देसाई, प्रताप नगर, बड़ौदा (गुजरात)
14056 श्री सागरचंदजी जैन, ए-691, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14057 श्रीमती उषा किरणजी जैन, सत्यसांई कॉलेज रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14058 श्री श्रीपालचंदजी सुराणा, 43/45/07, स्वर्ण पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
14059 श्री दीपकजी सुराणा, किसान मार्ग, बरकत नगर, जयपुर (राजस्थान)
14126 Smt. Beenaji Jain, Dhakali, Thane (W), Mumbai (M.H.)
14128 Shri Shrenik J. Parakhji, Fort, Mumbai (M.H.)
14131 Shri Rishab Kumarji Jain, Sawaimadhopur (Raj.)
14132 Shri Gautam Chandji Bomb, Madanganj, Distt. Ajmer (Raj.)
14134 Dr. Reenaji Jain, Near Ghoddod Road, Surat (Gujarat)
14154 Shri Sanjayji Bohra, Goregaon (W), Mumbai (M.H.)
14201 श्री विनयचंदजी चोरड़िया, डी 361, मालविय नगर, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14211 Shri Hiteshji Jagirdar, Halol (PMS) (Gujarat)
14220 डॉ. शंकरमलजी सिंघवी, सी-168, शास्त्रीनगर, पोस्ट-जोधपुर (राजस्थान)
14309 Shri Parasji Jain, Maruti Colony, Bellary (Karnataka)
14312 डॉ. मदनजी कोठारी, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, उदयपुर (राजस्थान)
14313 श्री नवनीतजी जारोली, 'मंगलम्', 444, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.)

250/-(अर्द्धमूल्य योजना) जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता

श्री प्रसन्नचंदजी, पुनवानचंदजी, हस्तीमलजी, लिलमचंदजी, शांतिलालजी ओस्तवाल, भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई के सौजन्य से

13996 श्री पलक कुमारजी संचेती, पोस्ट ऑफिस के पास, माउण्ट आबू, सिरोही (राज.)

13997 श्रीमती अंजलीजी लूणावत, संत दानेश्वर मार्ग, मालूण्डा, मुम्बई (महाराष्ट्र)
13998 श्रीमती निधिजी संचेती, 105, प्रताप नगर, जोधपुर (राजस्थान)
13999 श्री देवेन्द्रजी धारीवाल, वृदांवन विहार, डी.सी.एम. अजमेर रोड़, जयपुर (राज.)
14000 श्री अशोकजी गोगड़, प्रताप नगर, सिंघी धर्मशाला के पास, जोधपुर (राज.)
14001 श्री बलवंतसिंहजी सिसोदिया, पी.जी. कॉलेज के सामने, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
14003 श्री रघुकुलजी जैन, एयरटेल टॉवर के पास, बाड़मेर (राजस्थान)
14004 Shri Rajendrarajji Bhandari, Chennai (Tamilnadu)
14010 श्री मुदित कुमारजी ललवाणी, सरदारपुरा बी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14011 श्री विक्रमजी ललवाणी, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, 17 ई, जोधपुर (राजस्थान)
14012 श्री विराटजी भंसाली, गुंदी का मौहल्ला, नवचौकिया, जोधपुर (राजस्थान)
14013 Shri Jineshji Jain, 5th Phase, Bangalore (Karnataka)
14014 Shri Rohitji Singhavi, Kharadi, Pune (M.H.)
14015 Shri Maneshji Mehta, Bangalore (Karnataka)
14016 Shri Mohitji Mehta, Essal Steel Hazira, Surat (Gujarat)
14017 श्री सुरेशचंदजी जैन (अध्यापक), भरतपुर (राजस्थान)
14018 श्री महेशचंदजी जैन, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)
14020 श्री प्रकाशचंदजी लुणावत, इचलकरंजी, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
14021 Shri Sohanlalji Roonwal, Bijapur (Karnataka)
14022 Shri Jitendraji Roonwal, Bijapur (Karnataka)
14023 Shri Teekamchandji Roonwal, Bijapur (Karnataka)
14024 श्रीमती कल्पनाजी काँसवा, राधाविहार कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर (राजस्थान)
14027 सुश्री प्रगतिजी श्रीमाल, स्वाध्याय भवन के पास, मेड़तासिटी, नागौर (राज.)
14028 श्री शांतिलालजी भंडारी, मेन मार्केट, रीयाबड़ी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14029 श्री अशोक कुमारजी जैन, गगराणा, जिला-नागौर (राजस्थान)
14030 श्री शांतिलालजी डागा, मकान नं. 1233, सेक्टर 14, फरीदाबाद (हरियाणा)
14031 Shri Panmalji Maioo, Canning Street, Kolkatta (W.B.)
14032 श्री जसकरणजी बोथरा, बोथरा चौक, गंगाशहर, बीकानेर (राजस्थान)
14033 Shri Sujeet Kumarji Sipani, Silchar, Cochhar (Assam)
14034 श्री अजीतजी चोरड़िया, भैरवनाथ रोड़, मणिनगर, अहमदाबाद (गुजरात)
14035 श्री ताराचंदजी तातेड़, टंकी के पास, मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14036 श्री ललितजी बोथरा, माणक चौक, मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14037 श्री हेमन्तजी जैन (लोढ़ा), पंचरत्ना बिल्डिंग, ओपेरा हाउस, मुम्बई (महाराष्ट्र)
14038 श्री सवाईलालजी कांकरिया, नाहरों का धड़ा, मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राज.)
14039 श्री शोभगमलजी लोकपाल, रीया बड़ी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14040 Shri Sohanlalji Mehta, Bangalore (Karnataka)
14041 Shri M. Kantilalji Tater, Chennai (Tamilnadu)
14042 श्री किशनलालजी बाफणा, पोस्ट-उमरगाँव, जिला-वलसाड़ (गुजरात)
14043 Shri Vinay Kumarji Roonwal, Bijayapur (Karnataka)

14044 श्री राजेन्द्र कुमारजी बुफ्क्या, लिमडा वास, खाचरौद, जिला-उज्जैन (मध्यप्रदेश)
14045 श्री राजेन्द्र कुमारजी नाहटा, विक्रम मार्ग, खाचरौद, जिला-उज्जैन (मध्यप्रदेश)
14046 श्री महावीरचंदजी कांकरिया, पोस्ट-भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14047 श्री शांतिलालजी कांकरिया, अजमेर रोड़, बिलाड़ा, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14048 श्री महेन्द्र कुमारजी जोगड़, गेलड़ा का बास, बोरावड़ (मकराना), जिला-नागैर (राज.)
14049 श्री निहालचंदजी चोरड़िया, मेवाड़ी गेट के बाहर, ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.)
14050 श्री दीपचंदजी जैन, हरसाना, तहसील-लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर (राजस्थान)
14051 श्री राजेशजी संचेती, चैतन्य नगर, बगीचा के सामने, जामनेर (महाराष्ट्र)
14052 Shri Mahaveer Chandji Barundia, Chennai (Tamilnadu)
14053 Smt. Padamkalaji Tater, Chennai (Tamilnadu)
14054 Shri Kumkum Academy, Chennai (Tamilnadu)
14055 Shri Vinay Chandji Bagmar, Chennai (Tamilnadu)
14060 श्री भरत कुमारजी छाजेड़, तालेगाँवदाभडे स्टेशन, जिला-पूणे (महाराष्ट्र)
14061 श्रीमती मिनलजी भंडारी, 568, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14062 श्री धर्मचंदजी मेहता, ओसवाल कॉलोनी, दूदू, जिला-जयपुर (राजस्थान)
14063 श्रीमती सुनीताजी कर्णावट, जय किशन कॉलोनी, टोंक फाटक, जयपुर (राज.)
14064 श्री मोहनलालजी संचेती, चिखलाकला, जिला-बालोद (छत्तीसगढ़)
14065 श्रीमती तिलकसुंदरीजी जैन, रामंदिर कोलार रोड़, भोपाल (मध्यप्रदेश)
14066 श्रीमती प्रेमजी सचदेवा, ई रोड़, नेहरू पार्क के पास, जोधपुर (राजस्थान)
14067 श्री शम्भूलालजी चिथड़, सेक्टर-14, गगनदेवी मंदिर, वासी, नईमुम्बई (महाराष्ट्र)
14068 श्री शांतिलालजी लुणावत, मुणोत नगर, ब्यावर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14069 श्री यशजी भंडारी, देवनगर, पाल लिंक रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14070 श्री राजेश कुमारजी लुणावत, विवेकविहार, न्यूसांगानेर रोड़, सोड़ाला, जयपुर (राज.)
14071 Smt. Madhuji, Jermiah Road, Chennai (Tamilnadu)
14072 Smt. Sunitaji Gothi, Bapat Nagar, Chandrapur (M.H.)
14073 Smt. Nidhiji Barthia, Near Chhaoni, Nagpur (M.H.)
14074 डॉ. गणतंत्रजी मेहता, बाहुबली पथ, जनपथ, श्यामनगर, जयपुर (राजस्थान)
14075 श्री चैनराजजी मेहता, गौतम बाग सोसायटी पालड़ी, अहमदाबाद (गुजरात)
14076 श्री शैलेन्द्रजी मेहता, बापूनगर, पेट्रोल पम्प के सामने, भीलवाड़ा (राजस्थान)
14077 श्री दिलीप कुमारजी पीपाड़ा, 35, नगर पालिका कॉलोनी, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
14078 श्री प्रकाशचंदजी चौपड़ा, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14079 श्रीमती रतनदेवीजी ढ़ाबरिया, बैंक के सामने, मालवीयनगर, जयपुर (राजस्थान)
14080 Smt. Anjuji Jain, Sowcarpet, Chennai (Tamilnadu)
14081 श्री शांतिकुमारजी भंडारी, झालरापाटन, जिला-झालावाड़ (राजस्थान)
14082 श्री राजेन्द्र कुमारजी मेहता, झालारापाटन, जिला-झालावाड़ (राजस्थान)
14083 श्री मेघकुमारजी कोठारी, शांतिनगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)
14084 श्री विनोदजी जैन, उत्तमनगर, सीएफसीएल, गढ़ेपान, कोटा (राजस्थान)
14085 Alishaji Mehta, Bapu Nagar, Jaipur (Rajasthan)

14086 Shri Nareshji Shah, Kumbakonam (Tamilnadu)
14087 Shri Dinesh Kumarji Bohra, Kumbakonam (Tamilnadu)
14088 Shri B. Mithalalji Challani, Kumbakonam (Tamilnadu)
14089 Shri Praveenji Surana, Kumbakonam (Tamilnadu)
14090 Smt. Kantabaiji Surana, Kumbakonam (Tamilnadu)
14091 Shri Basantji Surana, Big Street, Kumbakonam (Tamilnadu)
14092 Shri Harishji Sethia, Big Street, Kumbakonam (Tamilnadu)
14093 Shri Rameshji Sethia, Big Street, Kumbakonam (Tamilnadu)
14094 डॉ. अंजनाजी गोयल सबरवाल, मेन रोड़, 22 गोदाम करतारपुरा, जयपुर (राज.)
14095 Smt. Saritaji Jain, Kinari Bazar, Delhi (Delhi)
14096 Smt. Shrutiji Seth, HO CHI Mina Sarani, Kolkatta (W.B.)
14097 श्रीमती (डॉ.) अंजनाजी बैराठी, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14098 श्री हर्षजी सकलेचा, राजा पार्क, आदर्श नगर, जयपुर (राजस्थान)
14099 Smt. Ansuji Jain, Boriwali West, Mumbai (M.H.)
14100 श्री नरेन्द्र कुमारजी गुप्ता, किंग रोड़, निर्माण नगर, जयपुर (राजस्थान)
14101 श्री प्रेमचंदजी जैन, रॉयल्टी मार्ग, फेस-3, झालाना, जयपुर (राजस्थान)
14102 श्री आशीषजी जैन, पुरोहितजी का कटला, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
14103 श्री महेन्द्रसिंहजी पोखरणा, मुणोत कॉलोनी, ब्यावर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14104 श्री विजेन्द्रजी पोखरणा, शिवमंदिर के पीछे, किशनगढ़, जिला-अजमेर (राज.)
14105 श्री विमलजी पगारिया, देव डूंगरी रोड़, किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14106 श्री राजेश कुमारजी खवाड़, ओसवाली मौहल्ला, किशनगढ़, जिला-अजमेर (राज.)
14107 Shri Vimleshji Surana, Chennai (Tamilnadu)
14108 Shri Narendramalji Surana, Chennai (Tamilnadu)
14109 श्री भंवरलालजी सुराणा, गाँव-सेवकीकल्ला, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14110 श्री संजीव कुमारजी जैन, मलपुरा, आगरा (उत्तरप्रदेश)
14111 श्री ओमप्रकाशजी जैन, गंगापुरसिटी, जिला-जयपुर (राजस्थान)
14112 श्री रामेशजी नवलखा, ग्राण्ड गीजगढ़, हवा सड़क, जयपुर (राजस्थान)
14113 श्री मुकेशचंद जी जैन (प्रधानाध्यापक), गंजखेरली, जिला-अलवर (राज.)
14114 श्री रोशनलालजी जैन, पोस्ट-गंजखेरली, जिला-अलवर (राजस्थान)
14115 Shri M. Ayushji Jain, Turukuilur, (Tamilnadu)
14116 श्री त्रिलोकचंदजी लोढ़ा, किंग्स रोड़, निर्माण नगर, जयपुर (राजस्थान)
14117 श्री राजेन्द्र कुमारजी जैन, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14118 श्री राजेन्द्रजी जैन, स्टैट बैंक के सामने, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)
14119 श्री सत्यप्रकाशजी जैन, नहर रोड़, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14120 श्री जगदीश प्रसादजी जैन, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राजस्थान)
14121 श्री शैलेशजी लुणावत, पोस्ट-आसेगाँव (देवी), जिला-यवतमाल (महाराष्ट्र)
14122 श्री सुभाषचंदजी जैन, पोमिट सी-8, सेक्टर-8, रोहिणी, नई दिल्ली (दिल्ली)
14123 श्री गौतमसिंहजी जामड़, आजाद नगर, मदनगंज, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14124 श्री ज्ञानचंदजी मुणोत, किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राजस्थान)

14125 श्री प्रकाशचंदजी मोगरा, डी-553, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14127 Shri Dharmeshji Shah, Vadodra, (Gujarat)
14129 श्रीमती जतनदेवीजी बम्ब, पुरानी टोंक, टोंक (राजस्थान)
14130 Shri Ajit Kumarji Jain, Palam, New Delhi (Delhi)
14133 Shri Mahendra Kumarji Jain, Sawaimadhopur (Raj.)
14135 Shri N. Mahavir Chandji Mutha, Chennai (Tamilnadu)
14136 Shri M. Navratanmalji Solanki, Chennai (Tamilnadu)
14137 Shri Gyan Chandji, Chepak, Chennai (Tamilnadu)
14138 Shri Shantilalji Sakhlecha, Chennai (Tamilnadu)
14139 Shri Rajkumarji Gandhi, Bajaj Nagar, Jaipur (Raj.)
14140 Shri Prashan Chandji Surana, Chennai (Tamilnadu)
14141 Shri Indar Chandji Surana, Chennai (Tamilnadu)
14142 Shri Rikhab Chandji Lodha, Chennai (Tamilnadu)
14143 Shri Kapoor Chandji, Chennai (Tamilnadu)
14144 Shri Mangilalji Chajed, Chepak, Chennai (Tamilnadu)
14145 Shri Devi Chandji Sanklecha, Chennai (Tamilnadu)
14146 Shri Mahaveer Bhavan, Chennai (Tamilnadu)
14147 Shri N. Vinodji Nahar, Chennai (Tamilnadu)
14148 Shri Pradeep Kumarji Chordia, Chennai (Tamilnadu)
14149 Shri Ramesh Kumarji Vinaykia, Chennai (Tamilnadu)
14150 Shri Shohanlalji Vinayakia, Chennai (Tamilnadu)
14151 Shri Tara Chandji Sanklecha, Chennai (Tamilnadu)
14152 Shri Ashok Kumarji Jamad, Chennai (Tamilnadu)
14153 Shri Katariya ji, CNK Road, Chennai (Tamilnadu)
14155 Smt. Hemaliji Jain, Pondichery (Tamilnadu)
14156 Smt. Ritu Kumariji Jain, Coimbatore (Tamilnadu)
14157 Smt. Nitu Kumariji Todarwal, Bangalore (Karnataka)
14158 Smt. Priti Kumariji Raysoni, Bangalore (Karnataka)
14159 Shri Priyesh K. Mehta, Coimbatore (Tamilnadu)
14160 Shri Mahavir Prasadji Choradia, Madanganj, Ajmer (Raj.)
14161 Shri P. Priyankji Lodha, Andheri (W), Mumbai (M.H.)
14162 श्री गिरीशजी जैन, बी-54, कीर्तिनगर, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14163 श्री हर्ष कुमारजी जैन, एफ-73, वैशाली नगर, जयपुर (राजस्थान)
14164 Smt. Preetiji Bagmar, Bangalore (Karnataka)
14165 Smt. Ratanlalji Khabiya, Paota, Jodhpur (Rajasthan)
14166 Shri Rajendra Kumarji Khabiya, Chennai (Tamilnadu)
14167 Shri Virendraji Ostwal, Chennai (Tamilnadu)
14168 Shri K. Prakash Chandji Ostwal, Jodhpur (Rajasthan)
14169 Shri Pravinji Daga, Kilpauk, Chennai (Tamilnadu)

14170 श्रीमती पुष्पाजी नाहर, प्रेम मंदिर, हाथी भाटा, अजमेर (राजस्थान)
14171 श्रीमती सब्बरजी सुराणा, कायस्थ मौहल्ला, राजोरिया गली, अजमेर (राजस्थान)
14172 श्रीमती कल्पनाजी नाहर, मदार गेट के अन्दर, अजमेर (राजस्थान)
14173 श्रीमती रचनाजी चौधरी, पंचौली चौराहा, रामनगर, अजमेर (राजस्थान)
14174 श्रीमती सुशीलाजी पोकरना, बी-174, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14175 श्री राजेशजी मूथा (एडवोकेट), दुर्गापुरा, जयपुर (राजस्थान)
14176 Smt. Pappyji Chhajed, Sainthia, Virbhum (W.B.)
14177 Shri Priyanshji Bhandari, Pratap Nagar, Jaipur (Raj.)
14178 श्री रमेश कुमारजी, वर्द्धमान नगर, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राजस्थान)
14179 श्री रामस्वरूपजी गुप्ता (नेताजी), डेम्प रोड़, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राज.)
14180 श्री चंचल कुमारजी जैन, एमआईडीसी, जलगाँव (महाराष्ट्र)
14181 श्री महावीरमलजी भंडारी, श्याम नगर थाने के पीछे, जयपुर (राजस्थान)
14182 डॉ. अभय कुमारजी नाहर, इनकमटैक्स कॉलोनी, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14183 श्री नीतेश कुमारजी जैन, अग्रवाल फॉर्म, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14184 डॉ. के. एल. पोकरणाजी, बी-174, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14185 श्रीमती मंगलाजी संघवी, काठेगल्ली, द्वारका, नाशिक (महाराष्ट्र)
14186 श्रीमती तारामतीजी ओस्तवाल, गणेशनगर, काठे लेन, द्वारका, नाशिक (महाराष्ट्र)
14187 श्रीमती उषाजी लोढ़ा, मुम्बई नाका, नाशिक (महाराष्ट्र)
14188 श्रीमती भारतीजी मंडलेचा, जय वर्धमान सोसायटी, बिब्बेवाड़ी, पुणे (महाराष्ट्र)
14189 श्रीमती शशिकलाजी लूणावत, काठे लेन, द्वारका, नाशिक (महाराष्ट्र)
14190 श्री शांतिलालजी पाड़लेचा, पोस्ट-धनोप, जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान)
14191 श्री मदनसिंहजी भाटी, मु.पोस्ट-बारनी खुर्द, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14192 श्री झमकलालजी गादिया, ऋषिनगर, मु.पोस्ट-उज्जैन (मध्यप्रदेश)
14193 श्री राजेशजी मेहता, 73, आजाद नगर, मु.पोस्ट-उज्जैन (मध्यप्रदेश)
14194 श्री लोकेशजी जैन, मु.पोस्ट-समीधी, तहसील-नैनवाँ, जिला-बूंदी (राजस्थान)
14195 श्री संजयजी जैन, अन्धेरी ईस्ट, पोस्ट-मुम्बई (महाराष्ट्र)
14196 श्री मोहितजी मेहता, पी-9, ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14197 श्री राजेशजी डूँगरवाल, लाल बहादुर शास्त्री कॉलोनी, पोस्ट-लातूर (महाराष्ट्र)
14198 श्री अमितजी कोठारी, क्रोसिंग रिपब्लिक, मु.पोस्ट-गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)
14199 Shri Aashisji Kothari, Post-Silvasa (Dadar Haveli)
14200 श्री महावीरजी कुमट, सब्जी मंडी के पास, ब्यावर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14202 Smt. Rooplataji Jargad, Johari Bazar, Jaipur (Raj.)
14203 Shri Mahendrarajji Lunawat, Pal Road, Jodhpur (Raj.)
14204 Smt. Manishji Abbani, High Court Road, Jodhpur (Raj)
14205 Smt. Kavitaji Abbani, High Court Road, Jodhpur (Raj.)
14206 Dr. Rameshji Mayank, Meera Nagar, Chittorgarh (Raj.)
14207 Shri Prakash Chandji Gandhi, Chennai (Tamilnadu)
14208 श्री पारस कुमारजी जैन, गोपालपुरा बाईपास, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)

14209 श्रीमती कमलाजी कुम्भट, 128, भगत की कोठी, पोस्ट-जोधपुर (राजस्थान)
14210 श्री पंकज जी बोहरा, ग्रेन वुड सिटी सेन्टर 45, पोस्ट-गुडगाँव (हरियाणा)
14212 श्री केशरचंदजी मेहता, जोधरा रोड़, पोस्ट-हालोल, जिला-पंचमहल (गुजरात)
14213 श्री अशोक कुमारजी पारख, 9वी सूर्या कॉलोनी, रेजीडेंसी रोड़, जोधपुर (राज.)
14214 श्री अंकित कुमारजी भंडारी, 18/833, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)
14215 श्री जागृतिजी ओस्तवाल, पोस्ट-सिल्लोड़, जिला-औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
14216 श्री मनोहरलालजी बागरेचा, आम्रपाली के सामने, पोस्ट-बडोदरा (गुजरात)
14217 श्री मोहनलालजी जैन, पोस्ट-भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14218 श्री मनोज कुमारजी बोथरा, पोस्ट-भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14219 श्री चंदनमलजी चोरड़िया, पोस्ट-चांगाटोला, जिला-बालाघाट (मध्यप्रदेश)
14221 श्री एम. एस. राठौरजी, न्यू बीजेएस कॉलोनी, लक्ष्मी नगर, जोधपुर (राजस्थान)
14222 कुमारी निमिशाजी लुणावत, गयाधुआ वार्ड, स्टेशन गंज, सिंहपुर (मध्यप्रदेश)
14223 Smt. Meenaji Jain, New Hyderabad, Lucknow (U.P.)
14224 Shri Rohanji Jain, Ghatabillod, Distt. Dhar (M.H.)
14225 श्री मनोजजी संचेती, मनोहर मार्केट के पीछे, पोस्ट-नाशिक (महाराष्ट्र)
14226 डॉ. मोतीलालजी ओस्तवाल, पोस्ट-भडगाँव, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14227 श्री संजय कुमारजी लूँकड़, पोस्ट-भडगाँव, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14228 श्री प्रमोद कुमारजी चोरड़िया, पोस्ट-भडगाँव, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14229 श्री लखीचंदजी रांका, पोस्ट-हिंगणे-खुर्द, जिला-पूना (महाराष्ट्र)
14230 श्री अनिल कुमारजी पगारीया, शिवराम नगर, पोस्ट-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14231 श्री राजमलजी चोरड़िया, मेन रोड़, पोस्ट-भडगाँव, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14232 डॉ. अशोकजी ओस्तवाल, पोस्ट-भडगाँव, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14233 श्री मदनलालजी टाटिया, पोस्ट-जगदलपुर, जिला-बस्तर (छत्तीसगढ़)
14234 Shri Padam Chandji Kawad, Chennai (Tamilnadu)
14235 श्री निर्मल कुमारजी जैन, चाँदपोल बाजार, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14236 श्री प्रकाशजी बैद, शांति नगर, दुर्गापुरा, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14237 श्री अनिल कुमारजी छाजेड़, बरकत नगर, टोंक फाटक, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14238 श्री महेन्द्रजी कोठारी, 3-ड-22, जवाहर नगर, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14239 Shri Ramesh Chandji Kawad, Chennai (Tamilnadu)
14240 श्री विनोद कुमारजी भड़कत्या, पोस्ट-सरवाड़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14241 Shri Prakash Chandji Bohra (Jain), Chennai (Tamilnadu)
14242 श्री अशोकजी जैन, 37/93, रजतपथ, मानसरोवर, पोस्ट-जयपुर (राजस्थान)
14243 श्री सुदीप कुमारजी जैन, पुराना बस स्टैण्ड रोड़, भोपालगढ़, जोधपुर (राजस्थान)
14244 श्री महावीरचंदजी सुराणा, इण्डस्ट्रियल एरिया, मकराना, जिला-नागौर (राज.न)
14245 Shri Nitinji Singhvi, Bangalore (Karnataka)
14246 Shri Rajendra Kumarji Mandot, Surat (Gujarat)
14247 श्री नवीनजी कांकरिया, राधाकिशना टैक्सटाईल्स मार्केट, रिंग रोड़, सूरत (गुजरात)
14248 श्री निहालचंदजी जैन, आर्शीवाद पार्क, सिटी लाईट, पोस्ट-सूरत (गुजरात)

14249 श्री जयराजजी जैन, सीटी लाइट, पोस्ट-सूरत (गुजरात)
14250 श्री ताराचंदजी कोठारी (घोड़े वाले), ईड़वा, नागौर (राजस्थान)
14251 श्री अशोकजी भंसाली, पोस्ट-मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14252 श्री सचिनजी बागरेचा, महाराजा कॉम्पलैक्स, शिरपुर, धुलिया (महाराष्ट्र)
14253 श्री (कृपया स्वयं का नाम भिजवाये), आनन्दपुर, कालु, जिला-पाली (राजस्थान)
14254 श्री निखिलजी सुराणा, इन्द्राविहार कॉलोनी, न्यू पावरहाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)
14255 श्री कपिलजी पटवा, जी सेक्टर, शास्त्रीनगर, पोस्ट-जोधपुर (राजस्थान)
14256 श्री विपिन कुमारजी बाफणा, शाहपुर, पोस्ट-कालाभे, जिला-थाने (महाराष्ट्र)
14257 श्री सुरेश कुमारजी संकलेचा, पोस्ट-देवला, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14258 श्री विकासजी सराग, गाँव-रलियावता, जिला-नागौर (राजस्थान)
14259 श्रीमती शोभाजी बाँठिया, बड़वा रोड़, पोस्ट-नाशिक (महाराष्ट्र)
14260 सौ.कां. सारिकाजी सुराणा, लोहगढ़ गॉर्डन के पीछे, भागरवाड़ी (महाराष्ट्र)
14261 श्री घेवरचंदजी सुराणा, इंदिरा नगर, पोस्ट-नाशिक (महाराष्ट्र)
14262 श्री मनीषजी कोचेटा, कृषि उपज मंडी के आगे, पोस्ट-इन्दौर (मध्यप्रदेश)
14263 श्री प्रसन्नचंदजी चोरड़िया, लोढ़ों का मौहल्ला, मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)
14264 Shri Subhashji Betala, T Nagar, Chennai (Tamilnadu)
14265 सौ.कां. सुमनजी गटागट, मेन रोड़, माधवनगर, जिला-सांगली (महाराष्ट्र)
14266 श्री सुखलालजी रूणवाल, बीएलडीई हॉस्पिटल रोड़, पोस्ट-बीजापुर (कर्नाटक)
14267 Shri Ajayji Jain, Ring Road, Surat (Gujarat)
14268 श्री धर्मचंदजी जैन, रामपुरा, छोटी महारानी स्कूल के पास, कोटा (राजस्थान)
14269 श्री गणेशमलजी कांकरिया, पोस्ट-गगराना, जिला-नागौर (राजस्थान)
14270 श्री महेन्द्र कुमारजी मेहता, रूपनगर रोड़, मदनगंज, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14271 श्री चम्पालालजी कोठारी (एडवोकेट), मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14272 श्री महेन्द्रजी जैन, पोस्ट-चौथ का बरवाड़ा, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14273 श्री मनोज कुमारजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14274 श्री सुशील कुमारजी जैन (कांकरिया), निझर, जिला-तापी (व्यारा) (गुजरात)
14275 श्री मोहनलालजी ललवानी, मेन रोड़, पोस्ट-खापर, जिला-नन्दुरबार (महाराष्ट्र)
14276 श्री सुरेशजी पगारिया, न्यू हाउसिंग बोर्ड, शास्त्री नगर, भीलवाड़ा (राजस्थान)
14277 श्री गौतमचंदजी जैन, स्टेशन रोड़, पोस्ट-कोटा (राजस्थान)
14278 श्री सुरेश कुमारजी जैन, महाराणा प्रताप कॉलोनी, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राज.)
14279 श्री राजमलजी जैन, पोस्ट-कोटा (राजस्थान)
14280 श्री अचलजी जैन, यशवन्त निवास रोड़, पोस्ट-इन्दौर (मध्यप्रदेश)
14281 श्री जीतमलजी जैन, जैन नमकीन भंडार, 4, जेल रोड़, पोस्ट-इन्दौर (मध्यप्रदेश)
14282 Shri Ratanlalji Dhoka, Main Road, Yadgiri (Karnataka)
14283 Shri Mahaveerji Srisrimal, Chennai (Tamilnadu)
14284 Shri Vinayji Roonwal, Opp. Ram Mandir, Bijapur (Karnataka)
14285 Shri Nathmalji Roonwal, Post-Bijapur (Karnataka)
14286 Smt. Hemlataji Pipada, Post-Bijapur (Karnataka)

14287 Shri Mahaveerji Roonwal, Post-Bijapur (Karnataka)
14288 Shri Ajay Kumarji Roonwal, SS Road, Bijapur (Karnataka)
14289 Shri Nikhalji Roonwal, Solapur Road, Bijapur (Karnataka)
14290 श्री भावेशजी बाँठिया, 625, दादाबाड़ी विस्तार योजना, कोटा (राजस्थान)
14291 श्री अनिल कुमारजी जैन, 64/322, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर (राजस्थान)
14292 श्री पारसचंदजी जैन, 79/129, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14293 श्री सुशीलजी मेहता, विवेक विहार, श्यामनगर, जयपुर (राजस्थान)
14294 श्री राकेश कुमारजी पगारिया, टैक्सटाईल टॉवर, रिंग रोड़, सूरत (गुजरात)
14295 श्री किस्तूरमलजी गांग, 14/401, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)
14296 श्री बंशीलालजी वैदमुथा, बसंत साड़ी सेन्टर, त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राज.)
14297 Shri Shyamji Modi, Rajbhavan Road, Hyderabad (A.P.)
14298 श्री कमलजी लोढ़ा, 376, चौथी सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)
14299 श्री कार्तिकजी जैन, 94, पाल बालाजी मंदिर के पीछे, जोधपुर (राजस्थान)
14300 श्री नवीनजी वडेर, पोस्ट-वडेर, तह.-मालाखेडा, जिला-अलवर (राजस्थान)
14301 डॉ. अशोकजी सिंघवी, ए/33, प्रथमविस्तार, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राज.)
14302 श्री राजेश कुमारजी जैन, 65/2, गली नं. 2, माली मौहल्ला, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
14303 श्री हरीशजी जैन, 37/120, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14304 श्री चन्दनजी जैन, बी-5, अरिहंत नगर, गुरु का तालाब रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14305 Shri Chiragji Mehta, Bhayandar (W), Mumbai (M.H.)
14306 श्री प्रमोदजी जैन, नरेन्द्र मार्ग, गुलाबबाड़ी, आर्य समाज रोड़, कोटा (राजस्थान)
14307 श्री उत्तमसिंहजी कर्णावट, केजीबी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
14308 Shri Bimal Kumarji Surana, Choole, Chennai (Tamilnadu)
14310 Shri Parasmalji Jani (MA), Tindivanam (Tamilnadu)
14311 श्री अर्चितसिंहजी चौधरी, 7-क-19, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
14314 Shri Manishji Jain, Amlator, Chennai (Tamilnadu)
14315 श्री मीठालालजी जैन, पानी की टंकी के पास, जैतारण, जिला-पाली (राजस्थान)
14316 श्री भीकमचंदजी जैन, साँखला हास्पिटल के पास, जैतारण, जिला-पाली (राज.)
14317 श्री सोहनराजजी लोढ़ा, पीडब्ल्यूडी रोड़, सोजतसिटी, जिला-पाली (राजस्थान)
14318 श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन, 44/203, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14319 डॉ. अरिहंतजी जैन, श्री रामनगर ए, झोटवाड़ा, जिला-जयपुर (राजस्थान)
14320 श्री प्रहलादजी जैन, 5 ए 1, अवधपुरी, झोटवाड़ा, जिला-जयपुर (राजस्थान)
14321 श्री सम्पतजी सुराणा, ए-111, जनता कॉलोनी, जयपुर (राजस्थान)
14322 श्री वरुणजी जैन, अरावली विहार, काला कुआँ, अलवर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5000/- श्री लाभचंदजी नवलखा, जयपुर, निशाजी नवलखा के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री प्रकाशचंदजी बोथरा, पुत्रवधू श्रीमती राखीजी धर्मसहायिका श्री संजयजी बोथरा के 31 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

3100/- श्री श्रीचंदजी, हस्तीमलजी डोसी, मेड़तासिटी, श्रीमती मंजूजी धर्मसहायिका श्री नेमीचंदजी डोसी के मासखमण की तपस्या उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी धर्मसहायिका श्री महावीर प्रसादजी मेहता, दूदू-जयपुर, गुरुदेव के सान्निध्य में अठाई की तपस्या करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सम्पतलालजी, बाबूलालजी, तपस्वीलालजी, मदनलालजी बाघमार, जबलपुर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं सभी संत-सती मंडल के दर्शनार्थ पधारने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री पवन कुमारजी, पियूष कुमारजी बाफणा, भोपालगढ़-जोधपुर, श्रीमती सरलादेवीजी धर्मसहायिका श्री पवन कुमारजी के देवलोकगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री मंगलचंदजी, धर्मीचंदजी, राजेन्द्रजी भंसाली, चेन्नई, पूर्ज्य आचार्य भगवन्त के सपरिवार दर्शन-वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री भंवरलाल जी, पुखराज जी, नीतेशकुमार जी बोथरा, चेन्नई, संगीता संग कमलचन्द जी खिंचा एवं सुनील संग मेघा के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

1500/- श्री बुधराजजी, दिलीप कुमारजी, लूणावत मूथा, बालासतीजी-जोधपुर, श्रीमती विजयलक्ष्मीजी धर्मसहायिका श्री बुधराजजी के मासखमण की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1500/- श्रीमती झंकारजी सुराणा, मोहिनीजी बाफणा, प्रकाशजी कटारिया (सांसारिक बहनें), चेन्नई, नवदीक्षित पू. सागरमुनिजी म.सा. की दीक्षा पर्याय में मृत्यु महोत्सव की आराधना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1500/- श्री प्रसन्नमलजी, अनिल कुमारजी लोढ़ा, जयपुर, श्रीमती कमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री प्रसन्नमलजी लोढ़ा का दिनांक 04/09/2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1500/- श्री अनिल कुमार जी लोढ़ा, जयपुर, पूज्य माताश्री श्रीमती कमलादेवी जी धर्मपत्नी श्री प्रसन्नमल जी लोढ़ा का दिनाँक 04 सितम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1111/- श्री जवरीमल जी डोसी, जोधपुर, श्री प्रवीण मेहता एवं श्रीमती मधु मेहता धर्मपत्नी श्री प्रवीण जी मेहता के (सुपुत्री श्रीमती मनोहरकंवर जवरीमल जी डोसी) के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री प्रकाश कुमारजी, श्रेयांस कुमारजी मेहता, उमरगाँव रोड़, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के दर्शन लाभ की खुशी में तथा श्रीमती मंगलादेवीजी मेहता के अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री दानमलजी जैन, महावीरनगर-जयपुर, सुपुत्र श्री दीपकजी जैन (डी.एम.) की एसएमएस हॉस्पिटल में सहायक प्रोफेसर न्यूरोलोजी के पद कर नियुक्ति होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती मंजु जी, संदीपजी, शानुजी एवं ध्रुव जी धारीवाल, जोधपुर, श्री नरेन्द्रराज धारीवाल की दिनाँक 2 सितम्बर, 2012 को बारहवीं पुण्य स्मृति पर भेंट।

1100/- श्री लीलमचन्द जी, पारसमल जी बोथरा, चेन्नई, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री लालचन्द जी बोथरा के 21 जुलाई, 2012 को स्वर्गवास होने पर उनके पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री विनय कुमारजी, सिद्धार्थ कुमारजी मेहता, उमरगाँव रोड़, पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के चातुर्मास स्थल पर दर्शन, वंदन करने तथा श्रीमती मंगलाजी मेहता के अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री जवरीलालजी, वसंताबाईजी नाहटा, बंगारपेट, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दर्शन वंदन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रेमचंदजी, राजेश कुमारजी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, श्रीमती पूर्णिमाजी धर्मसहायिका श्री मुकेशजी मोदी के अठाई की तपस्या एवं सुपौत्र नमनजी सुपुत्र श्री राजेशजी मोदी के तेले की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री भागचंदजी, ताराचंदजी जामड़, मदनगंज-किशनगढ़, सुश्री सुरभिजी सुपुत्री श्रीमती मधुजी-राजकुमारजी जामड़ के अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती लाडकँवरजी-मीठालालजी मेहता, पुत्रवधू श्रीमती अंजनाजी धर्मसहायिका श्री राजेन्द्र जी मेहता के 11 की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मनसुखलालजी, आनन्दरामजी गुगलिया, लोणा वाला, श्री अशोकजी गुगलिया की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीसंघ फुलियाकला, महासती श्री विमलाजी म.सा. के मिनि चातुर्मास के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मंगलचंदजी, सुमित कुमारजी संचेती, मदनगंज-किशनगढ़, पूज्य श्री हेमराजजी सुपुत्र स्व. श्री माणकचंदजी संचेती (गूलरवाले) का दिनांक 28 अगस्त 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री अरविंद कुमारजी, अमित कुमारजी जैन, गंगापुरसिटी, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शिवचरणजी जैन (पटवारी) का आकस्मिक निधन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- सौ. देवबालाजी जैन (कुम्भट), ठाणे, पूज्य आचार्य भगवन्तश्री एवं प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती जतनदेवी, हर्षजी, हेमन्तजी, पदमजी बरड़िया, जयपुर, स्व. श्री भोपालसिंहजी बरड़िया की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री सतीशचंदजी, राहुलजी जैन, जयपुर, महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. के मासखमण की तपस्या तथा कु. ज्योतिजी जैन के 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती विजयाबाईजी लोढ़ा, गोटन, श्री प्रसन्नचंदजी, मदनकँवरजी, अमरचंदजी लोढ़ा की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती ताराबाई जी धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी घोघड़, जोधपुर, अपनी पुत्री के 28 वीं तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री पूनमचंदजी जामड़, जयपुर सुपौत्र वधू श्रीमती प्रभाजी धर्मसहायिका श्री आशीषजी के 9 की तपस्या तथा सुपौत्र श्री शुभम् जी सुपुत्र श्री वीरेन्द्रजी जामड़ के अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री तेजमलजी लोढ़ा, फूलियाकला-भीलवाड़ा, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री विमलावतीजी म.सा., महासती श्री वृद्धिप्रभाजी तथा महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के फूलियाकला में अर्द्ध चातुर्मास के समापन के

उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमती लाडदेवीजी धर्मसहायिका श्री तेजमलजी लोढ़ा, फूलियाकला-भीलवाड़ा, स्वास्थ्य लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, गौरव कुमारजी जैन (आलनपुर वाले), जयपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त के महावीर नगर-जयपुर चातुर्मास में श्री मोहनलालजी-सवाईमाधोपुर के 31 की तपस्या एवं श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन के 5 की तपस्या तथा श्री कोमलबाबूजी जैन के तेले की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सुरेशचन्दजी एवं श्रीमती कुसुमजी जैन, कीजानीपुर-करौली, सुपौत्र श्री जयजी जैन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री पदमचंदजी जैन (चकेरी वाले), मानसरोवर-जयपुर, श्रीमती पिंकीजी धर्मसहायिका श्री पदमचंदजी जैन के 15 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री बाबूलालजी, पीयूषजी जैन, जयपुर, आचार्य प्रवरश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविंद से श्री बाबूलालजी-श्रीमती सरोजजी जैन ने सजोड़े 4 व्रत के खंध अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री ओमप्रकाशजी जैन, हिण्डौनसिटी-करौली, सुपुत्र श्री ब्रजमोहनजी जैन, चि. मनोज कुमारजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सतीशचंदजी जैन, हिण्डौनसिटी-करौली, सुपुत्र श्री ब्रजमोहनजी जैन, सौ.कां. पर्युषणाजी जैन का शुभविवाह दिनांक 23 फरवरी 2012 को चि. नवीन कुमारजी जैन सुपुत्र श्री महेन्द्र कुमारजी जैन निवासी-झारेड़ा-हिण्डौनसिटी के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री महावीर प्रसादजी, शांतिलालजी पालड़ेचा, धनोप-भीलवाड़ा, महासती श्री सोहनकँवर जी म.सा. आदि ठाणा के धनोप चातुर्मास में साक्षीजी पालड़ेचा के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री पारसचंदजी, गौतमचंदजी जैन, मुई-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री धूलीलालजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री अनोखचंदजी, शीतलचंदजी जैन (पचाला वाले), सवाईमाधोपुर, श्री अंकित कुमारजी सुपुत्र श्री अनोखचंदजी जैन के सीए फाईनल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री जम्बू कुमारजी जैन, इन्दौर, सुपुत्र श्री प्रमितजी जैन 23 वर्ष के प्रथम प्रयास में सीए फाइनल की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की तथा स्टार सीमेंट, दुबई में कार्यरत होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती पदमा जी धर्मपत्नी श्री सुलतानमल जी सुराणा, जोधपुर, दिनाँक 7 मई, 2012 को अपनी शादी के 52 वर्ष पूर्ण होने की खुशी में भेंट।

501/- श्रीमती ललिता धर्मपत्नी श्री महेन्द्र जी गांग, सूरत, अपने भाई स्व. श्री सुरेन्द्रमल जी गांग के दिनाँक 16 सितम्बर, 2012 को स्वर्गवास होने के एक माह पूर्ण होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

500/- श्री नेमीचन्द जी डोसी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री धीरज जी डोसी के चेन्नई में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार स्वरूप 21000 रुपये की राशि मिलने की खुशी में भेंट।

500/- भंवरलाल जी सुपुत्र स्व. श्री फूलचन्द जी टाटिया, जोधपुर, अपने पुत्र महेन्द्र का शुभ विवाह सौ. कां सुनीता सुपुत्री श्री पूनमचन्द जी सांड़ देशनोक निवासी के साथ सम्पन्न होने एवं श्री महेन्द्र जी के नौ की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री शिवनाथचन्द जी, राजकुमार जी सिंघवी, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री महावीर चन्द जी सिंघवी के द्वितीय पुण्य तिथि पर उनकी स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती शोललभादेवीजी-महेन्द्रकुमारजी मूथा, बिलाड़ा, अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती मीनाक्षीजी-सुरेश कुमारजी मूथा, बिलाड़ा, अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री मदनलालजी, सुनील कुमारजी, हंसराजजी बागमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में पर्युषण पर्व की आराधना सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती स्वरूपकँवरजी सुराणा, अजमेर सप्रेम भेंट।

500/- श्री शैलेषजी गाँधी, दिल्ली, सुपुत्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती पुखराजकँवरजी ढढ्ढा, जयपुर सुपौत्र श्री प्रोमितजी सुपुत्र श्री अभयकुमारजी ढढ्ढा के अठाई तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री गौतमचंदजी, राजेन्द्र कुमारजी, जितेन्द्र कुमारजी कटारिया, पिपाड़सिटी-जोधपुर, माताश्री श्रीमती लीलादेवीजी धर्मसहायिका स्व. माँगीलालजी कटारिया के 11 एवं 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

5000/- श्री नीतिन जी कांकरिया, जलगांव, अपने शुभविवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री दिलीप जी भण्डारी, चेन्नई, परमपूज्या साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की 79 वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

2101/- श्री हरकचन्द जी, दिनेश जी एवं सुधीर जी जैन, जयपुर, चि. पुलकित सुपुत्र श्री दिनेश जी जैन एवं चि. आयुष जैन सुपुत्र श्री सुधीर जी जैन सुपौत्र श्री हरकचन्द जी जैन के ए.आई.ई.ई.ई. में चयनित होने तथा एम.एन.आई.टी. जयपुर में प्रवेश मिलने की खुशी में भेंट।

2100/- श्री विनय जी सुपुत्र श्रीमती कलादेवी लुणावत, बैंगलोर, सहयोग हेतु।

1111/- श्री महावीरप्रसाद जी, सुबाहुकुमार जी, हेमन्त कुमार जी जैन (सर्राफ), सवाईमाधोपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री बंजरगलाल जी जैन की दिनाँक 5 जून, 2012 को पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री सज्जनराज जी, रंगरूपमल जी, ज्ञानचन्द जी, नरपतचन्द जी, जसवन्तराज जी डागा, जोधपुर, श्रीमती पुष्पकंवर धर्मपत्नी श्री सज्जनराज जी डागा की 2 अक्टूबर, 2012 को 20 वीं पुण्यतिथि पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री मांगीलाल जी नागौरी, पारसोली, सहयोग हेतु।

500/- श्री पीयूष जी भण्डारी सुपुत्र श्रीमती चांदकंवर जी भण्डारी, जोधपुर, सुश्रावक श्री सुरेश जी भण्डारी के स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री निर्मल कुमार जी सुपुत्र श्री स्व. श्री मांगीलाल जी सांखला, निवासी कपासन चितौड़,

महापर्वाधिराज पर्युषण पर्व-2012 बाबत सादर सप्रेम भेंट।

500/- श्री मदनलाल जी दुगड़, निवासी कपासन, चितौड़, महापर्वाधिराज पर्युषण पर्व-2012 बाबत सादर सप्रेम भेंट।

पयुर्षण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
11000	हालोल	11000	शोरापुर	10001	कोलकाता
8100	कानपुर	6100	कपासन	5100	नागपुर
4100	चलथान	4100	चिपलुण	3100	बनारस
3100	सातारा	3000	चाकसू	2500	बुहारी
100	उन्हेल	2100	सिद्धीगंजमगरदा	2100	जबलपुर
2100	दरीबामाइन्स	2100	सांवरियामंडपिया	1101	देई
1100	देई	1100	आकोदियामण्डी	1100	भीलवाड़ा(आ.नगर)
1100	भोपालगढ़	1000	देवली	900	कासमपुरा
700	आगोलाई	501	कुश्तला	500	सुरपूर
251	चौरू	1000	नागद	500	मुकटी

महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ को प्राप्त पयुर्षण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
11111	निफाड़	5100	महाड़	5000	डोंबिवली
3200	रालेगांव	3177	भडगांव	3001	ताहराबाद
3001	वाकोद	2500	पांडकवाड़ा	2200	सौंदाणा
2100	फत्तेपुर	2000	बुरहानपुर	1501	नसीराबाद
1500	धरणगांव	1500	बडवानी	1500	मुक्ताईनगर
1111	तोंडापुर	1101	मांगलादेवी	1100	चारवा
1100	कजंगाव	1100	जबलपुर	1100	दूसरबीड़
1100	चिखली	1100	देउर बुद्रक	1100	इच्छापुर
1052	बेटावद	1001	चांदूर रेलवे	1000	भराड़ी
1000	विटनेर	1000	मांडल	1000	वरखेड़ी
950	वाकड़ी	701	पारोला	602	चिंचाला
501	शेलवड़	500	शैंदुणी	500	लोहारा
500	जायखेड़ा	500	फागणा		

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

50000/- श्री सुभाषचंदजी, अशोक कुमारजी धोका, मैसूर पुस्तक जैनधर्म का मौलिक इतिहास भाग-3 की 250 प्रतियों के पुन: मुद्रण हेतु आर्थिक सहयोग सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

50000/- श्री प्रवीण कुमारजी, नितीन कुमारजी, दीप कुमारजी रूणवाल, माधवनगर-सांगली, पुस्तक हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1 के पुन: मुद्रण हेतु आर्थिक सहयोग सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

48000/- श्री सी. सोहनलालजी बागमार एवं पारिवारिक जन, मैसूर, पुस्तक 'मान व्याख्यान माला'

के पुन: प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

45000/- श्री जुगराजजी डूंगरवाल, चेन्नई , पुस्तक जैनधर्म का मौलिक इतिहास भाग-1 (संक्षिप्त संस्करण) के पुन: मुद्रण हेतु आर्थिक सहयोग पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के अर्द्ध शती दीक्षा के पावन प्रसंग के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

15000/- श्री नगराजजी मेहता, जोधपुर, मंडल के प्रकाशित पुस्तक गुरु हस्ती-गुरु हीरा के अनमोल भजन का पुन: प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

2000/- श्री महेन्द्र जी गांग (जोधपुर वाले), सूरत।

2000/- श्री विजयराज जी कोठारी, ब्यावर।

2000/- श्री महावीरचन्द जी, मनोज जी, कमलेश जी बाफना, सूरत।

2000/- श्री मूलचन्द नंदलाल जी भण्डारी, ब्यावर, चि. हरीन भण्डारी सुपुत्र श्री नंदलाल जी भण्डारी प्रपौत्र श्री मूलचन्द सुशीलादेवी जी के सी.ए. बनने की खुशी में भेंट।

2000/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजन जी बागमार (कोसाना वाले), मैसूर, आचार्य श्री एवं संत-सती मण्डल के दर्शन-वंदन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

आगामी पर्व

आश्विन कृष्णा 14, सोमवार	14.10.2012	चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन शुक्ला 7, रविवार	21.10.2012	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला 8, सोमवार	22.10.2012	अष्टमी
आश्विन शुक्ला 10, बुधवार	24.10.2012	आ.भूधर जी म.सा. की पुण्यतिथि
आश्विन शुक्ला 14, रविवार	28.10.2012	चतुर्दशी
आश्विन शुक्ला 15, सोमवार	29.10.2012	पक्खी, आयम्बिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 1, मंगलवार	30.10.2012	आचार्यश्री हमीरमल जी म.सा. की 159 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 8, बुधवार	07.10.2012	अष्टमी, आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी म.सा. की 211 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 14, मंगल	13.11.2012	चतुर्दशी, पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 1, बुधवार	14.11.2012	गौतम प्रतिपदा, वीर संवत् 2539 प्रारम्भ
कार्तिक शुक्ला 5, रविवार	18.11.2012	ज्ञान पंचमी
कार्तिक शुक्ला 6, सोमवार	19.11.2012	आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा दिवस
कार्तिक शुक्ल 8, बुधवार	21.11.2012	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 15, बुधवार	28.11.2012	चातुर्मास पूर्ण, एवं वीर लोंकाशाह जन्म-दिवस

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।
- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

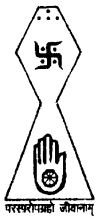

With Best Compliments from :

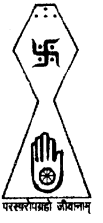

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT

DRI Plant

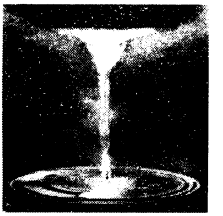

Electric Arc Furnace

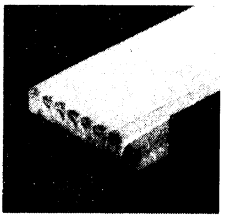

Billets

Rolling Mill

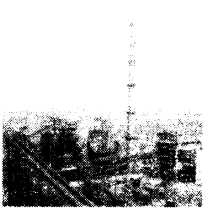

Captive Power Plant

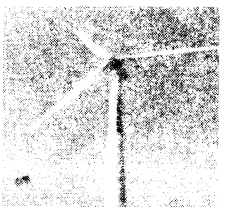

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

समस्त गुरु भाईयों को सादर जय जिनेन्द्र।

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत 1008 श्री हस्तीमल जी म. सा. एवं आचार्य हस्ती के पट्टधर सरल, निरपेक्ष, दीर्घदृष्टा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं शान्त–दान्त–गम्भीर, परम तेजस्वी उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. एवं संत–सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ, गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत छः वर्षों से युवारत्न छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्वि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रुप से चल रही हैं।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निवेदन को स्वीकार कर संघ द्वारा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना का विस्तार कर दिया गया हैं।

हमारा यह विश्वास है कि यह योजना न केवल छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से भी नींव का पत्थर साबित होगी। छात्रवृत्ति योजना के तहत् संचालित शिविरों के माध्यम से अनेक छात्र–छात्राएँ संघ के कर्मनिष्ठ स्वाध्यायी एवं ऊर्जावान कार्यकर्त्ता के रूप में उभरेगें।

आप सभी गुरुभाइयों से सनम्र निवेदन है कि इस योजना के उद्धेश्यों को सफल बनाने हेतु हम अपने गुरुभाइयों के व्यवहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्वि हेतु इस योजना के आवदेन पत्र भरवाकर अपना कर्त्तव्य निभाएगें एवं आप स्वयं एवं संघ समर्पित गुरुभाइयों को इस योजना में अर्थ सहयोग करावें एवं छात्र–छात्राओं का भविष्य उज्जवल बनाने में सहायक बनें।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के प्रत्येक कार्यक्रम व आयोजन आपके स्नेह व निरन्तर सहयोग से ही गतिमान है, तथा इस योजना की सफलता में भी आपके गतिमान निरन्तर सहयोग की अपेक्षा है।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते है, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

1. **Ashok Kavad,** Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta,** Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana,** Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra,** Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha,** Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria,** Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat,** Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain,** Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga,** Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna,** Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad,** Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain,** Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V.Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अक्टूबर, 2012 ★ आश्विन, 2069

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर
से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन